"અહો ! શ્રુતજ્ઞાનમ્" ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર ૧૫૭

દ્રવ્ય પરિક્ષા ઔર ધાતુ ઉત્પત્તિ

: દ્રવ્ય સહાયક :

પૂ. આ. શ્રી રામચંદ્રસૂરીશ્વરજી મ.સા. સમુદાયના
પૂ. સાધ્વી શ્રી જયવર્ધનાશ્રીજી મ.સા. તથા
પૂ. સાધ્વી શ્રી સુરજિતાશ્રીજી મ. સા. ની પ્રેરણાથી
ગુજરી પેઠ, ઈચલકરંજી શ્રાવિકા ઉપાશ્રયના
જ્ઞાનખાતાની ઉપજમાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વિમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-૫
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૬૯ ઈ. ૨૦૧૩

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६५ (ई. 2009) सेट नं.-१

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

ક્રમાંક	પુસ્તકનું નામ	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454
026	तत्त्पोपप्लवसिंहः	श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य	188
027	शक्तिवादादर्शः	श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री	214
028	क्षीरार्णव	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	414
029	वेधवास्तु प्रभाकर	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	192

030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	**824**
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	**288**
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**520**
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**578**
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**278**
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**252**
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**324**
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – બાબુલાલ સરેમલ શાહ

શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન

હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.

(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.ahoshrut.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	374
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	238
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	194
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	192
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	254
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	238
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	114
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	910
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	436
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	336
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	230
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	322
089	ઐન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	114
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	560

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाशः	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भाषवति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६९ (ई. 2013) सेट नं.-५

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
154	उणादि सूत्रो ओफ हेमचंद्राचार्य	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	जोहन क्रिष्टे	304
155	उणादि गण विवृत्ति	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	पू. मनोहरविजयजी	122
156	प्राकृत प्रकाश-सटीक	भामाह	व्याकरण	प्राकृत	जय कृष्णदास गुप्ता	208
157	द्रव्य परिक्षा और धातु उत्पत्ति	ठक्कर फेरू	धातु	संस्कृत /हिन्दी	भंवरलाल नाहटा	70
158	आरम्भसिध्धि – सटीक	पू. उदयप्रभदेवसूरिजी	ज्योतीष	संस्कृत	पू. जितेन्द्रविजयजी	310
159	खंडहरो का वैभव	पू. कान्तीसागरजी	शील्प	हिन्दी	भारतीय ज्ञानपीठ	462
160	बालभारत	पू. अमरचंद्रसूरिजी	काव्य	संस्कृत	पं. शीवदत्त	512
161	गिरनार माहात्म्य	दौलतचंद परषोत्तमदास	तीर्थ	संस्कृत /गुजराती	जैन पत्र	264
162	गिरनार गल्प	पू. ललितविजयजी	तीर्थ	संस्कृत/गुजराती	हंसकविजय फ्री लायब्रेरी	144
163	प्रश्नोत्तर सार्ध शतक	पू. क्षमाकल्याणविजयजी	प्रकरण	हिन्दी	साध्वीजी विचक्षणाश्रीजी	256
164	भारतिय संपादन शास्त्र	मूलराज जैन	साहित्य	हिन्दी	जैन विद्याभवन, लाहोर	75
165	विभक्त्यर्थ निर्णय	गिरिधर झा	न्याय	संस्कृत	चौखम्बा प्रकाशन	488
166	व्योम वती-१	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत युनिवर्सिटी	226
167	व्योम वती-२	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत विद्यालय	365
168	जैन न्यायखंड खाद्यम्	उपा. यशोविजयजी	न्याय	संस्कृत /हिन्दी	बद्रीनाथ शुक्ल	190
169	हरितकाव्यादि निघंटू	भाव मिश्र	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	शीव शर्मा	480
170	योग चिंतामणि-सटीक	पू. हर्षकीर्तिसूरिजी	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	लक्ष्मी वेंकटेश प्रेस	352
171	वसंतराज शकुनम्	पू. भानुचन्द्र गणि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	खेमराज कृष्णदास	596
172	महाविद्या विडंबना	पू. भुवनसुन्दरसूरि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	सेन्ट्रल लायब्रेरी	250
173	ज्योतिर्निबन्ध	शिवराज	ज्योतिष	संस्कृत	आनंद आश्रम	391
174	मेघमाला विचार	पू. विजयप्रभसूरिजी	ज्योतिष	संस्कृत/गुजराती	मेघजी हीरजी	114
175	मुहूर्त चिंतामणि-सटीक	रामकृत प्रमिताक्षय टीका	ज्योतिष	संस्कृत	अनूप मिश्र	238
176	मानसोल्लास सटीक-१	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	166
177	मानसोल्लास सटीक-२	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	368
178	ज्योतिष सार प्राकृत	भगवानदास जैन	ज्योतिष	प्राकृत/हिन्दी	भगवानदास जैन	88
179	मुहूर्त संग्रह	अंबालाल शर्मा	ज्योतिष	गुजराती	शास्त्री जगन्नाथ परशुराम द्विवेदी	356
180	हिन्दु एस्ट्रोलोजी	पिताम्बरदास त्रीभोवनदास	ज्योतिष	गुजराती	पिताम्बरदास टी. महेता	168

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७१ (ई. 2015) सेट नं.-६

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
181	काव्यप्रकाश भाग-१	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	364
182	काव्यप्रकाश भाग-२	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	222
183	काव्यप्रकाश उल्लास-२ अने ३	उपा. यशोविजयजी		संस्कृत	यशोभारति जैन प्रकाशन समिति	330
184	नृत्यरत्न कोश भाग-१	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	156
185	नृत्यरत्न कोश भाग-२	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	248
186	नृत्याध्याय	श्री अशोकमलजी		संस्कृत /हिन्दी	श्री वाचस्पति गैरोभा	504
187	संगीरत्नाकर भाग-१ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	448
188	संगीरत्नाकर भाग-२ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	444
189	संगीरत्नाकर भाग-३ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	616
190	संगीरत्नाकर भाग-४ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	632
191	संगीत मकरन्द	नारद		संस्कृत	श्री मंगेश रामकृष्ण तेलंग	84
192	संगीत नृत्य अने नाट्य संबंधी जैन ग्रंथो	श्री हीरालाल कापडीया		गुजराती	मुक्ति-कमल-जैन मोहन ग्रंथमाला	244
193	न्यायबिंदु सटीक	पूज्य धर्मोतराचार्य		संस्कृत	श्री चंद्रशेखर शास्त्री	220
194	शीघ्रबोध भाग-१ थी ५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	422
195	शीघ्रबोध भाग-६ थी १०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	304
196	शीघ्रबोध भाग-११ थी १५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	446
197	शीघ्रबोध भाग-१६ थी २०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	414
198	शीघ्रबोध भाग-२१ थी २५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	409
199	अध्यात्मसार सटीक	पूज्य गंभीरविजयजी		संस्कृत/गुजराती	नरोत्तमदास भानजी	476
200	छन्दोनुशासन	एच. डी. वेलनकर		संस्कृत	सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ	444
201	मग्गानुसारिया	श्री डी. एस शाह		संस्कृत/गुजराती	ज्ञातपुत्र भगवान महावीर ट्रस्ट	146

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com

शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७२ (ई. 201६) सेट नं.-७

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
202	आचारांग सूत्र भाग-१ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	285
203	आचारांग सूत्र भाग-२ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	280
204	आचारांग सूत्र भाग-३ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	315
205	आचारांग सूत्र भाग-४ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	307
206	आचारांग सूत्र भाग-५ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	361
207	सुयगडांग सूत्र भाग-१ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	301
208	सुयगडांग सूत्र भाग-२ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	263
209	सुयगडांग सूत्र भाग-३ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	395
210	सुयगडांग सूत्र भाग-४ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	386
211	सुयगडांग सूत्र भाग-५ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	351
212	रायपसेणिय सूत्र	श्री मलयगिरि	गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	260
213	प्राचीन तीर्थमाळा भाग-१	आ.श्री धर्मसूरि	सं./गुजराती	श्री यशोविजयजी ग्रंथमाळा	272
214	धातु पारायणम्	श्री हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	आ. श्री मुनिचंद्रसूरि	530
215	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-१	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	648
216	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-२	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	510
217	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-३	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	560
218	तार्किक रक्षा सार संग्रह	आ. श्री वरदराज	संस्कृत	राजकीय संस्कृत पुस्तकालय	427
219	वादार्थ संग्रह भाग-१ (स्फोट तत्त्व निरूपण, स्फोट चन्द्रिका, प्रतिपादिक संज्ञावाद, वाक्यवाद, वाक्यदीपिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	88
220	वादार्थ संग्रह भाग-२ (षट्कारक विवेचन, कारक वादार्थ, समासवादार्थ, वकारवादार्थ)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	78
221	वादार्थ संग्रह भाग-३ (वादसुधाकर, लघुविभक्त्यर्थ निर्णय, शाब्दबोधप्रकाशिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	112
222	वादार्थ संग्रह भाग-४ (आख्यात शक्तिवाद छः टीका)	रघुनाथ शिरोमणि	संस्कृत	महादेव शर्मा	228

ठक्कुर फेरू विरचिता

द्रव्यपरीक्षा और धातूत्पत्ति

सम्पादक

श्री भंवरलाल नाहटा

प्राकृत जैनशास्त्र अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली

१९७६

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

प्राकृत जैन शोध-संस्थान ग्रन्थमाला संख्या—१५

प्रधान सम्पादक

डा० नागेन्द्र प्रसाद, एम. ए., डी. लिट्.

निदेशक, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध-संस्थान, वैशाली

ठक्कुर फेरू विरचिता

द्रव्यपरीक्षा और धातूत्पत्ति

सम्पादक

श्री भंवरलाल नाहटा

प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध-संस्थान, वैशाली

१९७६

Aho ! Shrutgyanam

1976

All Rights Reserved

Price Rs. 3.50

Published on behalf of the Research Institute of Prakrit, Jainology and Ahimsa, Vaishali (Bihar) by Dr. Nagendra Prasad, M. A., D. Litt., Director and Printed in India at the Tara Printing Works, Varanasi.

Aho ! Shrutgyanam

The Government of Bihar established the Research Institute of Prakrit, Jainology and Ahimsa at Vaishali in 1955 with the object *inter alia* to promote advanced studies and research in Prakrit and Jainology and to publish works of permanent value to scholars. This Institute is one of the six Research Institutes established and being run by the Government of Bihar. The other five are : (i) Mithila Institute of Post-graduate Studies and Research in Sanskrit Learning at Darbhanga; (ii) K. P. Jayaswal Research Institute for research in Indian History, at Patna; (iii) Bihar Rastra Bhasa Parishad for research and publication in Hindi, at Patna; (iv) Nava Nalanda Mahavihara for Post-graduate studies and research in Pali and Buddhist learning, at Nalanda and (v) Institute of Post-graduate Studies and Research in Arabic and Persian, at Patna.

As a part of the programme of rehabilitating and reorientating ancient learning and scholarship this is the Research Volume Number 14 which is a new edition of Nayacandra Suri's Rambhāmañjarī with English translation. The Government of Bihar hope to continue to sponsor such projects and trust that this humble service to the world of scholarship and learning would bear fruit in fulness of time.

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

प्रधान सम्पादकीय

लगभग तीस वर्ष पूर्व शोधप्रेमी श्री अगरचंद नाहटा और भँवरलाल नाहटा ने कलकत्ते के एक जैन ज्ञानभण्डार में अन्य नाम (सारा कौमुदी गणितज्योतिष) से अभिहित छः सौ वर्ष पुरानी पाण्डुलिपि को खोज निकाला और उसकी प्रेस कापियाँ तैयार कर पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजय जी के पास प्रकाशनार्थ भेजा। वे मूलग्रन्थ सन् १९६१ में "रत्नपरीक्षादि सप्तग्रन्थ संग्रह" नाम से "राजस्थान-प्राच्यविद्याप्रतिष्ठान", जोधपुर, द्वारा प्रकाशित हुए। इसमें (१) रत्नपरीक्षा, (२) द्रव्यपरीक्षा, (३) धातूत्पत्ति, (४) ज्योतिषसार, (५) गणितसार, (६) वास्तुसार, (७) खरतरगच्छ युगप्रधान चतुष्पदिका—ये सात ग्रन्थ थे। इनमें से वास्तुसार पं० भगवान दास जैन द्वारा जयपुर से सानुवाद पहले से प्रकाशित था। ये सभी विभिन्न-विषयों के महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं। इनमें 'ज्योतिषसार' और "गणितसार" के अतिरिक्त अन्य चारों ग्रन्थों का सम्पादन श्री भँवरलाल नाहटा ने कई वर्ष पूर्व किया था। "रत्न परीक्षा" नाहटा ब्रदर्स, कलकत्ता द्वारा सं० २०२० में प्रकाशित हुई। "द्रव्यपरीक्षा" और "धातूत्पत्ति" के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इन्हें इस संस्थान से प्रकाशित करने का निर्णय किया गया।

इस ग्रन्थ के मूलरचयिता ठक्कुर फेरू एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् और तत्कालीन भारतीय शासनतंत्र के उच्चाधिकारी व्यक्ति थे। ये धांधिया गोत्र के परम जैन श्रावक थे। इन्होंने सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में दिल्ली राज्य के मंत्रिमण्डल में विभिन्न पदों पर रहकर अपने सक्रिय अनुभव से कुछ ग्रन्थों की रचना की थी। शाही खजाने के रत्नों के अनुभव के आधार पर जिस प्रकार उन्होंने "रत्नपरीक्षा" की रचना की उसी प्रकार "ढिल्लिय टंकसाल कज्जठिए" अर्थात् दिल्ली टंकशाल के गवर्नर के पद पर रह कर प्राचीन-अर्वाचीन सभी मुद्राओं का अनुभव प्राप्त कर "द्रव्यपरीक्षा" लिखा। ठक्कुर फेरू ने अपने भाई और पुत्र के ज्ञानार्थ इसकी रचना सं० १३७५ में दिल्ली में की थी।

'द्रव्यपरीक्षा' को केवल भारतीय साहित्य में ही नहीं विश्वसाहित्य में भी महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। प्राचीन मुद्रा—सिक्कों के सम्बन्ध में यत्र-तत्र स्फुट वर्णन प्राचीन साहित्य में भले ही पाये जायँ पर सात सौ वर्ष पूर्व एतद्विषयक स्वतंत्र रूप से रचित यह पुस्तक अपना विशिष्ट महत्त्व रखती है। भारतीय संग्रहालयों में प्राप्त सामग्री के आधार पर यदि इस ग्रन्थ का विशद विवेचन किया जाय तो प्राचीन मुद्राओं के सम्बन्ध में एक नयी दिशा मिलेगी।

इस ग्रन्थ में गाथा १ से ४ तक मंगलाचरण है। तत्पश्चात् चाशनी, चाशनी शोध विधि, उपादान धातुओं में सीसा, चाँदी, सोना आदि को चाशनी,

Aho ! Shrutgyanam

मिश्रदल शोधन, रौप्यत्रनमालिका, कनक वनमालिका, स्वर्ण व्यवहार, ह्रास्य, मौल्य, तौल आदि धातु की पूर्व प्रक्रिया का वर्णन ५० गाथा तक किया गया है। इसके बाद मुद्राप्रकरण प्रारम्भ होता है।

मुद्रा-प्रकरण में ठक्कुर फेरू ने तत्कालीन प्राप्य सैकड़ों प्रकार की रौप्य मुद्रा, स्वर्ण मुद्रा, त्रिधातु-मिश्रित-मुद्रा, द्विधातु मुद्रा, खुरासानी मुद्रा, अठनारी मुद्रा, गूर्जरी मुद्रा, मालवी मुद्रा, नलपुर मुद्रा, चंदेरिकापुर मुद्रा, जालंधरी मुद्रा और दिल्ली मुद्रा में पहले तोमर राजाओं की और बाद में ५५ प्रकार की तत्कालीन मुसलमानी मुद्राओं का स्वरूप देकर अलाउद्दीन सुलतान आदि की विविध मुद्राओं का वर्णन किया है। फिर सोना, चाँदी और ताँबे की अनेक मुद्राओं का स्वरूप बताया गया है।

दूसरी पुस्तक "धातूत्पत्ति" है जो कुल ५७ गाथाओं में समाप्त होती है। इसमें मंगलाचरण का अभाव है जबकि ठक्कुर फेरू के सभी ग्रन्थ मंगलाचरण से प्रारम्भ होते हैं। इस कृति में रचयिता ने न तो कहीं अपना नाम गाथाओं में दिया है और न रचनाकाल ही। पर सं० १४०३ की पुष्पिका के अनुसार ठक्कुर फेरू ही इस पुस्तक के रचयिता हैं। अनुमानतः लेखक ने 'द्रव्यपरीक्षा' के परिशिष्ट के रूप में इसे लिखा। संवत् १३७५ में 'द्रव्यपरीक्षा' लिखने के साथ ही इसकी रचना हुई। इसलिए दोनों पुस्तकों को एक साथ प्रकाशित करने का निर्णय पाठकों को समीचीन लगेगा।

इसमें पीतल, ताँबा, सीसा, राँगा, काँसा, पारा, हिंगुल और सिन्दूर का स्वरूप २७ गाथाओं तक बताकर कर्पूर, अगर, चन्दन, मृगनाभि-कस्तूरी, कुंकुम तथा धूप के साथ-साथ दक्षिणावर्त्त शंख, रूद्राक्ष, शालग्राम आदि के दिव्य प्रभाव का परिचय कराया गया है।

"द्रव्यपरीक्षा" और "धातूत्पत्ति" को विद्वज्जगत् के समक्ष उपस्थित करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष और सन्तोष का अनुभव हो रहा है। यदि इनसे गम्भीर अध्ययन और शोध-कार्य में लगे व्यक्तियों को कुछ भी लाभ हो सका तो संस्थान अपने उद्देश्य में सफल होगा।

पुस्तकों की सुन्दर और आकर्षक छपाई के लिए तारा प्रिंटिंग प्रेस, वाराणसी के व्यवस्थापकों को धन्यवाद दिए बिना मैं नहीं रह सकता। अपने सहयोगियों को भी उनके परामर्श और सहयोग के लिए मैं धन्यवाद देता हूँ।

नागेन्द्र प्रसाद
निदेशक
प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध-
संस्थान, वैशाली।

Aho ! Shrutgyanam

प्रस्तावना

जयपुर वाले पं० भगवानदास जैन ने सर्व प्रथम ठक्कुर फेरू के वास्तुसार प्रकरण को गुजराती व हिन्दी अनुवाद सहित सचित्र सुसम्पादित कर प्रकाशन किया तभी से उन ठक्कुर फेरू की प्रसिद्धि विद्वत् समाज में व्याप्त हो गई थी। उस प्रकरण के साथ रत्नपरीक्षा का कुछ त्रुटक भाग भी प्रकाशित हुआ था। इसके पश्चात् जब सं० १९९४ में हमने "दादा जिनकुशलसूरि" पुस्तक लिखी तो युगप्रधानाचार्य गुर्वावली में भी कन्नाणा और दिल्ली के अधिवासी इस परमार्हत् श्रावक का नाम दिल्ली के मुख्य श्रावकों के साथ कई बार आया। जैन साहित्य महारथी श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई ने "जैन साहित्य नो संक्षिप्त इतिहास" में इनके ग्रन्थों का नामोल्लेख किसी ज्ञानभण्डार की सूची के आधार पर किया पर उन्होंने स्वयं इनके ग्रन्थ देखे हों ऐसा नहीं लगता। उस विशाल ग्रन्थ में से नाम के आधार पर ग्रन्थ का आशय आकलन कर लेना समुद्र में से रत्न खोज के निकालने जैसा कठिन कार्य था। और आजतक किस आधार से देसाई महोदय ने नामोल्लेख किया इसका कोई पता नहीं लगा और न किसी प्रति की हो उपलब्धि हुई।

कलकत्ता की श्री नित्य-विनय-मणि-जीवन जैन लायब्रेरी से हमारा संबन्ध लगभग ४५ वर्षों से था। वहाँ से हम यथावश्यक हस्तलिखित ग्रंथ निकलवा कर लाते और समुचित उपयोग करते थे और अलभ्य या नवीन ग्रंथ कहीं से भी प्राप्त होता तो उसकी खोज में सतत संलग्न रहते थे। सं० २००१ में एक बार मैंने हस्तलिखित ग्रंथसूची देखते "सारा कौमुदी गणित ज्योतिष" नामसे उल्लिखित ठक्कुर फेरू की ६० पत्रों वाली प्रति का नाम देखा तो उसे अपनी नोट बुक में फिर कभी आकर अवश्य देखने के लिए नोट कर लिया। थोड़े दिन बाद पूज्य काकाजी अगरचंदजी नाहटा बीकानेर से पधारे। उन्होंने मेरी नोटबुक में नाम देखा तो उन्हें विलम्ब कहाँ था? तुरन्त जाकर प्रति निकलवा कर देखी तो आनन्द की सीमा न रही क्योंकि उस सूची में उल्लिखित उक्त नामक ग्रंथ के विपरीत ठक्कुर फेरू के विविध विषय के सात ग्रन्थ थे जिनमें 'द्रव्यपरीक्षा' तो अपने विषय का एक बहुत महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ था।

काकाजी ने उस प्रति को लाकर सुन्दर प्रेसकापी बनाने के लिए मुझे सौंपा और पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजय जी को इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि की सूचना दी। उन्होंने इसे सिंघी जैन ग्रन्थमाला से प्रकाशित करने की उत्सुकता बतलाई और मैंने यथाशीघ्र सभी ग्रन्थों की प्रेस कापी तैयार कर प्रकाशित वास्तुसार के पाठान्तरादि सह मुनि जी को बम्बई भेज दी। मुनि जी ने मूल प्रति देख कर प्रकाशन करने का निर्णय किया। मूल प्रति भी उन्हें दी गई पर

Aho ! Shrutgyanam

उनके भारतीय विद्या भवन छोड़ कर राजस्थान पधार जाने पर उसका प्रकाशन निरन्तर प्रेरणा के फल स्वरूप राजस्थान पुरातत्त्व ग्रन्थमाला से सं० २०१७ में हो पाया। इसी बीच हमने ठक्कुर फेरू के ग्रन्थों का परिचायक निबन्ध इलाहाबाद से प्रकाशित "विश्ववाणी" को भेज दिया जो उसमें प्रकाशित हुआ। उपाध्याय श्री सुखसागर जी के कलकत्ता पधारने पर मैंने उनके शिष्य मुनि कान्तिसागर जी को फेरू के ग्रन्थों की सूचना दी तो उन्होंने भी तत्काल एक निबन्ध लिखकर "विशाल भारत" मासिक में प्रकाशित किया। इस प्रकार ठक्कुर फेरू की प्रसिद्धि साहित्य संसार में व्याप्त हो गई।

काकाजी अगरचंदजी की आज्ञा से मैंने १ रत्न परीक्षा २ युगप्रधान और ३ धातूत्पत्ति प्रकरण का हिन्दी अनुवाद कर डाला था पर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रस्तुत द्रव्यपरीक्षा का अनुवाद करना बाकी था। काकाजी ने डा० वासुदेव शरण अग्रवाल को इसकी सूचना दी और लाहौर वाले डॉ० बनारसीदास जैन को इसका अनुवाद करने का भार सौंपा। डॉ० साहब ने पांच गाथाओं का अनुवाद करके नमूने स्वरूप भेजा पर उन्हें सन्तोष न हुआ। इसके बाद काकाजी ने मुझे आदेश दिया कि तुम्हारे से जैसा भी हो सके अनुवाद कार्य सम्पन्न कर दो। मैंने लगभग बीस वर्ष पूर्व उसका जैसा भी समझ में आया अनुवाद करके भेज दिया। डा० वासुदेव शरणजी ने इसे मूलअनुवाद और टिप्पणी आदि सहित न्युमेस्मेटिक सोसायटी से प्रकाशित करा देने को कहा था पर उसे सुचारु सम्पादनार्थ रख छोड़ा। मेरी कापी उनके पास ही रही जिसे उनके स्वर्गवास के पश्चात् हमने प्राप्त करके इसकी ऐतिहासिक टिप्पणी लिखने के लिए अपने विद्वान् मित्र डा० दशरथ शर्मा को सौंपा। उन्हें भी अवकाश न मिला और सात-आठ वर्ष के पश्चात् काकाजी ने जोधपुर जाकर वह कापी लाकर मुझे भेजी जिसमें अन्त के कुछ पृष्ठ खो गए थे। मैंने बीस वर्ष पूर्व किए अनुवाद को फिर से मिलाकर नये रूप में तैयार करना प्रारंभ किया और जैसा हो सका प्रस्तुत किया। यद्यपि पारिभाषिक शब्द बाहुल्य और विषय की अनभिज्ञतावश जैसा अनुवाद हुआ है उसे सन्तोषजनक तो नहीं कहा जा सकता पर जिस रूप में बना उसे विद्वानों के समक्ष रख कर प्रकाश में ला देना ही आवश्यक समझा ताकि अधिकारी विद्वान् इस विषय में विशेष शोध पूर्वक महत्वपूर्ण सामग्री विद्वत् संसार के समक्ष प्रस्तुत कर सकें।

—भंवरलाल नाहटा

Aho ! Shrutgyanam

भूमिका

प्रचीन भारतीय वाङ्मय में यहाँ की समृद्धि अद्वितीय थी और असंख्य स्वर्णमुद्राएँ लोगों के पास विद्यमान थी। आज के समय में उसकी तुलना नहीं की जा सकती। राजाओं और सेठ साहूकारों के दान की राशि लाखों करोड़ों स्वर्ण मुद्राएँ थीं। विभिन्न देश की मुद्राओं से भण्डार भरपूर रहता था। यद्यपि कई स्थानों में आदिवासी लोग सौ वर्ष पहले भी वस्तुओं के परिवर्त्तन से काम चलाते थे पर इससे मुद्राओं का अभाव नहीं समझ लेना चाहिए। प्राचीन साहित्य में स्वर्ण, हेम, कनक, सोनैया, द्रव्य, दीनार, टंका आदि नामों से लाखों करोड़ों के दानादि का वर्णन पाया जाता है। मध्यकालीन साहित्य में भी मुद्राओं का उल्लेख स्थान-स्थान पर पाया जाता है। प्रबन्ध चिन्तामणि (पृ० १२) में सालाहन ने चार गाथायें दस करोड़ स्वर्ण देकर ग्रहण की, लिखा है। विक्रमादित्य और भोज-भीम के प्रबन्धों में भी दान में करोड़ों स्वर्ण मुद्रायें देने का उल्लेख है। उसी के पृ० ३५ में काव्य के पारितोषिक में आठ करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ दी, लिखा है। पृ० ६९ में मयणल्ल देवी ने बहत्तर लाख का बाहुलोड़ कर उठवा दिया लिखा है। पुरातन प्रबन्ध संग्रह के पृ० ३० में आरासणीय नेमिचैत्यप्रबन्ध में 'दीनार सहस्र ४५ विमलो निर्गतः' लिखा है। उस जमाने में कागज के नोटों का प्रचलन नहीं था। एक देश की मुद्रा दूसरे देश में उसमें रहे हुए धातु-द्रव्य के आधार पर नाणावट का व्यापार और मुद्रा परिवर्त्तन चलता था। ठक्कुर फेरू के प्रस्तुत ग्रंथ से यह चारुतया प्रमाणित है।

ग्रन्थसार :—

द्रव्य परीक्षा का निर्माण ठक्कुर फेरू ने दिल्ली की टकसाल के अधिकारी रूप में रहकर अपने विशाल अनुभव से किया है। इसकी प्रारंभिक तीन गाथाओं में पहली में महालक्ष्मी को नमस्कार-मंगलाचरण दूसरी व तीसरी में दिल्ली की टकसाल के अधिकारी रूप में रहकर भ्राता और पुत्र के लिए इस ग्रन्थ की रचना का संकल्प करते हुए चौथी गाथा में उसके पहले प्रकरण में चासनी का दूसरे में स्वर्ण-रौप्य शोधने का तीसरे में मूल्य और चौथे में सर्व प्रकार की मुद्राओं का वर्णन करूँगा लिखा है। गाथा ५ से ७ तक चासनी की विधि, गा० ८-९ में सीसे की चासनी गा० १० में रौप्य चासनी और गा० १४ तक नाणय, डहक्क, हरजम, रीणी और चक्कलिय द्रव्य की चासनी के पाँच प्रकार कहे हैं। गा० १५-१६ में सलाहो ढालने की विधि कही है। गा० १७ से २३ तक सोने को शुद्ध करने की चासनी का वर्णन, गा० २४-२५ में चाँदी और गा० २६-२९ तक मिश्रदल शोधन-विधि है। गा० ३० में कण चूर्ण शोधन, ३१-३२ में चाँदी की वनमालिका-वनवारी और गा० ३७ तक सोने की वन-

Aho ! Shrutgyanam

मालिका विधि बतलाई गई है। गा० ४१ तक स्वर्ण व्यवहार, गा० ४२-४३ में धातु की छीजत औरगा० ४४ से ४५ तक मूल्य निकालने की विधि बतलाई गई है।

इसके पश्चात् मुद्राओं का प्रकरण आरंभ होता है। गा० ५१ से ५५ तक रौप्य मुद्रायें वर्णित हैं जैसे पूतली, खोमली, कजानी, ग्रादनी, रीणी, रूवाई, खुराजमी और वालिष्ट। मुद्राओं का मूल्य बताते हुए देवगिरी—दौलताबाद की सीघण (१२१० से १२४७) इकमसी तारा, अधमसी (गा० ५४) करारी, खटियालग, रीणी और नरहड़ मुद्राओं का मूल्य अपनी नजर से या अग्नि में तपा कर चासनी से परीक्षा करनी चाहिए लिखा है।

गा० ५६ में भगवान रामचंद्र की पूजनीय दो प्रकार की संयोगी और वियोगी सीतारामी स्वर्णमुद्राओं का वर्णन किया गया है जो विना भुनाने-गलाने योग्य है। गा० ५७ में चौकड़िया, सीरोहिया और त्रिभुवनगिरी के यादव राजा कुमारपाल की 'कुमरू' मुद्रा का वर्णन किया गया है। ५८वीं गाथा पद्मा मुद्रा का वर्णन करती है। गा० ५९-६० में फिर देवगिरि की सीघण, महादेवी, ठाणकर, लोहकंडी, बाणकर (रामबाण) चोखीराम-खड्डघर एवं केसरी और कौलादेवी मुद्राओं का वर्णन है। गा० ६१ में लिखा है कि और भी मुद्राओं और चारमासे की दीनार आदि स्वर्ण मुद्राओं का मूल्य सोने की बान और तोल से जानना चाहिए।

गा० ६२ से ७२ तक त्रिधातु मुद्राओं का वर्णन है। सभी मुद्राओं में प्रतिशत कितना सोना कितना चाँदी और कितना तांबा है, इसकी तौल और मोल एवं जिस कोटि की धातु उसमें व्यवहृत हुई है, उसका वर्णन है। वाराणसी की पद्मा मुद्रा की धातु-परिमाण बतलाकर जितशत्रु राजा की भगवा मुद्रा का वर्णन किया गया है जो भगवान के दर्शन के हेतु बनवायी हुई सीतारामी मुद्रा के सदृश पूजनीय थी। आगे विलाईकोर, वीरब्रह्म (वीरवर्म चंदेल), हीरावर्मा और त्रिलोकवर्मा की मुद्राओं का वर्णन कर भोज की विविध मुद्राओं का उल्लेख मात्र किया गया है। वालंभ या वल्लभ मुद्रा भी त्रिधातु निर्मित थी, जिसका मूल्य जीतल-जयपाल मुद्रा से आंका जाता था।

इसके पश्चात् गा. ७३ से खुरासानी द्विधातु मुद्राओं का वर्णन है जिन पर पारसीलिपि में चिन्हाक्षर लिखे रहते हैं। ये भंभई, एकटिप्पी, सिकदरी, कुरुलुकी, पलाहोरी, समोसी, लगामो पेरो, जमाली और मसूदी कई प्रकार की थीं। ७८ वीं गाथा में अब्दुली और कुतुली नामकी अठनारी मुद्राओं का वर्णन है।

गा० ७९ से ८१ तक महाराजा विक्रमादित्य की गोजिगा, दउराहा, भीमाहा, चोरी मोरी, करड़, कूर्मरूपी व कालाकचारि नामक चांदी-तांबे की द्विधातु मुद्राओं का मोल-तोल धातु-परिमाण बतलाया गया है।

गा० ८२ से ९३ तक गुजरात के महाराजा कुमारपाल, अजयपाल, भीमदेव, लवणप्रसाद, वीसलदेव और अर्जुनदेव की कुमरपुरी, अजयपुरी, भीमपुरी,

Aho ! Shrutgyanam

लूणवसा, वीसलपुरी (कुण्डे और गूगले दो प्रकार की तथा डोलहर) व अर्जुनपुरी और कटारिया मुद्राएं आसपाल की आसपालपुरी नृपति सारंगदेव की साढलपुरी, लाखापुरी, गविका, पडिया और रजपलाहा, साठसया, वराह, विनाइकाचंदी, कल्हड़पुरी, वाणमुद्रा और मछवाहा मुद्राएं वर्णित हैं। गा० ९३ में चौतीसा, पैतोसा, छतीसा, सैंतीसा और मालवपुरी छारीया मुद्राओं का मूल्य चासनी के अनुसार मालूम करने का निर्देश किया गया है।

गा० ९४ से गा० १०० पर्यन्त मालवी मुद्राओं का विशद वर्णन है जिनमें चौकड़िया, दिउपालपुरी, कुंडलिया, कउलिया, छडुलिया, सेलकी-तोगड़, जानीया-चित्तौड़ी, जकारिया, गलहुलिया, खालगा, सिवगणा, वापड़ा, मलीता, सीहमार, चोरमार मुद्राओं के प्रतिशत तोल मोल और धातु का परिमाण वतलाया गया है।

गा० १०१ से १०३ तक नलपुरी मुद्राओं का वर्णन है जो तीन प्रकार की चांहडी मुद्रा थी—दुओतरी, अंककी और पुराणी। इसी प्रकार आसली मुद्रा भी सतरहोतरी, ठेंगा और नवीठेका तीन प्रकार की होती थीं।

गा० १०४ से १०८ तक चंदेरी संबंन्धी मुद्राओं का वर्णन है जो कोल्हा-पुरी, जेरिया, हीरिया, अकुड़ा, जइत, वीरमुन्द, लक्ष्मणी, राम, वव्वावरा, मसीणा और खसर—इतने प्रकार की थीं।

गा० १०९ और ११० में जालंधरी मुद्राओं का वर्णन है। ये वडोहिय मुद्राएं चार प्रकार की थीं। जैसे जइतचंदाहे, रूपचंदाहे त्रिलोकचंदाहे और सांतिउरी-माहे। ये नगरकोट-कांगड़ा के जैन राजाओं की थीं। इन सबके धातुका परिमाण, तोल-मोल वड़ी खूबी से वर्णित हैं।

इसके पश्चात् गा. १११वीं में दिल्ली के तोमर राजपूत राजाओं की चार प्रकार की मुद्राओं का वर्णन है। ये दिल्ली के अंतिम हिन्दू राजा थे जिनके उत्तराधिकारी पृथ्वीराज चौहान के पश्चात् मुसलमानी सल्तनत का अधिकार हो गया था। ये मुद्राएँ अनंगपलाहे, मदनपलाहे पिथउपलाहे और चाहड़पलाहे चार प्रकार की थीं। दुर्भाग्य की वात है कि इन राजाओं के सम्वन्ध में भारतीय इतिहास अवतक मौन-सा है। सं. १३०५ की लिखी हुई खरतरगच्छीय युगप्रधानाचार्य गुर्वावली के राजा मदनपालको मणिधारी दादा श्रीजिनचन्द्र सूरिजी द्वारा (सं० १२२३) प्रतिवोध का उल्लेख है, जो ठक्कुर फेरू की द्रव्य-परीक्षा से भी समर्थित है।

गाथा ११२ से १३३ तक मुसलमानी शासन में प्रवर्तित मुद्राओं का वर्णन है। ये विविध प्रकार की और नाना तोल-मोल की थीं। उनकी नामावली इस प्रकार है—

सूजा, साहवदीनी, महमूदसाही, चउकडीया, कटका, सखा, मखिया, कुण्डलिया, छुरिया, जगटपलाहा, दुकड़िया ठेगा, कुवाइचोजजीरी, फरीदी, परसिया, चउक, वफा, खकरिया, नींवदेवी, धमडाहा, जकारिया, अलावदीनी,

Aho ! Shrutgyanam

सतका समसी, मोमिनी अलाई, सेला समसी, तितीमीसी, कुव्वखानी, खलीफती, अधचंदा, और सिकंदरी; समसुद्दीन के पुत्रों की मुद्राएँ—रुकुनी, पेरोजसाही, बारहोतरी; रजियाबेगम की रद्दी मुद्रा जिसके दो प्रकार थे एक दिल्ली और दूसरी वदायूं की टकसाल में ढली हुई ; मउजी मुद्राएं वारहोतरी प्रकार की—नवका और पनका ; सोलहोतरी और पनरहोतरी मुद्राएं तथा छका मुद्रा भी मौजुदीन की ही थी जिनके मोल-तोल में सामान्य अन्तर था ।

गा. १२५ से १३० पर्यन्त पिरोजसाह के पुत्र अलाउद्दीन, मसूदीसाह की वलवाणी इकंगी, बलवानी वामदेवी और त्रिशूलिक चोकड़िया, सिन्ध प्रान्त के मरोट, उच्च और मुलतान की टकसाल प्रचलित मरोटी, मुलथानी-उच्चई और इगानी-मरोटी का उल्लेख है। सुकारी मुद्रा भी मरोटी इगानो के समकक्ष मोल-तोल वाली थी । सीराजी, मुख्तल्फो काल्हणी, नसीरी दिल्ली के टकसाल में ढली हुई थी। इसके बाद दकारी मुद्रा का वर्णन है। गा. १३१ में गयासुद्दीन वलबन की गयासी-दुगानी, मउजी तिगानी, और समसीसा का, गा. १३२ में जलालुद्दीन की जलाली, और रुकुनुद्दीन की प्रवर्त्तमान रुकुनी मुद्रा का वर्णन है। गा० १३३ में लिखा है कि अन्यान्य देशों में बनी हुई विविध अज्ञात मुद्राओं को पन्द्रहगुने सीसे के साथ शोध करके तद्गत चांदी के अनुपात से उनका मूल्य जानना चाहिए।

१३४ गाथा से १३६ तक ठक्कुर फेरू ने अपने समय में वर्त्तमान सुलतान अलाउद्दीन की मुद्राओं का वर्णन करते हुए वतलाया है कि उसकी छगाणी मुद्राएं दो प्रकार की व इगाणी भी दो प्रकार की हैं। इगानी मुद्रा में ९५ टांक तांबा और ५ टांक चांदी एक सौ मुद्राओं में है। वह एक ही प्रकार की है और राज-दरबार में तथा सार्वजनिक व्यवहार में इसी का प्रचलन है। १३७ गाथा में वतलाया गया है कि हेम टंका स्वर्ण मुद्राएं इगतोलिया, पंचतोलिया, दसतोलिया, पचासतोलिया व सौतोलिया होती हैं। दीनार चारमासे को व चांदी का टंका एक तोले का होता है। गाथा १३८ में कहा है कि सहाबुद्दीन की लघु मुद्राएं चार मासे तक की हैं। किन्तु इम्म, छगानी और टंका सभी चांदी सोने की मुद्राएं एक तोले की होती हैं।

ठक्कुर फेरू विद्वान, राजनीतिज्ञ और सर्वतोमुखी प्रतिभा-संपन्न व्यक्ति था। वह जैन धर्म के प्रति दृढ़ श्रद्धालु श्रावक था। उसकी रचनाओं के अन्त में उसे 'परम जैन' लिखा है। उसने खरतर गच्छोय वाचनाचार्य राजशेखर के पास जब वह कन्नाणा में रहता था, सं० १३४७ में युगप्रधान चतुष्पदिका की रचना की थी। उस समय उसकी तरुणावस्था थी और उसके बाद वह राजनीति में प्रविष्ट हो कर अलाउद्दीन सुलतान के मंत्रिमण्डल में आया। वह अलाउद्दीन के शाही खजाने का अधिकारी था। वहाँ के रत्नों के अनुभव से सं १३७२ में उसने रत्न-परीक्षा ग्रन्थ का निर्माण किया। अलाउद्दीन का देहान्त हो जाने पर सं० १३७३ में वह संभवतः उसके उत्तराधिकारी बंदिछोड़ विरुद

Aho ! Shrutgyanam

वाले सुलतान कुतुबुद्दीन के शासन में टकसाल के गवर्नर रूप में नियुक्त हुआ और वहाँ के परिपक्व अनुभव के आधार पर ही उसने 'द्रव्यपरीक्षा' का निर्माण सं० १३७५ में किया। कवि ने स्वयं प्रारंभिक दूसरी गाथा में "ढिल्लिय टंकसाल कज्जठिए" वाक्य द्वारा इसे व्यक्त किया है।

द्रव्य परीक्षा की गा० १३९ में ठक्कुर फेरू ने लिखा है कि अब मैं 'राजबन्दिछोड़' विरुद वाले सुलतान कुतुबुद्दीन की नाना प्रकार की चौरस व गोल मुद्राओं का मोल तोल कहता हूँ। गा० १४० में उसने लिखा है कि सोने की ३२, चाँदी की बीस, ७ प्रकार के द्रम्म और ४ प्रकार की ताम्र, कुल मिला कर ६३ हुईं। गा० १४१-४२ में १४ गोल १४ चौरस १ तेरहमासी और तीन लघु मुद्रा कुल ३२ स्वर्ण मुद्राओं का एवं गा० १४३ में चाँदी के रुपयों में १४ चौरस १ गोल रुपया एवं ५ लघु मुद्राओं का वर्णन किया गया है। गा० १४४ में लिखा है कि दुगानी, छगानी मुद्राओं में चाँदी व ताँबे का परिमाण अलाउद्दीन की मुद्राओं के सदृश ही है। गा० १४५ में गोल चौगानी मुद्रा का मोल तोल एवं गा० १४६-४७ में अठगानी, बारहगानी, चौवीसगानी, अड़तालीसगानी मुद्राओं में चाँदी व ताम्र धातु का परिमाण, मोल तोल लिखा है। गा० १४८ में विसुवा, सवा विसुवा, ढाई विसुवा, पाँच विसुवा तक के चौकोर ताम्र-मुद्रा का उल्लेख कर अन्तिम गा० १४९ में सं० १३७५ वर्ष में चन्द्र के पुत्र ठक्कुर फेरू ने अपने पुत्र और भ्राता के लिए इस दिशासूचक 'द्रव्यपरीक्षा' की रचना की, ऐसा लिखा है।

ठक्कुर फेरू की रचनाएं

ठक्कुर फेरू ने गणितसार ग्रन्थ की रचना भी राजकीय मालगुजारी आदि पदों पर रह कर की थी। उसने गणितसार के चतुर्थ अध्याय की प्रथम गाथा में लिखा है :

"ढिल्लिय रायट्ठाणे, कज्ज भूय करण मज्झंमि।
जं देस लेह पयड़ी, तं **फेरू** भणइ **चंद** सुओ ॥१॥"

उसने रत्न परीक्षा ग्रन्थ कलिकाल चक्रवर्ती सम्राट अलाउद्दीन खिलजी के रत्नागार के अनुभव से सं० १३७२ में लिखा था। इससे वह अलाउद्दीन सुलतान के मंत्रिमण्डल में विविध विभागों में चिरकाल तक रहा विदित होता है। रत्न परीक्षा की चौथी गाथा देखिए—

"**अल्लावदीण** कलिकाल चक्कवट्टिस्स **कोस** मज्झत्थं।
रयणायरुव्व रयणुच्चयं, च नियदिट्ठिए दट्ठुं ॥४॥"

इसी वर्ष में उसने तीन ग्रन्थों की रचना की थी जिसमें रत्नपरीक्षा दिल्ली में और वास्तुसार प्रकरण विजयादसमी के दिन कन्नाणापुर में रचित हुई। ज्योतिषसार में रचना स्थान का उल्लेख नहीं है।

Aho ! Shrutgyanam

ठक्कुर फेरू ने अपनी प्रथम रचना 'युग प्रधान चतुष्पदिका' केवल अपभ्रंश में की है। अवशिष्ट सभी कृतियाँ प्राकृत में हैं। उसकी भाषा सरल, प्रवाही और अपभ्रंश या तत्कालीन लोक भाषा के प्रभाव से पूर्णतया प्रभावित है। ग्रन्थोक्त अनेक विषय तत्कालीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान, संस्कृति, वस्तुव्यापार, शिल्प स्थापत्य एवं जानतिक संस्कृति पर विशद और महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। इनकी कृतियों का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. युगप्रधान चतुष्पदिका—यह कृति तत्कालीन लोकभाषा अपभ्रंश में २८ चौपई व एक छप्पय में रची गई है। इसमें भगवान महावीर से लगाकर खरतर गच्छ के युगप्रधान आचार्यों की नामावली निबद्ध है। आचार्य श्री वर्द्धमानसूरि के पट्टधर श्री जिनेश्वरसूरि से खरतर गच्छ नाम से यह प्रसिद्ध हुआ। उनके परवर्ती आचार्यों के संबन्ध में कतिपय संक्षिप्त ऐतिहासिक वृत्तान्तों का भी निर्देश किया गया है। यत:—

(१) श्री जिनेश्वरसूरिजी ने अणहिलपुर पाटण में दुर्लभराज के समक्ष ८४ आचार्यों को जीतकर वसति मार्ग प्रकाशित किया।

(२) श्री जिनचंद्रसूरि ने अपने उपदेशों द्वारा नृपति को रंजित किया एवं 'संवेगरंगशाला' नामक विशिष्ट ग्रन्थ की रचना की।

(३) श्री अभयदेवसूरि ने ९ अंगों पर टीकाएं बनाईं एवं स्तंभन पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रकट की।

(४) श्री जिनवल्लभ सूरि ने नंदी, न्हवण, रथ, प्रतिष्ठा युवतियों के ताल्हारास आदि जिन मन्दिरों में रात्रि में किए जाने का निषेध किया।

(५) श्री जिनदत्तसूरि ने उज्जैन में ध्यान बल से योगिनी चक्र को प्रतिबोध दिया। शासन देवता ने इन्हें 'युगप्रधान' पद धारक घोषित किया।

(६) श्री जिनचंद्रसूरि बड़े रूपवान थे। इन्होंने बहुत से श्रावकों को प्रतिबोध दिया।

(७) श्री जिनपतिसूरि ने अजमेर के नृपति (पृथ्वीराज) की सभा में पद्मप्रभ को पराजित कर जयपत्र प्राप्त किया।

(८) श्री जिनेश्वरसूरि ने अनेक स्थानों में जिनालय एवं तदुपरि ध्वज, दण्ड, कलश, तोरणादि स्थापित किये एवं १२३ साधु दीक्षित किए।

इनके पट्टधर श्री जिन प्रबोधसूरि के पट्टधर श्री जिनचंद्रसूरि के समय में कन्नाणा में वाचनाचार्य राजशेखर गणि के समीप, सं० १३४७ माघ मास में इस चतुष्पदी की रचना हुई। इसकी एक प्रति हमें जैसलमेर भण्डार का अवलोकन करते हुए प्राप्त हुई थी। इसे पत्राकार में व प्रतिक्रमण पुस्तक में उपाध्याय श्री सुखसागर जी ने प्रकाशित की थी। वह रचना संस्कृत छाया व हिन्दी अनुवाद सह राजस्थान भारती में भी प्रकाशित हुई थी।

Aho ! Shrutgyanam

२. रत्नपरीक्षा—यह ग्रन्थ १३२★ प्राकृत गाथाओं में है। संवत् १३७२ में दिल्ली में सम्राट अलाउद्दीन के शासन में स्वपुत्र हेमपाल के लिए प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की गई। पूर्वकवि अगस्त्य और बुद्धभट के ग्रंथों के अतिरिक्त शाही रत्नकोश की अनुभूति द्वारा अभिलषित विषय का सुन्दर प्रतिपादन किया गया है।

३. वास्तुसार—शिल्प स्थापत्य के विषय में प्रस्तुत ग्रंथ प्रामाणिक माना जाता है और जैन समाज में इसकी पर्याप्त प्रसिद्धि है। पं० भगवानदासजी ने हिन्दी गुजराती अनुवाद सहित इसे जयपुर से प्रकाशित भी कर दिया है। प्रस्तुत प्रति सं० १४०४ की लिखित है और मुद्रित संस्करण से पाठ भेद का प्राचुर्य है। इसके पाठान्तर हमने "रत्नपरीक्षादि सप्तग्रन्थ संग्रह में दिए हैं। इसकी रचना सं० १३७२ विजयादशमी को कन्नाणापुर में हुई।

४. ज्योतिषसार—यह ग्रंथ संवत् १३७२ में २४२ प्राकृत गाथाओं में रचित है, जिसकी श्लोक संख्या, यंत्र, कुण्डलिका सह ४७४ होती है। इसमें ज्योतिष जैसे वैज्ञानिक विषय का बड़ी कुशलता के साथ निरूपण किया गया है। इसके अन्त में कुछ स्फुट पद्य प्राप्त हुए जिन्हें जोधपुर से प्रकाशित संग्रह के परिशिष्ट में दे दिया गया है।

५. गणितसार कौमुदी—यह ग्रन्थ कुल ३११ गाथाओं में है। गणित जैसे शुष्क और बुद्धिप्रधान विषय का प्रतिपादन करते हुए ग्रन्थकार ने अपनी योग्यता का अच्छा परिचय दिया है। इस ग्रन्थ के परिशीलन से तत्कालीन वस्तुओं के भाव, तौल, माप, विविध प्रकार के नाम इत्यादि सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थिति का सुचारु परिज्ञान हो जाता है। वस्त्रों के नाम, उनके हिसाब, पत्थर, लकड़ी, सोना, चाँदी, धान्य, घृत-तैलादि के हिसाबों के साथ-साथ क्षेत्रों का माप, धान्योत्पत्ति, राजकीय कर, मुकाता इत्यादि अनेक महत्त्व-पूर्ण बातों पर प्रकाश डाला गया है। इसके कतिपय प्रश्न देश्य भाषा के छप्पयों में भी हैं जो भाषा सम्बन्धी अध्ययन की दृष्टि से भी अपना वैशिष्ट्य रखते हैं।

६. धातूत्पत्ति—इसमें प्राकृत की ५७ गाथाओं में पीतल, तांबा, सीसा प्रभृति धातुओं की उत्पत्ति विधानादि के साथ हिंगुल, सिन्दूर, दक्षिणावर्त्तसंख, कपूर, अगर, चंदन, कस्तूरी आदि वस्तुओं का भी विवरण दिया गया है, जो कवि के बहुज्ञ होने का सूचक है।

७. द्रव्य परीक्षा—प्रस्तुत ग्रंथ पाठकों के हाथ में है।

★ पं० भगवानदासजी के प्रकाशित वास्तुसार (गुजराती अनुवाद सह) के अन्त में रत्नपरीक्षा (गा० २३ से १२७) छपी है। उसके बीच की ६१ से ११९ तक की गाथाएं धातूत्पत्ति की हैं। इसमें पर्याप्त पाठ भेद है। उक्त ग्रंथानुसार रत्नपरीक्षा १२७ गाथाओं की होती है, पर वास्तव में उसमें बीच की बहुत सी गाथाएं छूट गई हैं।

Aho ! Shrutgyanam

८. भूगर्भशास्त्र—यह ग्रन्थ अद्यावधि अप्राप्त है। स्वर्गीय मुनि कान्तिसागरजी ने इस ग्रन्थ की सूचना दी थी पर उन्होंने कहीं भी इसे या इसके आदि—अन्त्यप्रशस्ति आदि नहीं प्रकाशित की। अतः निश्चयपूर्वक कुछ बता सकना कठिन है।

प्रति परिचय

फेरू की कृतियों की हमें जो एक मात्र प्रति मिली वह ६० पत्रों की है। उसके लिपिकर्त्ता ने जो लेखन समय दिया है उससे विदित होता है कि इसका लेखन सं० १४०३ के फाल्गुन से चैत (सं० १४०४) में पूर्ण हुआ अर्थात् लगभग '२' महीने में यह प्रतिलिपि हुई। इसे सा० भावदेव के पुत्र पुरिसड़ ने लिखी थी और किनारे "पत्तनीय प्रति" लिखा होने से मालूम होता है कि यह प्रति कभी पाटण के ज्ञान भण्डार में रही होगी।

निम्नोक्त लेखन प्रशस्ति तीन कृतियों के पश्चात् लिखी हुई यहाँ उद्धृत की जाती है—

(१) "इति ठक्कुर फेरू विरचिते धातूत्पत्ति प्रकरण विधिः समाप्तः श्री विक्रमादित्ये संवत् १४०३ वर्षे फागुण सु० ८ चन्द्रवासरे मृगसिर नक्षत्रे लिखितं। सा० भावदेवाङ्गज पुरिड़। आत्मवाचनपठनार्थे शुभमस्तु।

(२) संवत् १४०३ फा० शु० ८ लि० (युगप्रधान चतुष्पदिका)

(३) लिखितं चैत्र सुदी ५ संवत् १४०४ (गणितसार)

द्रव्य परीक्षा की रचना सं० १३७५ में हुई और उसके २८ वर्ष पश्चात् लिखी हुई प्रस्तुत प्रति प्राचीनतम है। इसमें कोष्टक, चित्र आदि यथा स्थान दिए गए हैं जिसमें ग्रन्थगत भावों को आत्मसात् करने में बड़ी सहायता मिलती है। इस प्रति में सातों ग्रन्थ इस प्रकार हैं :—

१.	पत्राङ्क	१ से १८ तक में	ज्योतिषसार
२.	,,	१९ से २७A ,,	द्रव्यपरीक्षा
३.	,,	२८ से ३५ ,,	वास्तुसार
४.	,,	३६ से ४१A ,,	रत्नपरीक्षा
५.	,,	४१A से ४३A ,,	धातूत्पत्ति
६.	,,	४३ से ४४ ,,	युगप्रधान चतुष्पदी
७.	,,	४५ से ६० ,,	गणितसार

ठक्कुर फेरू ने अपने ग्रन्थों में जो अपना परिचय स्वयं दिया है वह सर्वाधिक प्रामाणिक होने से उन गाथाओं को यहाँ उद्धृत किया जा रहा है।

सिरिमाल कुलुत्तंसो ठक्कुर चंदो जिणिंदपयभत्तो।
तस्संगरुहो फेरू जंपइ रयणाण माहप्पं ॥२॥

Aho ! Shrutgyanam

अल्लावदीण कलिकाल—चक्कवट्टिस्स कोसमज्झत्थं ।
रयणायकव्व रयणुच्चयं च नियदिट्ठिए दट्ठुं ।।४।।

× × × × ×

सिरि धंधकुले आसी कन्नाण-पुरम्मि सिट्ठि कालियओ ।
तस्सुव ठक्कुर चंदो फेरू तस्सेव अंगरुहो ।।१३१।।
तेणिह रयणपरिक्खा विहिया नियतणय हेमपालकए ।
कर[२]मुणि[७]गुण[३]ससि[१] वरिसे अल्लावदी विजयरज्जम्मि ।।१३२।।
तेण य रयणपरिक्खा रइया संखेवि ढिल्लिय पुरीए ।
कर[२]मुणि[७]गुण[३]ससि[१]वरिसे अल्लावदोणस्स रज्जम्मि ।।१२६।।

× × × × × [रत्नपरीक्षा]

जे नाणा मुद्दाइं सिरि ढिल्लिय-टंकसाल कज्जठिए ।
अणुभूय करिवि पत्तिउ वन्हि मुहे जह पयाउ घियं ।।२।।
तं भणइ कलसनंदण चंदसुओ फिरऽणुभाय तणयत्थे ।

× × ×

एवं दव्वपरिक्खं दिसिमित्तं चंदतणय फेरेण ।
भणिय सुय-बंधवत्थे तेरह पणहत्तरे वरिसे ।।१४९।।

[द्रव्य परीक्षा]

आसी सड्ढकुलेसु सिट्ठिकलसो ठाणे सुकन्नाणए ।
तस्संगस्स रुहो सुठक्कुरवरो चंदु व्व चंदो इह ।
फेरू तत्तणओ य तेण रइयं जोइस्ससारं इमं,
दो सत्तऽग्गिग (१३७२) वच्छरे दुगसयं गाहा दु चत्ताहियं ।।२४२।।

[ज्योतिषसार]

तं सयललोयहेऊ फेरू पभणेइ चंद्रसुओ ।।२।।

× × ×

ढिल्लीय रायट्ठाणे कज्जं भूय करण मज्झंमि ।
जं देस लेहपयड़ी तं फेरू भणइ चंदसुओ ।।१।।

× × ×

उद्देस पंचगमिमं चंदासुय फेरुणा अओ भणियं ।
जह देस करुप्पत्ती चट्टिय समए मुणिज्जेइ ।।३३।।

[गणितसार]

सिरिधंधकलसकुल संभवेण चंदा सुएण फेरेण ।
कन्नाणपुरठिएण य निरक्खिउं पुव्वसत्थाइं ।।५९।।

Aho ! Shrutgyanam

सपरोवगारहेऊ नयण-मुणि-राम-चंद (१३७२) वरिसंम्मि।
विजयदसमीइ रइयं गिह पडिमा लक्खणाईणं ॥६०॥
[वास्तुसार]

तेरइ सइतालइ (१३४७) महमासि, रायसिहर ञाणारिय पासि।
चंद तणुब्भवि इय चउपईय, कन्नाणगुरुभत्तिहि कहिय ॥२७॥
[युगप्रधान चतुष्पदिका]

उपर्युक्त अवतरणों से स्पष्ट है कि ठक्कुर फेरू श्रीमालवंश के धांधिया गोत्रीय श्री कालिय या कलस के पुत्र चंद के पुत्र थे · ये मूल रूप में कन्नाणा निवासी थे फिर राजकार्य से दिल्ली में भी रहने लगे थे। इनके पुत्र का नाम हेमपाल था जिसके लिए रत्नपरीक्षा और द्रव्यपरीक्षा की रचना की गई थी। द्रव्यपरीक्षा की रचना में भाई का भी उल्लेख किया गया है पर उसका नाम नहीं लिखा है। प्राचीन रचना सं १३४७ की और अंतिम सं० १३७५ की है।

सं० १३७५ की मिति वैशाख कृष्ण ८ को दिल्ली से महत्तियाण ठक्कुर अचलसिंह ने सुलतान कुतुबुद्दीन के फरमानपूर्वक कलिकाल केवली श्रीजिनचंद्र सूरि जी के सान्निध्य में हस्तिनापुर-मथुरादि यात्रार्थ संघ निकाला था जिसमें ठक्कुर फेरू भी साथ थे। विशेष जानने के लिए युगप्रधानाचार्य गुर्वावली देखना चाहिए। इसके पश्चात् ठ० फेरू के सम्बन्ध में कोई उल्लेख नहीं मिलता।

ठक्कुर फेरू ने अपना कुल धंधकुल बतलाया है। इनके पूर्वजों में धंध नामक व्यक्ति विशेष प्रभावशाली हुए लगते हैं जिनके वंशज धांधिया गोत्रीय आज भी विद्यमान हैं। वे जवाहिरात का व्यापार करते हैं।

कन्नाण का संस्कृत नाम गुर्वावली में कन्यानपन मिलता है। यहाँ की महावीर भगवान की प्रतिमा मुहम्मद तुगलक के समय में श्रीजिनप्रभसूरिजी ने दिल्ली में सुलतान से प्राप्त कर बादशाह के द्वारा बसायी हुई सुलतानसराय--भट्टारक सराय में बादशाह के बनाए हुए जिनालय में स्थापित की थी। श्री जिन-प्रभसूरि कृत विविध तीर्थकल्प में उसका विस्तृत विवरण पाया जाता है। कन्नाणा ग्राम अभी भी महेन्द्रगढ के अन्तर्गत विद्यमान है।

ठक्कुर फेरू, विद्वान जैन श्रावकों में विविध विषयों के ग्रन्थ लेखक एक ही विद्वान हैं जिन्होंने मुसलमान सम्राटों की राज्यसेवा करते हुए अनेक बातों का महत्वपूर्ण अनुभव प्राप्त किया था। उन्होंने अपनी उस जानकारी और अनुभव को उयुंक्त ग्रन्थों में भली भाँति व्यक्त किया है। प्राकृत भाषा की इन्होंने बहुत बड़ी सेवा की है, इनकी रचनाओं में तत्कालीन इतने पारिभाषिक शब्द पाये जाते हैं जिनको उपलब्धि किसी भी कोश में नहीं होती। अब प्राकृत भाषा के जो भी कोश बनें उनमें उन शब्दों को अवश्य लिया जाना चाहिए। वर्त्तमान में वे शब्द किन किन पर्यायवाची शब्दों में प्रयुक्त हैं इस पर प्रकाश डाला जाना चाहिए।

Aho ! Shrutgyanam

श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई ने 'जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास' में इनकी कृतियों का जो नामोल्लेख किया है वह प्रति अब कहाँ और किस भंडार में है इसकी शोध होनी चाहिए। स्वर्गीय मुनि कान्तिसागर जी ने इनके भूगर्भ-प्रकाश ग्रन्थ का जो उल्लेख किया है, यदि वह ग्रन्थ प्राप्त हो तो उसे भी प्रकाश में लाना आवश्यक है क्योंकि उस विषय का वह एकमात्र ग्रन्थ होगा।

मुद्राओं सम्बन्धी टिप्पणियाँ

मध्यकालीन साहित्य में हम द्रम्म मुद्रा का सार्वत्रिक प्रचलन पाते हैं। परन्तु द्रम्म मुद्रा भिन्न-भिन्न राज्यों में व भिन्न-भिन्न शासकों द्वारा प्रवर्तित विविध प्रकार की होती थी। द्रव्यपरीक्षा में भी ठक्कुर फेरू ने ग्रन्थ निर्माण के समय सात प्रकार भी कुतुबुद्दीनी द्रम्म मुद्राओं का वर्णन किया है। इत: पूर्व भिन्न-भिन्न समय में बहुत प्रकार के द्रम्म प्रचलित थे जिनका यहाँ विचार किया जाता है।

पारुत्थक द्रम्ममुद्रा

द्रम्म को पारसी में दीरम कहते हैं पर द्रम्म मुद्रा भारत में मुसलमानों के आगमन से पूर्व भी प्रचलित थी। सं० ८०२ में पाटण वसा। उस समय की बात है कि कान्यकुब्ज नरेश ने अपनी पुत्री महणिका को कञ्चुक संबन्ध से गुजर देश दिया जिसकी छः मास में २४ लाख पारुत्थक द्रम्म उगाही होते थे। (पुरातन प्रबन्ध संग्रह पृ० १२८)

सन् ११०० के लगभग धारानरेश नरवर्म का राज्य मालव और मेवाड़-चित्तौड़ पर भी था। नवाङ्गीवत्ति कारक खरतर गच्छीय आचार्य श्री अभयदेव सूरि के पट्टधर श्री जिनवल्लभसूरि को विद्वता से प्रभावित होकर तीन गाँव या तीन लाख पारुत्थ देना चाहा। सूरिजी ने कहा—हम संयमी लोग अर्थसंग्रह नहीं करते। राजा ने प्रसन्न होकर चित्तौड़ के विधि चैत्य की पूजा के लिए प्रतिदिन दो पारुत्थ मंडी से देने की व्यवस्था की। (युगप्रधानाचार्य गुर्वावली पृ० १३)

संवत् १२१ ॰ में साहगोलक कारित मरोट के विधि चैत्यचन्द्रप्रभ जिनालय पर मणिधारी श्रीजिनचंद्रसूरिजी के तत्त्वावधान में स्वर्णमय कलश-दण्ड-ध्वजा-रोपण हुआ उस समय सेठ क्षेमन्धर ने पाँच सौ पारुत्थ द्रम्म देकर माला ग्रहण की थी। (युगप्रधानाचार्य गुर्वावली पृ० २०)

संवत् १२३३ में श्रीजिनपतिसूरिजी ने हाँसी पधार कर पार्श्वनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा बड़े समारोहपूर्वक की। उस पर ध्वजा-दंड व स्वर्णकलशारोपण कराने के लिए दुसाज साढल की पुत्री साऊ श्राविका ने पाँच सौ पारुत्थ द्रम्म देकर मालाग्रहण की। (यु० प्र० गुर्वावली पृ० २४)

संवत् १२३९ में अजमेर में अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज की सभा में श्रीजिनपतिसूरिजी ने चैत्यवासी पद्मप्रभ के साथ शास्त्रार्थ में विजय पाई जिसकी

Aho ! Shrutgyanam

बधाई के उत्सव में सेठ रामदेव ने सोलह हजार पारुत्थद्रम्म व्यय किए थे। (यु० प्र० गुर्वावली)

गूर्जरेश्वर वीरधवल के समय महाराष्ट्रीय चर्चरिक गोविन्द पण्डित जिसे अठारह पुराण, आठ व्याकरण चौपईवन्ध कण्ठस्थ थे—को चौवीस हजार पारुत्थक मुद्रा प्राप्त हुई। (पुरातन प्रबन्ध संग्रह)

जालोर के राउल उदयसिंह ने सं० १३१० वसन्तपञ्चमी के दिन सुलतान जलालुद्दीन के घेरा डालने पर बापड़ राजपूत को सुलह के लिए नियुक्त किया। सुल्तान ने छत्तीस लाख द्रम्म दण्ड स्वरूप मांगे। उसने कहा मैं द्रम्म नहीं जानता पारुत्थक दे दूंगा। निकटस्थ व्यक्ति ने कहा—देव ! आप स्वीकार कर लें ! एक पारुत्थक के आठ द्रम्म होते हैं ! सुलतान ने मान लिया (पुरातन प्रबंध संग्रह पृ० ५१) इस वृत्तान्त से विदित होता है कि दिल्ली के प्रचलित द्रम्म से पारुत्थक का मूल्य आठगुना था।

जयथल मुद्रा

सं १३७५ में जयथल मुद्रा प्रचलित थी। इसी वर्ष ठक्कुर फेरू ने द्रव्य-परीक्षा का निर्माण किया था। इसी वर्ष कलिकाल केवली श्रीजिनचंद्र सूरिजी ने फलौदी पार्श्वनाथ जी की तृतीय वार यात्रा की। मंत्रीदलीय ठ० सेढु ने बारह हजार जैथल देकर इन्द्र पद ग्रहण किया। अन्य सब मिलाकर तीर्थ में तीस हजार जयथल की आय हुई। इसके बाद सूरिजी विचरते हुए दिल्ली की ओर पधारे और विशाल संघ के साथ हस्तिनापुर तीर्थ की यात्रा की। ठ० मदन के अनुज ठ० देवसिंह श्रावक ने बीस हजार जयथल देकर इन्द्र पद ग्रहण किया, ठ० हरिराजने आमात्य पद प्राप्त किया। हस्तिनापुर तीर्थ के भण्डार में एक लाख पचास हजार जयथल की आय हुई (युगप्रधानाचार्य गुर्वावली पृ० ६६)

द्रव्य परीक्षा की ७० वीं गाथा में मुद्राओं का मूल्य जयथल मुद्रा से आंका है। वीरवर्म देव चंदेल की मुद्रा का मूल्य २४ जयथल और हीरावर्मा की मुद्रा का मूल्य २२ जयथल है।

द्विवल्लक द्रम्म मुद्रा

द्रव्यपरीक्षा की रचना के पश्चात् सं० १३८० में योगिनीपुर—दिल्ली से संघपति रयपति ने दादा श्रीजिनकुशलसूरिजी के सानिध्य में यात्रीसंघ निकाला। संघपति के समस्त परिवार ने हेम टंकों से तथा अन्य लोगों ने रूप्य टंकों से प्रभु की नवांग पूजा की, अनेक उत्सव हुए। उच्चानगर के हेमलपुत्र कडुया ने अपने भतीजे हरिपाल के साथ २६७४ द्विवल्लक द्रम्म देकर इन्द्र पद ग्रहण किया, तीर्थ में पचास हजार की आय हुई। इसी प्रकार गिरनार तीर्थ पर हमीरपत्तन वासी घीणा के पुत्र गोसल श्रावक ने २४७४ द्विवल्लक द्रम्म देकर इन्द्र पद प्राप्त किया। तीर्थ में चालीस हजार द्विवल्लक द्रम्म की उपज हुई। (युगप्रधानाचार्य गुर्वावली पृ० ७५-७६)

Aho ! Shrutgyanam

सं० १३८१ में भीमपल्ली के साहवीर देव ने सुलतान गयासदीन का फरमान प्राप्त कर श्री जिन कुशलसूरि जी के तत्त्वावधान में संघ निकाला। स्तंभतीर्थ-खंभात में महोत्सव हुए। सा० कडुया के पुत्र खांभराज के अनुज दो० सामल ने बारह सौ द्विवल्लक द्रम्म देकर इन्द्र पद प्राप्त किया। शत्रुञ्जय पर सा० लोहट के पुत्र उखमा ने तीस हजार सात सौ द्विवल्लक द्रम्म देकर इन्द्र पद प्राप्त किया। श्रीमालरु के भाई नीवदेव ने बारह सौ द्विवल्लक द्रम्म से आमात्यपद प्राप्त किया। (यु० गुर्वा० पृ० ७९)

ये दोनों उल्लेख गुजरात-सौराष्ट्र के हैं। द्रव्यपरीक्षा में गा० ८६ में उल्लिखित वेवला मुद्रा गूर्जरो मुद्रा थी और प्रतिशत ६ तोला ।। मासा चाँदी एवं अवशिष्ट तांबा थी और १६।। के भाव थी।

इनके अतिरिक्त गुजरात की मुद्राओं में भीमपुरी और लूणसापुरी मुद्राओं का वर्णन गा० ८३ की फुटनोट में देखना चाहिए।

रुप्यटंका

सं० १३९० में श्रीजिन पद्मसूरी के पट्टाभिषेक तथा अन्य उत्सवों में सा० हरिपाल-चाचा कड़वा भाई कुलधर ने हजारों रुप्य टंके व्यय किए। (यु०प्र०गु० पृ० ८६) यात्रीसंघ ने नाणा तीर्थ में २०० रुप्य टंके आबू में २००, जीरावला में १५०, चंद्रावती में २००, आरासण में १५० तारंगा में २०० और तृश्रृंगम में १५० रुप्य टंका व्यय कए। (यु० प्र० गु० पृ० ८७)

—भंवरलाल नाहटा

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

ठक्कुर फेरू विरचिता

द्रव्यपरीक्षा

॥ ॐ नमो कमलवासिणी देवी ॥

कमलासण कमलकरा छणससिवयणा सुकमलदलनयणा।
संजुत्तनवनिहाणा नमिवि महालच्छि रिद्धिकरा ॥१॥

जे नाणा मुद्दाइं सिरि ढिल्लिय टंकसाल कज्जठिए।
अणुभूय करिवि पत्तिउ वन्हि मुहे जह पयाउ घियं ॥२॥

तं भणइ कलसनंदण चंदसुओ फिरऽणुभाय तणयत्थे।
तिह मुल्लु तुल्लु दव्वो नामं ठामं मुणंति जहा ॥३॥

पढमं चिय चासणियं, बीयइ कणगाइ रुप्प सोहणियं।
तइए भणामि मुल्लं, चउत्थए सव्व मुंदाइं ॥४॥ दारं ॥

चासणियं जहा—

सुक्कं पलासकट्ठं गोमय आरन्नगा अजा अत्थि।
कमि तिय इगे गि भायं एगट्ठं दहिय तं रक्खं ॥५॥

१. कमल के आसन वाली, कमल जैसे हाथों वाली, पूर्णिमा के चन्द्र जैसे मुख वाली और सुन्दर कमलदल जैसे नेत्रों वाली नवनिधान संयुक्त, ऋद्धिकर्त्री महालक्ष्मी को नमस्कार करके

२. श्री दिल्ली की टकसाल में कार्यस्थित रह कर, वहाँ जो नाना मुद्राएँ वर्तमान हैं, उनका अनुभव करके और जैसे अग्नि में तपाकर घी का प्रत्यय किया जाता है वैसे ही उनका प्रत्यय करके

३ कलश के बेटे चन्द्र का पुत्र ठक्कुर फेरू अपने भ्राता और पुत्र के लिए उनका वर्णन करता है और उनके जैसे मूल्य, तोल, द्रव्य नाम और स्थान हैं, उनको कहता है।

४. पहले प्रकरण में चासनी का, दूसरे में कनकादि तथा रौप्य के शोधन का, तीसरे में मूल्य और चौथे में सर्व मुद्राओं का वर्णन करता हूं।

चासनी :

५. पलाश वृक्ष के सूखे काष्ठ, गोबर के आरणिया छाणा (जंगली कण्डे) बकरी की मींगणी, किसी स्वतः उगे हुए वृक्ष विशेष की लकड़ी; इनका क्रमशः तीन भाग और एक-एक भाग एकत्र जला कर उसकी राख को

Aho ! Shrutgyanam

छाणिय सेर सवायं वंधि गहुं वंकनालि धमि मंदं ।
धव अंगार सवा मणि सोहिय उत्तरइ चासणियं ।।६।।

तं पुणरवि सोहिज्जइ पण तोला रक्ख वंधिऊण गहुं ।
ता हवइ सहं कूरं अइ निम्मल चासणियं रुप्पं ।।७।।

।। इति सर्व चासनिका मूलसोधनविधिः ।।

सीसस्स अमल पत्तं करेवि लहु खंड तुलिवि सोहिज्जा ।
नीसरइ रुप्प सयलं सीसं गच्छेइ खरडि महे ।।८।।

सय तोलामज्झेणं वारह जव सीसए हवइ रुप्पं ।
पच्छा पुण पुण सोहिय तहावि निकणं न कइयावि★ ।।९।।

।। इति नाग चासनिका ।।

रुप्पस्स बीस मासा छ टंक नागं च देइ सोहिज्जा ।
जं जायइ ते विसुवा एवं हुइ रुप्प चासणियं ।।१०।।

।।इति रुप्प चासनिका ।।

६. कपड़छन करके (उसमें से) सवा सेर की गद्दी बाँधकर बंकनाल=बाँकिया द्वारा मन्द आँच से धमन करके धव वृक्ष (धावड़िया) के सवा मन अंगारों से शोधने से (चाँदी की) चासनी उतरती है।

७. उसे फिर पाँच तोला (चासनी को) राख की गद्दी बांध कर (अर्थात् राख पर पानी छिड़क कर कटोरे की आकृति जैसी बना लेना—पाड करना या पाड बनाना कहलाता है।) शोधन करना। वह अति निर्मल 'सहं कूरं' नाम रौप्य चाशनी होती है।

यह सर्व चासनिका के मूलशोधन की विधि हुई।

८. सीसे का निर्मल पात करके उसके छोटे छोटे टुकड़ों को तोलकर शोधन करना। चाँदी सब निकल जायगी और सीसा खरड़ि में चला जायगा।

९. सौ तोला सीसे में बारह जौ चाँदी निकलेगी। खरड़ को फिर बार-बार शोधने पर भी निष्कण (बिना भुनुक के वह) कभी नहीं होगी—रेत निकलेगी ही।

यह नाग (सीसे से चाँदी की चासनी करना) चासनिका हुई।

१०. वट्टे की चाँदी बीसमासों में छ-टंक (२४ मासा) सीसा देकर शुद्ध करें। चाँदी बचिया जो हो वह विसुवा (२० विसवा) होता है, इस प्रकार रौप्य चासनिका हुई।

यह रौप्य चासनिका शेष हुई।

सहं कूरं—कूर—कण = Small Particles

निकल = बिना कण का, कण चाँदी (देखिए गा० १३०)

★ यही गाथा धातूत्पत्तिप्रकरण के गा० २७ में है।

Aho ! Shrutgyanam

नाणय डहक्क हरजय रीणी चक्कलिय टंक दस गहिउं ।
पनरह गुण सीसेणं सोहिय नीसरइ जं रुप्पं ॥११॥
तस्साग्रो पाडिज्जइ रुप्पं सीसस्स जं रहइ सेसं ।
तं चासणिय सरूवं अन्नं जं खरडि मज्झि हवे ॥१२॥
नीचुच्च नाग्णाओ कमेण चउ दु जव किंच हीणहिया ।
संगहइ खरडि रुप्पं अवस्स चासणिय समयंमि ॥१३॥
हरजय चासणिय दुगं दह दह टंकस्स मेलि गहि अद्धं ।
पउण दु जवंतरेसु ह दु जवंतरि बाहुडइ नूणं ॥१४॥
॥ इति द्रव्य चासनिका ॥

खरंडि, खरल = सीसा मिश्रित चाँदी को खरड़ कहते हैं, सोना चाँदी मिश्रित भी खरड़ि, खडल, खरल खरड़ कहलाती है । पन्ना-माणक-तामड़ा आदि रत्नों की भी खरड़ होती है जिसमें मिट्टी-पत्थर मिला रहता है । उसे साफ करके नगीने या मणियें बनती हैं ।

नाग = सीसे को कहते हैं, सफाई के लिए चाँदी को सीसे के साथ गाला जाता है ।

विसुवा = बीस विसवा अर्थात् खरी चाँदी ।

११-१२. नाणय[1], डहक्क[2], हरजय[3], रीणी[4], चक्कलिय[5] दस टंक लेकर पन्द्रह गुणे सीसे के साथ शोधने पर जो चाँदी निकले उसे ढाल लेना । सीसे की चाँदी जो शेष रहे, दूसरी जो खरड़ में हो वही चासनी का स्वरूप है ।

१३. नीची-ऊँची—छोटी-बड़ी मुद्राओं की "नाणय" चाँदी क्रमशः चार और दो जव या कुछ हीनाधिक खरड़ का रौप्य हो, उसे चासनी के समय अवश्य संग्रह करें ।

१४. दस दस टंक की हरजय चासनीद्वय को मिलाकर गही शोधने से पौने दो जवान्तर से दो जवान्तर तक निश्चित ही वापस मिल जाती है ।

द्रव्य की चासनी समाप्त हुई ।

---

१. नाणय = सिक्के का सोना चाँदी ।
२. डहक्क—धुएं की या खरड़ की चाँदी संभावित है ।
३. हरजय हरजा चाँदी से बना हुआ सिक्का हरजय हो सकता है ।
४. रीणी = गलाए हुए सोने को परगहनी में डाल कर बनायी कांबी या लम्बी सलाई । रीण = क्षरित चुआई हुई, परगहनी में । रीणी मुद्राओं का वर्णन आगे गाथा ५२ व ५५ में देखिये ।
५. चक्कलिय = सोने चाँदी का मोटा गोल रूप गदिया, थपिया,

चासनी करने के बाद सोने या चाँदी को विभिन्न रूपों में रखा जाता है । लम्बी सलाई रूप रैनी या कम्बी; गोलरूप गद्दा या थपिया; फूल की पंखड़ियों का सा छितरा रूप हरता या खाल और गोल; ठोस रूप डाला या डली कहलाता है ।

Aho ! Shrutgyanam

चासणिय जव दहग्गुण जि टंक मासा हवंति तस्सुवरे ।
अग्गिस्स भुत्ति दीयइ टंकप्पइ जे जवा होंति ।।१५।।

तं सय मज्झे रुप्पं तहच्छमाणस्स पूरणे जंतं ।
तंब अहियस्स पुण जुय सल्लाही सा भणिज्जेइ ।।१६।।

।। इति सल्लाहिका विधिः ।।

सामन्नेण सुवन्नो बारहि वन्नीय भित्ति कणओ य ।
पंच जव हीण चिप्पं पिंजरि वन्नी य पंच तुले ।।१७।।

सिय खडिय लूण कल्लर सम मिस्सिय चुन्न सा सलोणीयं ।
मेलगय कणय चिप्पय करेवि तेण सह पइयव्वं ।।१८।।

तिहु अग्गिक्क सलोणी सत्ति सलूणीहि सुज्झए चिप्पं ।
इक्कारसीय वन्नी इक्कारस जव भवे सुकसं ।।१९।।

सय तोल कणय पइए जं घट्टइ सा सलूणियं चिप्पे ।
चिप्पे दहग्गि पक्के जं घट्टइ तं च कायरियं ।।२०।।

चिप्पस्स तिन्नि मासा पत्त करिवि भित्ति कणय सह पइए ।
स तिहाउ जओ घट्टइ भित्तीओ पढम चासणियं ।।२१।।

पच्छा ति अग्गि पक्के पुणो वि तिय मास भित्ति सह पइए ।
तेरह विसुव जवस्स य इय अंतरु वीय चासणिए ।।२२।।

१५-१६. जितने टंक मासा चासनी हो, टंक प्रति जितने जव हों उसके ऊपर दश गुणे जव अग्नि की भुक्ति देवे। उस चाँदी को हाथ में स्थित त्रिकोणयंत्र में पूरित कर देना, अधिक ताम्र वाली की फिर अलग हो इसे सलाही कहते हैं।

सलाहिका विधि समाप्त हुई।

१७. सामान्यतः सोना बारहवानो, भित्ति कनक, पाँच जव कम (११ वान ११ जव) की चीप, तोले में पाँच जौ कम पांच वान का पिंजर होता है।

१८. श्वेत खड़ियामिट्टी, लवण, कल्लर को बराबर मिलाकर उस सलोने चूर्ण को मिलावटी सोने की चीप करके उसके साथ जलाना चाहिए।

१९. तीन आग की एक सलोणी, (अर्थात् एक बार सलोनी में सांदकर तीन आग फूँकना इसे आइने अकबरी में सिताई कहा है) सात सलोनी (२१ आंच) से चीप शुद्ध होती है। वह ग्यारह वान और ग्यारह जव के अच्छे कस वाला चोप सोना होगा।

आइने अकबरी में छः बार सलोनी का १८ आंच मसाला सांदना कहा है।

२०. सौ तोला सोना जलाने से जो घटे उतना चोप सलोनी में गया समझो। फिर सलोनी से अग्नि में जलाने पर जो घटे वह कायरिय-कुकरा होता है।

२१-२२. चिप्प के तीन-तीन मासे के पत्र बनाकर भित्ति कनक (शुद्ध सोना) के साथ जलाने पर पहली चासनी में १$\frac{1}{3}$ जौ घटता है। फिर दूसरी चासनी में उसी तरह तीन

Aho ! Shrutgyanam

परपुन्न दहग्गि प (इ ?) ए भित्ति समं हवइ तइय चासणियं ।
टंकाण चक्कलीयं गहिज्जइ य कणय चासणियं ।।२३।।

।। इति सुवर्णशोधना चासनिका च ।।

मेलगइ रुप्प विसुवा दह तेरह सोल ठार उगवीसा ।
पंच उग चउग तिउणं विउणं सम सीसयं दिज्जा ।।२४।।
सयल कुदव्वं गच्छइ खरडितरि रहइ सेस रुप्पवरं ।
तं पुग दिवड्ड सीसइ सोहिय हुइ वीस विसुव धुवं ।।२५।।

।। इति रुप्प सोधना ।।

तुलिय सलूगीयाम्रो अड्ढाइ गुगीय खरडि रुप्पस्स ।
वट्टेवि मेलि पिंडिय करिज्ज कोमंस चुन्न सहा ।।२६।।

मासा भित्ति सोने के साथ जलाने से जौ का तेरह विसुवा घटेगा—यह दूसरी चासनी का अन्तर होगा ।

२३. तीसरी चासनी में भित्ति कनक के साथ चिप्प को अग्नि में परिपूर्ण जलाने पर घटेगा नहीं, भित्ति कनक के बराबर ही पूरा होगा । सोने की चासनी बनाने में एक-एक टांक (४ मासा) के चकलिए लेना चाहिए ।

सोना शुद्ध करने की चासनी समाप्त हुई ।

कल्लर = रेह या नोनी मिट्टी ।
कणय चिप्पय = सोने की चीप, पन्ना, पत्तर या वर्क बनाना ।
सफेद खडिया + नमक + रेह—यही मसाला सलोनी है । आइने अकबरी में शोरा-नमक + कच्ची इंटों का बराबर चूरा बतलाया है ।
पिंजर=मिश्रित सोना जो ताँबे के साथ तीन तीन बार जलाने के बाद धकिया बंध जाय वह पाँच वान का होता है ।
काइरिया को आइन-ए-अकबरी में कुकरा बतलाया है ।

२४. दस, तेरह, सोलह, अठारह, उन्नीस विसुवा मिलावटी चाँदी के साथ पाँच-गुना, चौगुना, तीनगुना दुगुना और बराबर सीसा देना । अर्थात् १० विसवा में पाँच गुना १३ विसवा में चौगुना, १६ विसवा में तिगुना १८ विसवा में दुगुना, ११ विसवा में बराबर सीसा मिलाना चाहिए ।

२५. सब कुद्रव्य (मिलावट) खरड़ में चला जाता है, अच्छी चाँदी बच जाती है । उसे फिर ड्योढे सीसे के साथ मिला कर सोधने से बीस विसवा शुद्ध चाँदी हो जाती है ।

चाँदी सोधना समाप्त हुआ ।

२६-२७. तोली हुई सलोनी (खाक खालिस) को उससे ढाई गुनी चाँदी की खरड़ के साथ मिलाकर कोमंस-चूर्ण के साथ बाँटकर पिंडा बाँधलो । इन पिंडों को कूटकर तोड़

Aho ! Shrutgyanam

तत्तो करेवि कुट्टिय धमिज्ज घट्टेइ तईय ग्रंसुमलं ।
हवइ दुभामिस्स दलं तस्साओ अड्डुयं कुज्जा ॥२७॥

नीसरइ सयल रुप्पं सीसं तंबं च जाइ खरडि महे ।
सा खरडि पुण धमिज्जइ पिहु पिहु नीसरहि दुन्नेवि ॥२८॥

काइरिय पुणो एवं कीरइ तस्साउ तंब सह कणयं ।
नीसरइ तस्स चिप्पं हुइ सीसं खरडि मज्झाओ ॥२९॥

॥ इति मिश्रदल शोधना ॥

कज्जलिय मूसि थूरिय तोपाल नियारस्स सुहुम कणं ।
सोहग्ग फक्क सज्जिय दसंस जुय कढिय हवइ दलं ॥३०॥

॥ इति कण चूर्ण शोधना ॥

चउ भाय अमल तंबय वर तित्तल सोल भाय सह कढियं ।
इय रीसं कायव्वं रुप्पस्स विसोव करणत्थे ॥३१॥

कर धमन करने—आग में जलाने से उसका मलांश घट जाता है। सीसा या मैल राख में चला जाता है। और दोनों का मिश्रदल हो जाता है, उसका अड्डुय करना चाहिए।

२८. चांदी सब निकल जाती है, सीसा और तांबा खरड़ में चला जाता है। उस खरड़ को फिर धमन करने—जलाने से तांबा और सीसा दोनों पृथक्-पृथक् निकल जाते हैं।

२९. काइरिय (कुकरा) की भी इसी प्रकार जलाने की क्रिया करना उससे सोना और तांबा साथ में मिला हुआ निकलेगा। उसकी चीप होगी, सीसा खरडि में चला जायगा।

मिश्रदल शोधनविधि समाप्त हुई।

अड्डुय=अड्डा, उसके ऊपर बर्त्तन में कोयले भर कर उसकी पैंदी के छेद से मिश्रदल जो भी सलोनी में हो वह नीचे गिर जाता है। उस अड्डे में चांदी निकाली जाती है।
धातूत्पत्ति प्रकरण में रांगे की धातु को कूट कर कोमंस चूर्ण के साथ धमन करने पर कामी होती है जिसका वर्णन १४ वीं गाथा में देखिए :—

रंगस्स धाहु कुट्टिवि करिज्ज कोमंस चुण्ण सहपिंडं ।
धमिय निसरई जं तं पुण गालिय कंविया होंति ॥१४॥

३०. कज्जलिय—काली मूस में थूरिय, तोपाल और नियार के सूक्ष्म कणों (खरड़ या राख में मिली हुई चांदी) को सुहागा और सज्जी का चूर्ण दशमांश मिलाकर गलाने से दल बन जाता है। अर्थात् एकमन में चार सेर चूर्ण देना चाहिए।

३१. शुद्ध तांबा चार भाग और शुद्ध पीतल सोलह भाग को गला कर चांदी का विसवा बनाने के लिए रीस तैयार करना।

Aho ! Shrutgyanam

बीसविसोवा रुप्पं मासा विसाउ जं जि कड्ढिज्जा ।
तित्तिय मासा रीसंदिज्जहवइ ते विसोव कसं ।।३२।।

।। इति रुप्प वनमालिका ।।

अइ चुक्ख रुप्प तंबय कमि पनरह सड्ढ सड्ढ चउ रीसे ।
इय भाय वंनियत्थे सोलस चउ कणय घडणत्थे ।।३३।।

जारिस वन्नी कीरइ तित्तिय दु जवहिय भित्ति कणओ य ।
सेस दु जवूण रीसं एवं तोलिक्कु हवइ परं ।।३४।।

रीस सम कणय पढमं गालिवि पुण थोव कणय सह कढियं ।।
पुण सेस सहा वट्टिय ता हवइ जहिच्छ वन्नाभं ।।३५।।

३२. बीस विसवा शुद्ध चांदी २० मासा लो, जितने मासे चाँदी निकाल कर उतनी रीस मिलाओगे उतने ही विसवे का कस हो जायगा (अर्थात् १७ मासा चाँदी + ३ मासा रीस की सतरह विसवा चाँदी होगी ।

रौप्य वनमालिका समाप्त हुई ।

३३-३४. अति चोखी चाँदी १५$\frac{1}{2}$ + तांबा ४$\frac{1}{2}$ की रीस बन गई, ये भाग वन्नी या बान के लिए हैं । सोने के घटन या टांके के लिए १६ चाँदी + ४ रीस मिलाकर काम में लेना । जैसी वन्नी करनी हो उसके हिसाब से दो जौ अधिक भित्ति कनक ले और दो जव कम रीस मिलावे इस प्रकार एक तोला होगा । उदाहरण :—८ बान का सोना करना है तो ८ मासा २ जौ खरा सोना लेकर उसमें दो जौ कम चार मासे रीस मिला दो, जो सोना होगा वह ८ बान का होगा ऐसे ही ९, १० आदि बानों का सोना बनाया जा सकता है । सोने में रीस कैसे मिलानी चाहिए ? इसकी विधि—८ मासे २ जौ खरा सोना और दो जौ कम ४ मासा रीस मिलानी है तो

३५. पहले रीस के बराबर सोना लेकर साथ गलाओ फिर थोड़ा सोना और डालो फिर शेष भी साथ मिला दो तब जैसा चाहा है उसी बान की श्रेष्ठ वर्णाभ—चमक का सोना बन जायगा ।

आइने अकबरी में **वनमालिका** को **बनवारी** लिखा है

अबुलफजल ने **रीस** का दूसरा योग दिया है उससे पहले का १२ बान उसके समय कसोटी में १०$\frac{1}{2}$ बान निकला ।

मूस = धातु गलाने का पात्र घरिया ।

फक्क = पीसा हुआ चूर्ण ।

कढिय = गालना काढना, अब राजस्थान में तिजाब काढना = शोधने का पर्याय है ।

रीस = सोने में मिलाने की खाद ।

अथवा—सोने की वनमालिका बनाने की दूसरी विधि जिसे पादोनविधि (पाऊण) कहते थे । पादोनविधि के लिए रीस चाहिए, वह गाथा ३६ में बताते हैं :—

Aho ! Shrutgyanam

अथवा—

राम कर भाय सुलभं तारं मुणि सत्त भाग सह कढियं ।
एयं सयंस रीसं सुवन्न वन्नस्स हरण वरं ।।३६।।

सेयालीस विभायं धुर कणय करवि एग एगूणं ।
तत्तुल्लि दिज्ज रीसं कमेण पाऊण हुई वन्नं ।।३७।।

।। इति कनक वनमालिका ।।

जवि सोलसेहि मासउ चहु मासिहि टंकु तोलओ तिउणो ।
सोलहि जवेहि वन्नी वारहि वन्नी महाकणओ† ।।३८।।

वन्नी तुल्लेण हयं भित्ति सुवन्नस्स अग्घ सह गुणियं ।
वारस भागे पत्तं जहिच्छमाणस्स तं मुल्लं ।।३९।।

नाणा वन्नी कणओ नाणा तुल्लेण जाम गालिज्जा ।
केरिस वन्नी जायइ अह एरिस वन्नि कि तुल्लो ।।४०।।

३६. तेईस भाग ताँबा (सुलभ = शुल्व) सतहत्तर भाग तार (स्वर्ण) के साथ गलाया जाय यह सौ भाग सोने का बान करने के लिए उत्तम रीस* मिलावट के लिए है ।

३७. बारहवानी सोना पादोन विधि से—१२ माशे धुर सोना लेकर उसके ४७ भाग शुद्ध सोना [धुर कणय, ध्रुव कनक, अक्षय स्वर्ग, निरूपक्षय (১৩৩ मानसोल्लास) शुद्ध हारिद्रक (कौटिल्य)] में एक-एक भाग मिलाते जाँय तो क्रमशः पादोन (एक-एक पाद कम) बान का सोना बनता जायगा ।

एक तोले ध्रुव सुवर्ण (खरा सोना, भित्ति कनक अक्षय सुवर्ण के ४७ भाग करके १-१ भाग कम करते जाइए और उतना ही रीस मिलाते जाइए तो पादोनक्रम से बान बन जाएंगे । ४८ भाग बारहवानी सोना । ४७ भाग सोना+१ रीस ११¾ वान, ४६ भाग सोना+२ रीस = ११½ वान, ४५ भाग सोना+३ रीस = ११¼ वान, ४४ सोना+४ रीस = ११ वान, २४ सोना+२४ रीस = ६ वान, १० सोना+३८ रीस = २½ वान ।

सोने की वनमालिका समाप्त हुई ।

३८. सोलह जौ का मासा, चार मासा का टंक और तीन टंक का एक तोला होता है । सोलह जौ की एक वन्नो और बारह वानो का महाकनक होता है ।

३९. वन्नी को तोला में से घटा के भित्ति कनक के मूल्य को गुणा करके बारह का भाग देने से यथेच्छ प्रमाण उसका मूल्य निकलेगा ।

४०. अलग अलग वान का सोना भिन्न भिन्न तोल का जब एकत्र कर गाला जाय तो कितनी वान का होगा या किस वान का बनने से उसका क्या तौल होगा ?

† यह गाथा गणितसार में भी गाथा नं० १० है । गणितसार में और भी सब प्रकार के माप दिए हैं ।

* रीस के लिए एक कौटिल्य की विधि, दूसरी ठ० फेरूकी और तीसरी आइन-ए-अकबरी में अबुलफजल की है ।

Aho ! Shrutgyanam

जसु वन्नी जं तुल्लो सो तस्सरिसो गुणेवि करि पिंडं ।
तुल्लि विहत्ते वन्नं इच्छा वन्नो हरे तुल्लं★ ।।४१।।
।। इति स्वर्ण विवहारं ।।

उग्घाड मूसि दुग सउ पडिय सओ ढक्क मूसि उद्देसो ।
आवट्ट खए गच्छइ हरजइ तहरीण वट्टे य ।।४२।।
छेयणि घडणुज्जालणि सहस्सि तोलेहि रुप्पु चउमासा ।
कणओ सवाउ मासउ टंकट्ठ सहस्सि दम्मेहिं ।।४३।।
।। इति ह्रास्यं ।।

चहु सय ठुत्तरि कणओ चहु सय वत्तीस कणय टंको य ।
तेवन्नि सड्ढ रुप्पउ सट्ठि टकउ नाणउ तिवन्ने ।।४४।।
तोलस्स सलूणी दम्मिहि वत्तीसि चउ हु कायरियं ।
रुप्पस्स खरडि सीसय पमाणि छह टंक दम्मिक्के ।।४५।।
सीसस्स मली सीसस्स अद्धए तह य डउल खरडि पुणो ।
लोहद्धि लोह कक्कर इय अग्घं तेर वासट्ठे ।।४६।।

४१. जिस वान का जो तौल हो परस्पर गुणाकार कर मिला देना चाहिए। तोल से भाग देने पर वान और वान को भाग देने से तौल निकल जायगा।

स्वर्ण व्यवहार समाप्त हुआ।

४२. दो सौ की खुली मूस में सौ गलने पर ढक कर आवर्त्त समाप्त होने पर हरजय और रीण का बट्टा चला जाता है।

४३. तोड़ने, घड़ने या टांके (घटन) में और उजालने में हजार तोलों में चार मासा चाँदी और सोना सवा मासा एवं हजार द्रम्म में (तांबा) आठ टांक छीजता—कम होता है।

४४. चार सौ अठहत्तर स्वर्ण का मूल्य चार सौ बत्तीस कनक टंका, साढे तेपन रौप्य का मूल्य ६० टका, ५३ नाणा मूल्य है।

४५. एक तोले सलूणी का बत्तीस द्रम्म, कायरिय (कुकरा) चार तोले का बत्तीस द्रम्म मूल्य है। चाँदी की खरडि सीसे के परिमाण से एक द्रम्म में छह टंक अर्थात् दो तोला आती है।

४६. सीसे की मली का मूल्य सीसे से आधा है, उसी प्रकार फिर डउल खरड़ि का भी समझना। तथा लोहे से आधा लोहकक्कर (कच्चा लोहा या कान्ति लोहा-ढाला) का होता है। सीसे का भाव द्रम्मप्रति तेरह तोला और लोहा एक द्रम्म का बासठ तोला के भाव समझना चाहिए।

★ जसु वन्ना जं तुल्लं तं तेण गुणेवि कीरए पिंडं
तुल्लि विहत्ते वन्नो वन्नो भाए हवइ तुल्लं ।।१५।। [गणितसार तृतीय अध्याय]
इसके पश्चात् गाथा २५ पर्यन्त स्वर्ण, पक्वस्वर्ण, नष्ट स्वर्ण आदि के हिसाब बतलाये हैं।

Aho ! Shrutgyanam

रुप्पय कणय तिधाउय इय तिय मुद्दाण मुल्ल दम्मेहिं* ।
वन्निय तुल्ल पमाणे सेस दु धाऊय टंकेण ।।४७।।

नाणा मुद्दाण कए जारिसु टंको पमाणिओ होइ ।
टंकेण तेण मुल्लं गणियव्वं सयल मुद्दाणं ।।४८।।

भणिसु हव नाणवट्टं[1] दम्मितिहि जाम इतिय मुद्दं ।
इय अग्घ पमाणेणं इत्तिय मुद्दाण कइ मुल्लं ।।४९।।

रासि तिगाइ गुणियं मज्झिम हरिऊण भाउजं लद्धं ।
तं ताण मुंद मुल्लं न संसयं भणइ फेरू त्ति ।।५०।।

।। इति मौल्यम् ।।

४७. चाँदी की, सोने की और तृधातु (सोना चाँदी तांबा मिश्रित) इन तीनों प्रकार की मुद्राओं का मूल्य वान और तोल के परिणाम से द्रम्म मुद्रा से होता है तथा शेष द्विधातु (चाँदी और तांबा मिश्रित) मुद्राओं का मूल्य टंकों से होता है ।

४८. मुद्राओं की चाँदी करने पर जैसे टंके के प्रमाण की हो उसी टंका के हिसाब से समस्त मुद्राओं का मूल्य गिनना चाहिए अर्थात् अन्य सिक्के की सौ मुद्राएँ आई उनमें से थोड़ी गालकर नाणय चाँदी (गा० ११-१२) बनाकर जिस प्रचलित टंके के अनुसार द्रव्य बैठता हो उसी टंके के अनुपात से उसका मूल्य समझना चाहिए ।

४९. अब मैं इतने द्रम्म में इतनी मुद्रा, इस मूल्य के प्रमाण से इतनी मुद्राओं का क्या मूल्य हुआ ? यह 'नाणावट' कहूँगा ।

५०. फेरू कहता है कि पहले राशि को तीन से गुणाकार कर बीच का हटा कर जो भाग मिले वही मुद्रा का मूल्य है, इसमें संशय नहीं ।

---

* उस समय द्रम्म मुद्रा विशेष प्रचलित थी सं० १३८० में सं० रयपति के संघ द्वारा शत्रुंजयतीर्थ में पचास हजार द्रम्म एवं गिरनारतीर्थ में चालीस सजार द्रम्म आमदनी होने का उल्लेख है । इसके पश्चात् सं० १३८२ में भीमपल्ली के संघ द्वारा खंभात में १२००) द्रम्म और शत्रुंजयतीर्थ में पन्द्रह हजार द्रम्म आमदनी होने का उल्लेख है । ये द्रम्म मुद्राएं कई प्रकार की होती थी, खरतर गच्छ गुर्वावली में इन सब मुद्राओं को "द्विवल्लिक द्रम्म" लिखा है । इस मुद्रा का उल्लेख द्रव्य परीक्षा में केवला नाम से आया है । यह केवल गुजराज में प्रचलित थी ।

१. नाणावट = विभिन्न मुद्राओं को विभिन्न या स्थानीय मुद्राओं में बदलने के व्यापार को (नाणा-वटाना) नाणावट कहते हैं । ऐसे व्यापारी 'नाणावटी' नाम से प्रसिद्ध हुए । उपर्युक्त ४९ वीं गाथा की "गणितसार की ६५ वीं गाथा से तुलना कीजिए —

भणिसु हव नाणवट्टं नव मुंद लहंति दम्म पणवीसं
इय अग्घ पमाणेणं सोलस मुंदाण कइ मुल्लं ।।६५।।

Aho ! Shrutgyanam

अथ मुद्रा यथा—

सवा इगवन्न दम्मिहि पुत्तलिया खीमलीय चउतीसे ।
तोला इक्कु कजानिय बावनि आदनिय इगवन्ने ॥५१॥

रीणी जे मुद्दालग स तिहा गुणचासि तोलओ तेवि ।
सड्डुयाल रूवाई खुराजमी सड्ढ पंचासे ॥५२॥

वालिट्ठ पाउ ओवम रुप्पमया तिन्नि होंति तिहु तुल्ले ।
सट्ठु सउ असी चत्ता तोला इक्को य वावन्नो ॥५३॥

सिरि देवगिरि उवन्नो सिंघणु तुल्लेण मासओ इक्को ।
सतरह विसुवा सड्ढा रुप्पउ ताराय मासद्धो ॥५४॥

अन्नं जं जि करारिय खट्टालग नरहड़ाइ रीणीय ।
तहं सयल दिट्ठि मुल्लु अहवा चासणिय अग्गिमुहे ॥५५॥

॥ इति रूप्यमुद्रा(१) ॥

(१) पूतली	तो०	५१।
खीमली	०	३४
कजानी	०	५२
आदनी	०	५१
रीणी मुद्रा	०	४९
रुवाई	०	४८॥
खुराजमी	०	५०॥

वालिष्ट जि ३

प्रति	५२
१६०	वा० १
८०	वा० १
४०	वा० १

सीघण मुद्रा ऽ०४

तारा मा० ॥ऽ०२

रीणी खटियालग नरहड़ादि करारी

एते दृष्टि अथवा चासनी प्रमाणे मूल्यं ।*

५१. पूतली मुद्रा के ५.१। द्रंम, खीमली के चौतीस, एक तोलेवाली कजानी के बावन और आदनी मुद्रा का इक्कावन द्रम है ।

५२. रीणी मुद्रा के ४९½, रूवाई के ४८½ खुराजमी के ५०½ द्रम्म है ; वे तोले वाली हैं ।

---

* मेरी कापी में इसके बाद—गारी तोला १ जे ४९ऽ" लिखा है जो मुद्रित में नहीं है ।

Aho ! Shrutgyanam

कणय मय सीयरामं दुविहं संजोय तह विओयं च ।
दह वन्नी दस मासा अभन्नणीया सपूयवरा ॥५६॥
चउकडिय तह सिरोहिय अट्ठी वन्नी सवा चउम्मासा ।
तुल्ले कुमरु पुणेवं अट्ठो वन्नी धुवं जाण ॥५७॥
पउमाभिहाण मुद्दा वारह वन्नीय तस्स कणओ य ।
तुल्लेण टकु इक्को सत्त जवा सोल विसुवंसा(२) ॥५८॥

(२) वा० १० सीताराम मासा १०
१ संयोगी १ वियोगी
वानी ८ चउकडीया ४।
वा० ८ सिरोहिया ४।
वा० ८ कुमरु तिहुणगिरि मासा ४।
वा० १२ पदमा टं १ जव ७ ऽ०॥०

५३. वालिष्ट मुद्राएँ रौप्य मय तीन प्रकार की तोल वाली (पावली, अधेली और एक तोले की) होती है जो प्रति ५२ द्रम्म में १६०, ८० और ४० आती हैं।

५४. श्रीदेवगिरि में उत्पन्न सींघण (१२१०-१४४७) मुद्रा तोल में एक मासे की है। अधमसी तारा नामक मुद्रा है; इनकी चाँदी साढ़े सतरह विसवा होती है। कोष्टक के संकेतानुसार इनका मूल्य चार द्रम्म और दो द्रम्म जानना चाहिए।

५५. करारी, खटियालग, रोणी नरहड़ादि जो अन्यान्य मुद्राएँ हैं उन सबको देखकर नजर से अथवा अग्नि में तपा कर चासनी से परीक्षा करनी चाहिए।

रौप्य मुद्रा शेष हुई।

५६. सीताराम को संयोगी और वियोगी दो प्रकार की स्वर्णमुद्राएँ होती हैं। वे दसवान सोने की और तौल में दसमासा (एक भरी) की हैं। वे केवल पूजनीय और बिना भुनाने योग्य हैं।

५७. चौकड़िया, सीरोहिया और कुमरु[1] (त्रिभुवनगिरि के राजा कुमारपाल यादव की), ये तीनों स्वर्ण मुद्राएँ सवा चार मासा वजन में और आठवान सोने की हैं।

५८. पद्मा नामक मुद्रा का सोना बारहवान का है और तौल में एक टाँक, सात जौ और सोलह विसवा होती हैं।

---

१. करौली से २४ मील उत्तर पूर्व में त्रिभुवनगिरि—वर्तमान तहनगढ है। इस यादव राजा कुमारपाल को युगप्रधान श्रीजिन दत्तसूरिजी ने प्रतिबोध किया (सं० १२११ से पूर्व) था। सं० १२५२ में वृद्ध राजा कुमारपाल से मुहम्मद गोरी ने त्रिभुवनगिरि का राज्य ले लिया था। श्रीजिनदत्तसूरिजी की भक्ति करते हुए इनका तत्कालीन चित्र जेसलमेर भंडार में विद्यमान है।

Aho ! Shrutgyanam

देवगिरी हेमच्छू सवादसी सिंघणी महादेवी।
ठाणकर लोहकुंडी अट्ठी वाणकर पउणदसी ॥५९॥

खग्गधर चुक्खरामा सड्ढनवी केसरो य छह सड्ढा।
सत्त जव दसी वन्नो कउलादेवो वियाणाहि ॥६०॥

जे अन्नि अच्छु बहुविह थरेहि तह मुल्लु तुल्लु नज्जेइ।
चउमासा दीनारो जहिच्छ वन्नी णुसारि फलो(३) ॥६१॥

॥ इति स्वर्णमुद्रा ॥

वाणारसीय मुद्दा पउमा नामेण इक्कि सय मज्झे।
तिन्नेव धाउ तुल्ले तोला सइतीस जाणेह ॥६२॥

(३) आछू देवगिरी मुद्रा स्वर्णमय वानी
विउराप्रमाणे
१०। सिंघण
१०। महादेवी
८ ठाणाकर
८ लोहकुंडी
९।।। रामबाण
९।। खड्गधर चोखीराम
६।। केसरी
१० ज ७ कौल देवी
० दीनारु मा० ४

५९-६०. देवगिरि की आछू स्वर्णमुद्राएँ सींघण और महादेवी सवा दस बान की, ठाणकर और लोहकुंडी आठवान की, वाणकर (रामवाण) पौने दस बान की, चोखी राम (खड्गधर) साढ़े नौ वान की, केसरी[1] साढ़े छः वान की, कौलादेवी दस वान सात जौ—वान के सोने की जानना।

६१. अन्य भी बहुत प्रकार के स्तर की जिनका मोल तोल अज्ञात हो व चार मासे वाली दीनार में सोने की बान के अनुसार यथेच्छ फल जानना।

स्वर्ण मुद्राएँ समाप्त हुई।

६२. पद्मा नामक वाराणसीमुद्रा में तौल में तीनों धातु मिले हुए हैं और सौ मुद्राएँ सैंतीस तोला (अर्थात् १११ टाँक) हैं।

---

१. केसरी मुद्रा का उल्लेख हेमचन्द्रकृत द्वाश्रय काव्य में आया है।

Aho ! Shrutgyanam

पंच जव हीण वारह् वन्नी कणओ य टंक इगयाला ।
छत्तीस अमल रुप्पं तंबं चउतीस टंकेवं(४) ।।६३।।

इक्कि पउमस्स मज्झे रुप्प कणय तंव मासओकिक्को ।
सत्त दह पंच जव कमि सुन्न चउ पनर विसुवहिया ।।६४।।

इय एगि पउम तुल्लो मुणिज्जव विसुवंस सोल टंकु इगो ।
जाणेह तस्स मुल्लो जइथल उणसट्ठि अह सट्ठी(५) ।।६५।।

भगवा तिधाउ संभव पउमा समतुल्ल विविह् मुल्ला य ।
भगवंदसणिय नामे कारिय जियसत्त रायस्स(६) ।।६६।।

(४) ० पदमा १०० मध्ये धातु ३ टंक १११
टं ४१ सोना बानी ११ जव ११ चोपा
टं ३६ रूपा चोखा नवाती विश्वा २०
टं ३४ तांबा चोखा अमल प्रधान

(५) ० पदमा १ संतोल्ये टं १ जव ७ ऽ०।।।१
मासा १ ज ७ ऽ०।।। रूपा चोखा ।।
मासा १ ज १० ऽ४।।। १ कनक चोखा ।।
मासा १ ज ५।।। ० ऽ४ तांबा निर्मल

(६) भगवा नानाविध मौल्य मुद्रा ११ तोल्ये मासा ४ जव ७
भगवंत नामे जितशत्रु नृप कारितं ।।

६३. इसमें इकतालीस टंक पाँच जव कम बारहवान (११ वान ११ जव) चीपा जाति का सोना, छत्तीस टंक शुद्ध बीस विसवा चाँदी और चौंतीस टंक निर्मल तांबा है। (कुल ४१+३६+३४ = १११ टंक हुए)

६४. एक पद्मा मुद्रा में चाँदी, सोना और ताँबा—तीनों धातु एक एक मासा और उस पर क्रमशः सात, दस, पाँच जौ एवं शून्य, चार, पन्द्रह विसवा अधिक धातु है। इस हिसाब से चाँदी एक मासा ७ जव ० विसवा; सोना एक मासा, दस जव, चार विसवा और ताँबा एक मासा पाँच जव सोलह विसवा होता है।

६५. एक पद्मा मुद्रा तौल में एक टाँक सात जौ सोलह विसवा है जिसका मूल्य जयथल मुद्रा उनसठ या साठ जानना चाहिए।

६६. सोना, चाँदी और ताँबा तीनों धातु की बनी हुई ११ (कोष्टकानुसार) भगवा मुद्रा पद्मा के समान तौल और विविध मूल्य की है। ये भगवान की दर्शनीय नामक मुद्रा जितशत्रु राजा ने बनवाई थी।

Aho ! Shrutgyanam

मुद्द विलाई कोरं मासा नव तुल्लि तिन्नि धाऊ य ।
तंबं दिवड्ड मासं सेस कणय रुप्प अद्धद्धं ॥६७॥
पउण ति टंका मुल्लं इमस्स सेसाण कमिण पाऊणं ।
जा पाय टंकओ हुइ इक्कारस मुद्द तुल्लि समा(७) ॥६८॥
माहोवयस्स मुद्दा तुल्लो इक्कस्स सड्ढ चउमासा ।
संजोय तिन्नि धाऊ पिहु पिहु नामेहि तं भणिमो ॥६९॥
रुव कणय गुंज चउ चउ तंबउ गुणवीस वीरवंमो य(८) ।
मुल्लु चउवीस जइथल★ हीरावंमस्स बावीसं(९) ॥७०॥

(७) विलाईकोर मुद्रा ११ तोल्ये ।
मासा ९ मूल्ये टंका ऽ२॥। ऽ२॥ ऽ२। ऽ२
ऽ१॥। ऽ१॥ ऽ१। ऽ०॥। ऽ०॥ ऽ०।

(८)	२४ वीरवरमु	मासा ४॥	तृधातु
	० सोनउ	० रूपउ	त्रांबा
	० राती ४	० राती ४	रा० १९
(९)	२२ हीरावरमु	मासा ४॥	तृधातु
	● ०सोनउ	रूपउ	तांबा
	० ०रा० ३॥।	रा० ३॥।	१९॥

६७. विलाईकोरमुद्रा तीन धातु की तौल में नौ मासा हैं, जिसमें डेढ मासा तांबा और शेष चाँदी और सोना आधा-आधा अर्थात् पौने चार मासा चाँदी और पौने चार मासा सोना है । कोष्ठकानुसार इनकी मुद्रा ग्यारह समझनी चाहिए ।

६८. इनका मूल्य पौने तीन टंका और अवशिष्ट दस का पाव पाव टंका कम करते पाव टंका रहा । ये ग्यारह मुद्राएँ तौल में बराबर हैं । अर्थात् २॥।, २॥, २।, २, १॥।, १॥, १।, १, ०॥।, ०॥, ०। टंका हुआ ।

६९. महोवा की मुद्राएं तौल में एक साढ़े चार मासा की और सोना, चाँदी, तांबा तीनों धातु मिश्रित हैं जिन्हें मैं पृथक् पृथक् नामों से कहता हूं ।

७०. वीरवर्म देव (चंदेल) की मुद्रा में चार-चार रत्ती सोना, चाँदी और उन्नीस रत्ती तांबा है उसका मूल्य बाईस जयथल है (कोष्टकानुसार सोना ३$\frac{3}{4}$, चाँदी ३$\frac{3}{4}$ और ताम्र १९$\frac{1}{2}$ रत्ती है ।)

★ उस समय जयथल या जीतल प्रचलित मुद्राएँ थी, खरतर गच्छ-युगप्रधानाचार्य गुर्वावली में सं० १३७५ में कलिकाल केवली श्रीजिनचंदसूरि के समय फलोदी तीर्थ में महत्तियाणा सेढू द्वारा बारह हजार देकर मन्त्रिपद ग्रहण एवं अन्य सब मिलाकर तीर्थ में तीस हजार जैथल आय होने का उल्लेख है । हस्तिनापुर तीर्थ में बीस हजार जैथल देकर ठ० देवसिंह द्वारा इन्द्रपद ग्रहण, ठ० हरिराज द्वारा आमात्य पद ग्रहण करने और इस तीर्थ में कुल मिलाकर डेढ लाख जयथल आमदनी होने का उल्लेख है ।

Aho ! Shrutgyanam

तंबु अढाइ मासा रुप्पु सुवन्नो य इक्कु इक्को य ।
तियलोयवंम मुल्लं छत्तीसं(१०) विविह भोजस्स(११) ।।७१।।

वल्लह तिय कमि धाऊ रुप्य कणय गुंज अट्ठ पण अहुट्ठं ।
तंबु भव११ सतर१७ वीसं२० मुल्ले चालीस तीस वास धुवं(१२) ।।७२।।

।। इति त्रिधातु मिश्रित मुद्राः ।।

अथ द्विधातु मुद्राः—
जे तोला जे मासा जि टंक उल्लविय सयल मुद्देहिं ।
तं सयमज्झे रुप्पउ जाणिज्जहु सेस तंवो य ।।७३।।

खुरसाण देस संभव चिन्हक्खर पारसीय तुरुकी य ।
तंबय रुप्प दुधाऊ इमेहि नामेहि जाणेह ।।७४।।

(१०) ३६ त्रिलोकवरमु १ मासा ४।। मा०
० मा १ सोनमा १ रूपोमा २।। तांबा

(११) ० भोज नाना तौल्य विविध मूल्य
० तृधातु संभव

(१२) वालम्भ		मासा	सोना	रूपा	तांबा
४०	१	४।।	रा. ८	रा. ८	रा. ११
३०	१	४।।	रा. ५	रा. ५	रा. १७
२०	१	४।।	रा. ३।।	रा. ३।।	रा. २०

७१. त्रिलोक वर्मा की मुद्रा में ढाई मासा ताम्र और एक-एक मासा सोना चाँदी है जिसका मूल्य छत्तीस जीतल और भोज की मुद्राओं में विविध है। कोष्टकानुसार भोज की मुद्राएँ त्रिधातु की नाना तौल एवं विविध मूल्य की थीं।

७२. वल्लभ (वालंभ—वल्लह) मुद्रा तीन प्रकार की होती है जिनमें सोना, चाँदी दोनों बराबर आठ, पाँच, साढ़े तीन रत्ती एवं तांबा ११, ७०, २० रत्ती है। अर्थात् सब मिला कर साढ़े चार, साढ़े चार मासा तीनों में बराबर वजन हुआ और मूल्य क्रमशः चालीस, बीस और बीस जीतल हैं।

।। तीन धातुओं की मिश्रित मुद्राएँ समाप्त हुईं ।।

अब दो धातु की मुद्राएँ :—

७३. समस्त मुद्राओं में जितना तोला जितना मासा और जितने टंक कहे हैं उतनी प्रतिशत चाँदी और अवशिष्ट ताम्र जानना।

७४. खुरासान देश की निर्मित मुद्राओं में पारसी और तुर्की चिन्हाक्षर रहते हैं, जिनमें तांबा और चाँदी दो धातु हैं। इनके नाम इस प्रकार जानो—

Aho ! Shrutgyanam

भंभइ य एग टिप्पी सिकंदरी कुरुलुकी पलाहुउरी ।
सम्मोसीय लगामी पेरि जमाली मसूदीया ॥७५॥

सय मुद्द मज्झि रुप्यउ ति चउ ति दु इगेग दु दु इग दु तोला ।
सुन० ति३ सुन० छ६ दु२ सवापण५। छ६दु२ सढनव९॥
पउण दुइमासा ॥७६॥

चउतीसं तेवीसं चउतीसिगयाल असी सट्ठि कमे ।
इगयाल सत्तयालं पणपन्नऽडयाल टंकिक्के(१३) ॥७७॥

॥ इति खुरसाणीमुद्राः । विवरणं जंत्रेणाह—

(१३)	३४ भांभइ मुद्रा	१०० मध्ये रूपा	तो. ३ मा. ०
	२३ इगटीपी	१०० मध्ये रूपा	तो. ४ मा. ३
	३४ सिकन्दरी	१०० मध्ये रूपा	३ मा. ०
	४१ कुरुलुकी	१०० मध्ये रूपा	२ मा. ६
	८० पलाहौरी	१०० मध्ये रूपा	१ मा. २
	६० समोसी	१०० मध्ये रूपा	१ मा. ५।
	४१ लगामी	१०० मध्ये रूपा	२ मा. ६
	४७ पेरी	१०० मध्ये रूपा	२ मा. २
	५५ जमाली	१०० मध्ये रूपा	१ मा. ९॥
	४८ मसूदी करारी	१०० मध्ये रूपा	२ मा. १॥।

७५. भंभइ, एकटिप्पी, सिकंदरी, कुरुलुकी, पलाहौरी, समोसी, लगामी, पेरी, जमाली और मसूदी ।

७६. सौ मुद्राओं में चांदी तीन, चार, तीन, दो, एक, एक, दो, दो, एक, दो तोला एवं शून्य तीन, शून्य, छह, दो, सवा पांच, छह, दो, साढ़े, नौ, पौने दो मासा क्रमशः है । अर्थात् सौ भंभई मुद्रा में तीन तोला, इगटिप्पी में चार तोला तीन मासा, सिकंदरी में तीन तोला, कुरुलुकी में दो तोला छः मासा, पलहौरी में एक तोला दो मासा, समोसी में एक तोला सवा पांच मासा, लगामी में दो तोला छः मासा, पेरी में दो तोला दो मासा. जमाली में एक तोला साढ़े नौ मासा और मसूदी में दो तोला पौने दो मासा चांदी हैं ।

७७. चौंतीस, तेईस, चौंतीस, इकतालीस, अस्सी, साठ, इकतालीस, सैंतालीस, पचपन और अड़तालीस मुद्राएँ एक टंक की आती हैं । अर्थात् भंभई, एक टंके की चौंतीस, इगटिप्पी तेईस, सिकंदरी चौंतीस, कुरुलकी इकतालीस, पलाहोरी अस्सी समोसी साठ, लगामी इकतालीस, पेरी सैंतालीस, जमाली पचपन, मसूदी अड़तालीस आती हैं ।

खुरासानी मुद्राएँ समाप्त हुई, यंत्र से विवरण जानो ।

Aho ! Shrutgyanam

अवदुल्ली तह कुतुली तुल्लि सवापण दुमासिया मुल्ले ।
सट्ठि असी तह रुप्पं दु दु जव चउ सोल विवकम्मे (१४) ॥७८॥
॥ इति अठनारीमुद्राः ॥

विक्कम नरिंद भणिमो गोजिग्गा अउणतीस तोल रुवा ।
दउराहा पणवीसं सवा रुमे अहुठ चउ मुल्ले ॥७९॥

भीमाहा छव्वीसं तोला मासद्धु चारि टंकिक्के ।
चोरी मोरी तोला पणवीसं मुल्लि चारि सवा ॥८०॥

करड तह कुम्मरूवो कालाकच्चरि य छक्क करि मुल्ले ।
सय मज्झि अट्ठमासा सतरह तोला य खलु रुप्पं (१५) ॥८१॥
॥ इति विक्रमार्कमुद्राः ॥

(१४) ० अबदुल्ली १ मासा ५। मध्ये रूपा जव २५४ प्र. ६०
० कुतुली १ मासा २ मध्ये रूपा जव १॥ प्र. ८०

(१५) ० गोजिगा १०० मध्ये रूपा तोला २९ मासा ९ प्रति ३॥
० दउराहा १०० मध्ये रूपा तोला २५ मासा ३ प्रति ४
० भीमाहा १०० मध्ये रूपा तोला २६ मासा ०॥ प्रति ४
० चोरीमोरी १०० मध्ये रूपा तोला २५ मासा ० प्रति ४।
० करड १०० मध्ये रूपा तोला १७ मासा ८ प्रति ६
० कूर्मरूपी १०० मध्ये रूपा तोला १७ मासा ८ प्रति ६
० कालाकचारि १०० मध्ये रूपा तोला १७ मासा ८ प्रति ६

७८. अब्दुली और कुतुली सवा पांच और दो मासा तौल में, इनका मूल्य साठ और अस्सी एक टंके में आतो है । इनमें दो जौ चार विसवा तथा दो जौ सोलह विसवा क्रमशः चांदी है ।

अठनारी मुद्रा समाप्त हुई ।

७९. महाराजा विक्रमादित्य की मुद्राओं का वर्णन करता हूं—(एक सौ) गोजिगा में उनतीस तोला नौ मासा चांदी और एक टंके की साढ़े तीन के भाव तथा दउराहा एक सौ में पचीस तोला तीन मासा चांदी व टंक के चार के भाव है ।

८०. भीमाहा एक सौ में छब्बीस तोला आधामासा एवं एक टंके की चार के भाव हैं । चोरीमोरी में पचीस तोला चांदी और टंके की सवा चार के भाव है ।

८१. करड, कूर्मरूपी और कालाकचारे तीनों मुद्राएं टंके की छः के भाव हैं एवं एक सौ में सतरह तोला आठमासा चांदी निश्चित रूप से है ।

विक्रमादित्य की मुद्राएँ समाप्त हुई ।

Aho ! Shrutgyanam

गुज्जरवइक्ष्ष रायाणं बहुविह मुद्दाइ विविह नामाइं ।
ताणं चिय भणिमोहं तुल्लं मुल्लं निसामेह ॥८२॥

कुमर अजय भीमपुरी लूणवसा रुप्पु टंक पणवन्ना ।
पंच नव विसुव मुल्लो तुल्लो चउमास तेर जवा ॥८३॥

वीसलपुरीय छह करि कुण्डे गुग्गुलिय टंक पन्नासं ।
डुल्लहर पनर तोला अहुट्ठ मासा छ सड्ढ करे ॥८४॥

अज्जुणपुरीय तोला बारह सड्ढाय मुल्लि अट्ठ करे ।
कट्टारिया चउद्दस तोला मासा ति सत्तेव(१६) ॥८५॥

(१६)

५।४	कुमरपुरी	१०० मध्ये	तोला १८	मा० ४
५।४	अजयपुरी	१०० मध्ये	तोला १८	मा० ४
५।४	भीमपुरी	१०० मध्ये	तोला १८	मा० ४
५।४	लावणसापुरी	१०० मध्ये	तोला १८	मा० ४
८	अर्जुनपुरी	१०० मध्ये	तोला १२	मा० ६
६	वीसलपुरी १ कुंडे १ गूगले	१०० मध्ये	तोला १६	मा० ८
६॥	डोलहर	१०० मध्ये	तोला १५	मा० ३॥
७	कटारिया	१०० मध्ये	तोला १४	मा० ३

८२. गूर्जरपति राजाओं की विविध नामों की बहुत प्रकार की मुद्राएं हैं, उनका तोल मोल मैं कहता हूँ, सुनो !

८३. कुमरपुरी, अजयपुरी, भीमपुरी[1] और लावणवसापुरी[2] एक सौ मुद्राओं में चांदी पचावन टंक अर्थात् अठारह तोला चार मासा है। यह पांच और नौ विश्वा के भाव है और तौल में प्रत्येक चार मासे की होती है।

८४. वीसलपुरी कुंडे और गूगले मुद्रा छः के भाव एवं सौ मुद्राओं में पचास टांक अर्थात् सोलह तोला आठ मासा चाँदी तथा डोलहर मुद्रा एक सौ में पन्द्रह तोला साढे तीन मासा चाँदी व साढे छः के भाव है।

८५. अर्जुनपुरी मुद्रा सो में साढे बारह तोला चांदी और आठ के भाव है एवं कटारिया में प्रतिशत चौदह तोला तीन मासा चांदी व सात के भाव है।

---

* गूर्जरेश्वर कुमारपाल, अजयपाल, भीमदेव, लवणप्रसाद वीसलदेव, अर्जुनदेव आदि राजाओं की मुद्राओं का यहाँ वर्णन है।

१. भीमपुरी मुद्रा का उल्लेख पुरातनप्रबन्ध पृ० ३३ में वसाह आभड़ प्रबन्ध में आया है। ये द्रम या द्राम के प्रकारों में से ही थी पृ० ३४ के महं आंबा के प्रबन्ध में गिरनार की पद्याओं के निर्माण में ६३ लाख भीमपुरी द्रम व्यय करने का उल्लेख है। पृ० ६५ में वस्तुपाल तेजपाल प्रबन्ध में तीन सौ बत्तीस करोड़ चौरासी लाख सात हजार चार सौ चौदह लोहड़िया अथवा इकाआगला भीमपुरी द्रम विविध पुण्य कार्यों में व्यय करने का उल्लेख है।

२. अगले पृष्ठ पर

Aho ! Shrutgyanam

नव करि असपालपुरीगारस तोला अड्ढाइय मासा ।
सारंगदेव नरवइ तस्स इमं संपवक्खामि ॥८६॥

सोढलपुरी छ तोला मासा अट्ठेव मुल्लु पन्नरसा ।
पणमासा दहतोला दस करि लाखापुरी जाण ॥८७॥

गविका य पंच तोला रुप्पउ सयमज्झि वीस करि मुल्ले ।
पडिया रज्जपलाहा सोलह करि छ तोल अहुट्ठ मासा ॥८८॥

वेवलय सड्ढ सोलस रुप्पु छ तोला य मासओ पउणो ।
इय इत्तियाण तुल्लो मासा पंचेव इक्किक्को(१७) ॥८९॥

अट्ठ कररिवि सट्ठ सया तोला सढवार तुल्लि मासहुठा ।
दस तोल सत्त मासा वराह नव सड्ढ टंकीण ॥९०॥

(१७) ९ आसपालपुरी	१०० मध्ये	तोला ११	मा० २॥
१५ सोढलपुरी	१०० मध्ये	तोला ६	मा० ८
१० लाखापुरी	१०० मध्ये	तोला १०	मा० ५
२० गविकाः	१०० मध्ये	तोला ५	मा० ०
१६ पड़िया	१०० मध्ये	तोला ६	मा० ३॥
१६ रजपलाहा	१०० मध्ये	तोला ६	मा० ३॥
१६॥ वेवला	१०० मध्ये	तोला ६	मा० ०॥।

८६ आसपालपुरी मुद्रा नौ के भाव है उसमें ग्यारह तोला और ढाइ मासा चाँदी है। ये नरपति सारंगदेव की मुद्राएं हैं जिनका वर्णन करता हूँ।

८७. सोढलपुरी में प्रतिशत छः तोला और आठ मासा चाँदी है एवं पन्द्रह के भाव है। तथा लाखापुरी में प्रतिशत दस तोला पांच मासा चाँदी और दस के भाव है।

८८ एक सो गविका मुद्रा में पाँच तोला चाँदी एवं बीस के भाव है। पडिया और रजपलाह मुद्राओं में छः तोला साढे तीन मासा चाँदी है और वे सोलह के भाव हैं।

८९. वेवला मुद्राओं में छः तोला और पौन मासा चाँदी है और वे साढे सोलह के भाव हैं। ये तौल इतनी (सौ मुद्राओं की चाँदी) का है, एक एक मुद्रा तौल में पाँच मासे की है। अर्थात् अवशिष्ट भाग ताम्र का है। इनका मूल्य प्रतिशत द्रव्य चाँदी के हिसाब से ही है।

९०. साठसया मुद्रा में प्रतिशत बारह तोला छः मासा चाँदी है और तौल में साढ़े तीन मासे की है और प्रति टंका आठ के भाव है। वराह मुद्रा में दस तोला सत्त मासा प्रतिशत चाँदी और टंके को साढ़े नो के भाव है।

---

२. लूणसापुरीयद्रम मुद्रा :—जाबालिपुर के समरसिंह के पुत्र चाहमान उदयसिंह के तीन भाई सामन्तसिंह अनंतपाठ और त्रिलोकसिंह दातार और शूरवीर थे। राजा के दिए हुए ग्रास से अतृप्त वे धवल्लक में वीरधवल के पास सेवा करने गए। वेतन पूछने पर उन्होंने लुणसापुरीय द्रम्म लक्ष लक्ष प्रतिव्यक्ति मांगा था। [प्रबन्धकोश पृ० १०५]

Aho ! Shrutgyanam

वारह सड्ढ करेविणु तोलट्ठ रुवा विनाइका चंदी ।
कन्हड़पुरी छ सड्ढा कणु पनरह तोल अहुठ मसा ।।९१।।

वाण इगवीस तोला अधमासउ रुप्पु पंच इगि टंके ।
मछवाह छकरि सोलह तोला मासट्ठ रुप्पु सए(१८) ।।९२।।

चउतीसा पइतीसा छत्तीसा तह य सत्ततीसा य ।
मालवपुरि छारीया चासणिए मुल्लु एयाणं ।।९३।।

।। इति गुर्जरी मुद्राः ।।

मालविय चउक्कडिया तोला अट्ठाय सड्ढ वारि करे ।
दिउपालपुरी पनरह तोला पण मास छह सड्ढा ।।९४।।

कुण्डलिया छह तोला पउण छ मासा य मुल्लि पन्नरसा ।
मासट्ठ पंच तोला वारह जव कउलिया सतरं ।।९५।।

(१८) ८	साठसया	१०० मध्ये तोला	१२।।	मा. ३।।
९।।	वराहमुंद	१०० मध्ये तोला	१०	मा. ७
१२।।	विनायका	१०० मध्ये तोला	८	मा. ०
६।।	कान्हड़पुरी	१०० मध्ये तोला	१५	मा. ३।।
५	वाणमुद्रा	१०० मध्ये तोला	२१	मा. ।।
६	मछवाहा	१०० मध्ये तोला	१६	मा. ८

९१. विनायकाचंदी मुद्रा में प्रतिशत आठ तोला चाँदी और टंके की साढ़े बारह के भाव है। कान्हड़पुरी मुद्रा में चाँदी पनरह तोला प्रतिशत है; यह साढ़े छः मुद्रा प्रति टंके के मूल्य की है और तौल में प्रत्येक साढ़े तीन मासे की है।

९२. वाणमुद्रा में प्रतिशत इक्कीस तोला और आधा मासा चांदी व पाँच के भाव है। मछवाह मुद्रा में प्रतिशत सोलह तोला आठ मासा चाँदी एवं उसका मूल्य टंके की छः के भाव से है।

९३. चौंतीसा, पैंतीसा, छत्तीसा व सैंतीसा, मालवपुरी छारिया इन मुद्राओं का मूल्य चासनी के अनुसार जानना चाहिए।

गूर्जरी मुद्राएँ समाप्त हुई।

९४. मालवा की चौकड़िया मुद्रा में प्रतिशत आठ तोला चाँदी व साढ़े बारह के भाव है। दिउपालपुरी में पन्द्रह तोला पाँच मासा चाँदी और साढ़े छः के भाव है।

९५. कुंडलिया मुद्रा में प्रतिशत छ तोला, पौने छः मासा चाँदी है और पन्द्रह के भाव है। कउलिया मुद्रा में पाँच तोला आठ मासा बारह जौ चाँदी है और वह सतरह के भाव है।

Aho ! Shrutgyanam

वावीस टंक दव्वो तेरह् सड्ढा छडुल्लिया हुंति ।
सेलक्की तुंगड पण तोला तियमास चउवीसं (उणवीस ?) ॥९६॥

इय इत्तियाण तुल्लं चउमासा दह जवा हवंति धुवं ।
जानीया चित्तउडी वीसं दव्वो य पण तोला(१९) ॥९७॥

जवकरिया गलहुलिया वावीसं तीस मुल्लु तह् दव्वो ।
कमि चारि तिन्नि तोला छ जव चउम्मास चउमासा ॥९८॥

मासद्ध इक्कु तोलउ रुप्पो य खालगा य छप्पन्ना ।
सिवगणय पंचहत्तरि मुल्लि सवा तोलओ रुप्पो ॥९९॥

१९. प्रति	नाम	१०० मध्ये रूपा तो०	मा० तोल्ये	टं०	जव
१२॥	चौकडिया	८	०	१	१०
६॥	दिउपालपुरी	१५	५	१	१०
१५	कुंडलिया	६	५॥।	१	१०
१७	कउलियामुद्र	५	८॥।	१	१०
१३॥	छडुलिया	७	४	१	१०
१९	सेलकी तोगड	५	३	१	१०
२०	जानीया चितौड़ी	५	०	०	०

९६. छडुलिया मुद्रा में प्रतिशत बाईस टांक अर्थात् सात तोला चार मासा चाँदी है और वह प्रति टंका साढ़े तेरह के भाव की है । सेलकी तोगड़ मुद्रा में पांच तोला तीन मासा चाँदी है तथा वह उन्नीस के भाव है ।

९७. इन इतनी मुद्राओं का तौल पृथक् पृथक् एवं टंक अर्थात् चार मासा और दस जौ निश्चित है । जानीया चित्तौड़ी मुद्राओं में प्रतिशत पाँच तोला चांदी है और वह प्रति टंका बीस के भाव है ।

९८. जकारिया मुद्रा में प्रतिशत चार तोला, साढ़े चार मासा चांदी है और वह बाईस के भाव है । गलहुलिया मुद्रा में प्रतिशत तीन तोला चार मासा चांदी और वह प्रति टंके तीस के मूल्य की है ।

९९. खालगा मुद्रा में प्रतिशत एक तोला तीन मासा चाँदी है और वह प्रति टंके छप्पन आती है । शिवगण मुद्रा में प्रतिशत एक तोला तीन मासा चाँदी है और वह टंके की पचहत्तर के भाव की है ।

Aho ! Shrutgyanam

चउदस सवा चउदसी तोला वपडाय मलित सतकरे ।
सिहू चोरमार मलुवा तेरह तोला य सत्त सत्त सवा(२०) ॥१००॥
॥ इति मालवीमुद्राः ॥

चाहुंडी तिन्नि कमसो दुउत्तरी अंकको पुराणी य ।
ति ति दु तोल दह ति दह मासऽडवीस वतीस पणतीसं ॥१०१॥
आसलिय सतरहुत्तरि दु तोल छम्मास दव्वु चालीसं ।
आसल्ली ठेंगा महि छ टंक कणु मुल्लि पन्नासं ॥१०२॥
आसलिय नविय तुल्ले सतरह तोला सवाय इगि टंके ।
टंक अढाई रुप्यउ सय मज्झे वीस मासाय ॥१०३॥
॥ इति नलपुरमुद्राः(२१) ॥

(२०) प्रति	नामानि	१०० मध्ये	रूपा तो०	मा०	तोल्ये	टं०
२२	जकारीया नाम	१०० मध्ये	४	४॥	०	०
३०	गलहुलिया	,, ,,	३	४	०	०
५६	खालगा मुद्रा	शत १ मध्ये	१	८	०	०
७५	सिवगगा	शत १ मध्ये	१	३	०	०
७	वापडा नाम मुद्रा मध्ये		१४	०	०	०
७	मलीता नाम मुद्रा मध्ये		१४	३	१	०
७	सीहमार नाम मुद्रा म०		१३	०	१	०
७	चोरमार नाम १०० म०		१३	०	१	०

(२१) प्र० २८ चांहडी दुओत्तरी १०० मध्ये तो० ३ मा० १०
प्र० ३२ चांहडी आंकको १०० मध्ये तो० ३ मा० ३
प्र० ३५ चांहडी पुराणी १०० मध्ये तो० २ मा० १०
प्र० ४० आसली सतरहोतरी मध्ये तो० २ मा० ६
प्र० ५० आसली ठेंगा १०० मध्ये तो० २ मा०
प्र० १७ आसली नवी ठेका १ प्रति तुलित तोला १७१
मध्ये रूपा तोला २॥ सत १ मध्ये रूपा तो ५ (?)

१००. वापड़ा में प्रतिशत चौदह तोला चांदी है और वह सात के भाव है। मलीता मुद्रा में प्रतिशत चौदह तोला तीन मासा चांदी है और वह सात के भाव है। सीहमार और चोरमार मलुवा (मालवी) मुद्राओं में प्रतिशत तेरह तोला चांदी है और उनका मूल्य सात और सवा सात के भाव से है (कोष्टकानुसार सात है और अन्तिम तीनों का प्रत्येक का तौल एक एक टंक अर्थात् चार चार मासा लिखा है)।

मुद्रित कोष्टक में मलीता का प्रति १७ लिखा है पर द्रव्य के हिसाब से व मूल गाथा में भी सात ही है।

मालवी मुद्राएँ समाप्त हुई।

१०१. चांहडी मुद्रा तीन तरह की—दुओत्तरी, अंकको, पुराणी है जो तीन तोला दस मासा की दुओत्तरी अठाइस प्रति टंके के भाव है। अंकको मुद्रा में प्रतिशत तीन तोला तीन

चंदेरियस्स मुद्दा मुल्ले कोल्हापुरीय छह सड्ढा ।
पनरह तोला सतिहा तुल्ले चउ विसुव टंकु इगो ।।१०४।।

सड्ढट्ठ सड्ढ बारह तोला जीरीय हीरिया सयगे ।
बारट्ठ करिवि सु कमे टंकइ इक्के वियाणेह ।।१०५।।

दव्वु अढाई तोला अकुडा सय मज्झि मुल्लु चालीसा ।
जइत अड मास नव जव दव्वो मुल्लेण दिवढ सयं ।।१०६।।

सद्ठु सउ वीर टंकइ जव तेरह सत्त मास सय मज्झे ।
लक्खण सवा छ मासा रुप्पु सए मुल्लु असी सयं ।।१०७।।

राम दु जव चउमासा दुन्नि सया मुल्लि टंकए इक्के ।
वव्वावरा मसीणा खसरं च सयं नवइ अहियं ।।१०८।।

।। इति चंदेरिकापुरसत्कमुद्राः(२२) ।।

(२२) प्र० ६।।	कोल्हापुरी	१०० मध्ये	तो० १५	मा० ४	जव	०
प्र० १२	जोरिया	१०० मध्ये	तो० ८	मा० ६	जव	०
प्र० ८	हीरिया	१०० मध्ये	तो० १२	मा० ६	जव	०
प्र० ४०	अकुडा	१०० मध्ये	तो० २	मा० ६	जव	०
प्र० १५०	जइत	१०० मध्ये	तो० ०	मा० ८	जव	९
प्र० १६०	वीरमुंद	१०० मध्ये	तो० ०	मा९ ७	ज०	१३
प्र० १८०	लक्ष्मणी	१०० मध्ये	तो० ०	मा० ६	ज०	४
प्र० २००	राम	१०० मध्ये	तो० ०	मा० ४	ज०	२
प्र० १९०	वव्वावरा	१०० मध्ये	तो० ०	मा० ५	ज०	८
प्र० १९०	मसीणा	१०० मध्ये	तो० ०	मा० ५	ज०	८
प्र० १९०	खसर	१०० मध्ये	तो० ०	मा० ५	ज०	८

इति चंदेरिकापुरमुद्राः

मासा चांदी है और वह बत्तीस के भाव है । पुराणी मुद्रा में प्रतिशत दो तोला दस मासा चांदी है और वह टंके की पैंतीस के भाव है ।

१०२. आसली सतरहोतरी मुद्रा में प्रतिशत दो तोला छः मासा चांदी है और प्रति टंका चालीस के भाव मूल्य है । आसली ठेंगा मुद्रा में प्रतिशत छः टंक अर्थात् दो तोला चांदी है । यह टंके की पचास के भाव है ।

१०३. नयी आसली ठेका मुद्रा एक टंके की सवा सतरह के भाव है ढाई टांक चाँदी और सौ में बीस मासा (? पाँच तोला या ६० मासा) चाँदी होती है ।

१०४. चंदेरी की मुद्राओं में प्रतिशत चाँदी पन्द्रह तोला चार मासा है उसका मूल्य टंके की साढे छः के भाव है । एक मुद्रा की तौल एक टंक चार विसवा है ।

१०५. जीरिया मुद्रा में आठ तोला छः मासा, हीरिया में बारह तोला छः मासा, प्रतिशत मुद्रा में, चाँदी, और एक टंके की जीरिया बारह और हीरिया आठ के भाव है ।

Aho ! Shrutgyanam

जालंधरी वडोहिय जइतचंदाहे य रूपचंदाहे।
रुप्प चउ तिन्नि मासा दिवढ सयं दु सय टंकिक्के ॥१०९॥
तिन्नि सय इक्कि टंके सोसडिया हुइ तिलोय चंदाहे।
संतिउरीसाहे पुण चारिसया इक्कि टंकेणं ॥११०॥
॥ इति जालंधरी मुद्राः(२३) ॥

अथ ढिल्लिकासत्कमुद्रा यथा--
अणग मयणप्पलाहे पिथउपलाहे य चाहड़पलाहे।
सय मज्झि टंक सोलह रुप्पउ उणवीस करि मुल्लो ॥१११॥
॥ एता मुद्रा राजपुत्र-तोमरस्य(२४) ॥

(२३)	प्र० १५० जइतचंदाहे	१०० मध्ये	रूपा तो० ०	मा० ४
	प्र० २०० रूपचंदाहे	१०० मध्ये	,, ०	३
	प्र० ३०० त्रिलोकचंदाहे	१०० मध्ये	,, ०	०
	प्र० ४०० सांतिउरीसाहे	॥ मध्ये	,, ०	०

	प्रति	नामानि मुद्रानां	सत १ मध्ये	रूप्य	तोला	मासा
(२४)	१९	अणगपलाहे	सत १ ,,	,,	५	४
	१९	मदनपलाहे	सत १ ,,	,,	५	४
	१९	पिथउपलाहे	सत १ ,,	,,	५	४
	१९	चाहड़पलाहे	सत १ ,,	,,	५	४

१०६. अकुड़ा मुद्रा में प्रतिशत दो तोला छः मासा चांदी एवं यह टंके की चालीस के भाव है। जइत मुद्रा में प्रतिशत आठ मासा नौ जव चांदी है और यह एक टंके में डेढ सौ के भाव है।

१०७. वीर नामको मुद्रा में प्रतिशत सातमासा तेरह जो चांदी एवं यह प्रति टंका एक सौ साठ आती है। लक्ष्मणी मुद्रा में प्रतिशत छः मासा चार जो चांदी है और एक सौ अस्सी के भाव है।

१०८. राम नामक मुद्रा में प्रतिशत चार मासा दो जो चांदी और दो सौ के भाव है। वव्वावरा[1] नामक सौ मुद्रा में, मसीणा नामक सौ मुद्रा में तथा खसर नामक सौ मुद्रा में पांच मासा आठ जो चांदी तीनों में बराबर है तथा प्रति टंका एक सौ नब्बे के भाव है।

चन्देरिकापुर सम्बन्धी मुद्रा समाप्त हुई।

१०९. जालंधरी वडोहिय मुद्राएं 'जइतचंदाहे' और 'रूपचंदाहे' हैं। जइतचंदाहे मुद्रा में प्रतिशत चार मासा चांदी है और एक सौ पचास के भाव है। रूपचंदाहे मुद्रा में प्रतिशत तीन मासा चांदी है और टंके की दो सौ के भाव है।

---

१ वव्वावरा, मसीणा और खसर मुद्राओं की प्रतिशत चांदी का प्रमाण मूलगाथा में न होकर कोष्टक में है।

Aho ! Shrutgyanam

सूजा सहावदीणी तहेव महमूद साहि चउकडिया ।
टंक चउद्दस रुप्पउ सय मज्झे मुल्ल इगवीसं ॥११२॥
कडगा सरवा मखिया सवा छ तोला य रुप्पु सोल करे ।
कुंडलिया पण तोला छ मास अट्ठार इगि टंके ॥११३॥
छुरिया जगडपलाहा चउतोल दु मास रुप्पु पणवीसं ।
दुकडीट्ठंगा अहिया इगि मासइ रुप्पि तेवीसं ॥११४॥
कुव्वाइची जजरी तह य फरीदीय परसिया मज्झे ।
दस मासा तिय तोला मुल्ले टंक्किक्किक छव्वीसा ॥११५॥
चउक कुवाचीय वफा सवा ति तोला य मुल्लि इगतीसा ।
सतिहाय तिन्नि तोला खकारिया तीस करि जाण ॥११६॥

११०. सीसड़िया मुद्रा तिलोकचंदाहे का भाव टंके की तीन सौ का है तथा सांतिउरी साहे मुद्रा का भाव चार सौ का मूल्य एक टंका है ।

जालंधरी मुद्रा समाप्त हुई ।

अब दिल्ली की मुद्राएं इस प्रकार हैं :—

१११. अणगपलाहे, मदनपलाहे[१], पिथउपलाहे और चाहड़पलाहे नामक चार मुद्राएं हैं। इन चारों प्रकार की मुद्राओं में प्रतिशत सोलह टांक अर्थात् पांच तोला चार मासा चाँदी है एवं उनका मूल्य प्रति टंके पचीस के भाव है।

ये मुद्राएं तोमर राजपूतों की हुई ।

११२. सूजा, सहाबुद्दीनी, महमूदसाही और चउकड़ीया मुद्रा में प्रतिशत चौदह टांक अर्थात् चार तोला आठमासा चाँदी है और उनका मूल्य प्रति एक टंके की इक्कीस के भाव है।

११३. कटका, सरवा, मखिया मुद्रा में छः तोला तीन मासा चाँदी है और सोलह के भाव है। एवं कुंडलिया मुद्रा में पाँच तोला छः मासा चाँदी है और टंके की अठारह के भाव है।

११४. छुरिया, जगडपलाहा मुद्रा में चार तोला दो मासा प्रतिशत चाँदी है और वह टंके की पचीस के भाव है। दुकड़िया ठेंगा में एक मासा अधिक अर्थात् चार तोला तीन मासा चाँदी है एवं तेईस मुद्रा प्रति टंका का भाव है।

११५. कुचाईची, जजीरी, फरीदी और परसिया मुद्रा में प्रतिशत तीन तोला दस मासा चाँदी है एवं टंका की छब्बीस के भाव है।

११६. चउक, कुवाचिय, वफा मुद्रा में सवा तीन तोला चाँदी है एवं वह इकत्तीस के भाव है। खकारिया में तीन तोला चार मासा प्रतिशत चाँदी है और वह प्रति रुपये की तीस के भाव है।

---

१. दिल्लीश्वर मदनपाल तोमर को सं० १२२३ में मणिधारी श्रीजिनचंद्रसूरिजी ने प्रतिबोध दिया था। विशेष जानने के लिए "युगप्रधानाचार्य गुर्वावली" और "मणिधारी श्रीजिनचंद्रसूरि" देखना चाहिए।

Aho ! Shrutgyanam

उणतीस निबदेवी मुल्ले तोला ति सड्ढ चउमासा।
धमडाहू जकारीया अहुट्ठ तोलाऽडवीस करे।।११७।।
पढमा अलावदीणी सयगा समसीय चारि टंक सवा।
इगसट्ठि इक्कि टंकइ सत्तरि चउ टंक मोमिणिया।।११८।।
दुक सेला पंच रवा तोला तिय दिवड्ढ मासओ रुप्पो।
बत्तीस करिवि मुल्ले टंकइ इक्के वियाणिज्जा।।११९।।
तितिमीसि कुव्वखाणी खलीफती अधचंदा सिकंदरीया।
नव टंक रुप्पु मुल्ले चउतीस करेवि इय समसी १२०।।
समसद्दीण सुयाणं रुकुणी पेरोजसाहि पणतीसं।
तह बारसुत्तरी पुण इग मासा हीण तिय तोला।।१२१
समसदि सुया सदीया तस्स रदी दुन्नि ढिल्लीय बुदउवा।
सढ सोल पउण तेरह टंकक उणवीस इगतोसा।।१२२।।
नवगा पणगा मउजी* मासा नव सड्ढ तोलओ इक्को।
पणपन्न सोलहुतरी दुइ तोला मुल्लि पंचासं।।१२३।।

११७. नीव देवी मुद्रा में तीन तोला साढे चार मासा प्रतिशत चाँदी है एवं वह उनतीस के भाव है तथा धमडाहा जकारिया मुद्रा में तीन तोला छ मासा चाँदी व टंके की अठाईस के भाव है।

११८. प्रथम अलाउदीनी सतकासमसो मुद्रा में सवा चार टांक अर्थात् एक तोला पांच मासा प्रतिशत रौप्य एवं एक टंके-रुपये की इकसठ के भाव एवं मोमिनीअलाई में चार टांक अर्थात् एक तोला चार मासा चाँदी व टंके की सत्तर के भाव है।

११९. दुकसेला, पंचरवा (सेला समसी) मुद्रा में प्रतिशत तीन तोला डेढ मासा चाँदी है वह एक रुपये को बत्तीस के भाव जानना।

१२०. तितिमीसी, कुव्वखानो, खलीफती, अधचंदा, और सिकन्दरी मुद्राओं में प्रतिशत नौ टांक अर्थात् तीन-तीन तोला रौप्य एवं चौतीस के भाव ये समसी हैं।

१२१. समसुद्दीन के पुत्रों की रुकनी, पेरोजसाही और बारहोत्तरी मुद्रा में प्रतिशत दो तोला ग्यारह मासा चाँदी एवं प्रति टंका पैंतीस के भाव है।

१२२. समसदी की पुत्री रदिया (रजिया बेगम) की रदी मुद्रा दिल्ली और बदायूँ की उभय टकसालों की है। रदी ढिल्लिका में साढे सोलह टांक अर्थात् पांच तोला छः मासा और बुदोवा में पौने तेरह टांक अर्थात् चार तोला तीन मासा प्रतिशत चाँदी है। दिल्ली की मुद्रा टंके की उन्नीस व बदायूँ की प्रति टंका इकतीस के भाव है।

१२३. नवका और पनका नामक मउजी मुद्राओं में प्रतिशत एक तोला साढे नौ

---

* मौजुद्दीन बहरामशाह (सन् १२४०-२)

Aho ! Shrutgyanam

उणवास पनरहुतरो दुइ तोला इक्कु मासओ रुप्पो।
छका दु तोल दु मासा सईताल मउज्जिया एवं ॥१२४॥

पेरोजसाहि नंदण अलावदीणस्स एय मुद्दाइं।
वलवाणीय इकंगी अड्ढा तिय टंक मुल्लि असी ॥१२५॥

वलवाणि वामदेवी तिस्सूलिय चउकडीय सगवन्ना।
मुल्ले दिवड्ढु तोलउ सय मज्झे दव्वु नायव्वो ॥१२६॥

तेरहसई मरुट्टी नवइ करिवि इक्कु तोलओ रुप्पो।
उच्चइ मूलत्थाणी नवमासा रुप्पु तीस सयं ॥१२७॥

मरकुट्टीय सुकारो वारह नव नवइ १२९९ अंकि तस्स महे।
तोलिक्कु अद्ध मासउ सत्तासी मुल्लि जाणेह ॥१२८॥

सीराजी दुइ तोला छम्मासा रुप्पु मुल्लि इगयाला।
चउपन्न मुक्खतलफी मासा दस तोलओ इक्को ॥१२९॥

मासा चाँदी व प्रति टंका पचपन के भाव हैं। सोलहोत्तरी में प्रतिशत दो तोला चाँदी और प्रति टंका पचास[1] के भाव है।

१२४. पनहोत्तरो मुद्रा में दो तोला एक मासा चांदी है एवं उनचास मुद्राओं का मूल्य एक टंका है। छका मुद्रा में दो तोला दो मासा चांदी एवं प्रति टंका सैंतालीस के भाव है, ये मौजी मुद्राएँ हुई।

१२५. पिरोजसाह (रुकनुद्दीन पेरोज) के पुत्र अलाउद्दीन (मसूदी साह) की ये मुद्राएँ हैं—वलवाणी[2] इकंगी में साढे तीन टाँक अर्थात् एक तोला दो मासा प्रतिशत चांदी और यह एक टंके की अस्सी के भाव से है।

१२६. वलवाणी, वामदेव और त्रिशूलिक चौकड़िया मुद्रा में प्रतिशत एक तोला छः मासा चांदी है और इसे सतावन के भाव जानना चाहिए।

१२७. तेरहसई नामक मरोटी मुद्रा में प्रतिशत एक तोला चांदी है एवं प्रति टंका नब्वे के भाव है। उच्चई और मुलतानी मुद्रा में प्रतिशत नौ मासा चांदी है और उनका मूल्य रुपये—टंके की एकसो तीस का है।

१२८. मरोटी (इगानीमुद्रा), सुकारी मुद्रा में १२९९ अंक लिखा हुआ है और एक तोला आधा मासा प्रतिशत चांदी एवं सतासी मुद्रा प्रति एक टंके का भाव जानना।

१२९. सिराजी मुद्रा में प्रतिशत दो तोला छः मासा चांदी है और यह इकतालीस के भाव है। मुखतलफी मुद्रा में एक तोला दस मासा प्रतिशत चांदी और इसका चौवन प्रति टंका भाव है।

---

१. कोष्टक में पचपन छपा है। पर मेरी कापी में ५१ है मूल गाथानुसार पचास का भाव ठीक है।

२. 'वलवाणी' शब्द 'बलबन' से सम्बन्धित प्रतीत होता है।

Aho ! Shrutgyanam

काल्हणी तह नसीरी[1] दक्कारी सत्त छ पण ।७।६।५ टंक कणो ।
सगयालीस पचासं पणपन्ना कमिण टंकिक्के ।।१३०।।

सत्तावीस गयासी[2] दु ति हिय सयमज्झि १०२।१०३ टंक दस रुप्पं ।
मउजी[3] सड़ पण तोला समसी[4] हुय रुप्प टंका य।।१३१।।

जल्लाली[5] तह रुकुणी[6] सड्ढा पण टंक रुप्पु सय मज्झे ।
मुल्लं सवाउ दम्मं लहंति वट्टंति विवहारे ।।१३२।।

अन्नंन देससंभव अमुणिय नामाइं जं जि मुद्दाइं ।
ते पनरह गुण सीसइ सोहिवि कणु मुल्लु नज्जेइ(२५) ।।१३३।।

(२५) प्रति	नामानि मुद्रानां	सत १ मध्ये	रूप्य	तोला	मासा
२१	सूजा नाम मुद्रा	सत १ ,,	,,	४	८
२१	सहावदीनी मुद्रा	सत १ ,,	,,	४	८
२१	महमूदसाही मुद्रा	सत १ ,,	,,	४	८
२१	चउकडीया मुद्रा	सत १ ,,	,,	४	८
१६	कटका नाम मुद्रा	सत १ ,,	,,	६	३

१३०. काल्हणी मुद्रा में सात टांक अर्थात् दो तोला चार मासा चाँदी और एक टंके को सेंतालीस के भाव है। दिल्ली-टंकसाल की नसीरी (नासिरुद्दीन महम्मद सन् १२४६-६६) मुद्रा में छः टांक अर्थात् दो तोला चाँदी है और पचास प्रति एक टंका मूल्य है। दक्कारी—दकरी नामक मुद्रा में पाँच टांक अर्थात् एक तोला आठ मासा चाँदी एवं प्रति टंका पचपन के भाव हैं।

१३१. गयासी-दुगानी मुद्रा एक सौ दो-तीन में दस टांक अर्थात् तीन तोला चार मासा चाँदी और सत्ताईस मुद्रा प्रति टंका के भाव है। मउजी तिगानी—तिगानी मुद्रा में प्रतिशत पाँच तोला और मूल्य, समसी का भी, बीस टंका है।

१३२. जलाली और रुकुनी नामक (वर्त्तमान) मुद्राओं में प्रतिशत साढ़े पाँच टांक अर्थात् एक तोला दस मासा चाँदी है और दोनों व्यवहार में प्रचलित हैं। मूल्य सवा दम्म प्राप्त होता है। (कोष्टक में अड़तालीस का भाव लिखा है।)

१३३. अन्यान्य देशों में बनी हुई अज्ञात नाम वाली जो मुद्राएं हों, उन्हें पन्द्रह गुने सीसे के साथ शोध करके चाँदी का मूल्य जानना चाहिए।

---

१. नासिरुद्दीन महम्मद (सन् १२४६-६६) की मुद्रा अदल नासिरी कहलाती थी।
२. गयासुद्दीन बलवन (सन् १२६६-८७)
३. मौजुद्दीन (सन् १२८७-९०)
४. शमसुद्दीन (सन् १२९०), इनकी मुद्रा अल्प राज्यकाल में बनी होगी जिनका मूल्य 'मउजी' के तुल्य था।
५. जलालुद्दीन खिलजी (सन् १२९०-९६)
६. रुकुनुद्दीन इब्राहिम (जलालुद्दीन का पुत्र सन् १२९६) १ रुकुनी = १$\frac{1}{4}$, ४८ रुकुनी = ६० दाम = १ टंका

Aho ! Shrutgyanam

प्रति	नामानि मुद्रानां	सत १	मध्ये	रूप्य	तोला	मासा
१६	सरवा नाम मुद्रा	सत १	,,	,,	६	३
१६	मखिया मुंद	,,	,,	,,	६	३
१८	कुंडलिया मुंद	,,	,,	,,	५	६
२५	छुरिया मुंद	,,	,,	,,	४	२
२५	जगटपलाहा नाम	,,	,,	,,	४	२
२३	दुकडीया ठेगा	,,	,,	,,	४	३
२६	कुवाइची जजीरी मुद्रा	,,	,,	,,	३	१०
२६	फरीदी नाम मुद्रा	,,	,,	,,	३	१०
२६	परसिगा मुद्रा	,,	,,	,,	३	१०
३१	चउक नाम मुद्रा	,,	,,	,,	३	३
३१	वफा नाम मुद्रादर्वु	,,	,,	,,	३	३
३०	खकारिया नाम मुद्रा	,,	,,	,	३	४
२९	नींवदेवी नाम मुद्रा	,,	,,	,:	३	४॥
२८	घमडाहा नाम मुद्रा	,,	,,	,,	३	६
२८	जकारीया नाम मुद्रा	,,	,,	,,	३	६
६१	अलावदीनो मुद्रा	,,	,,	,,	१	५
६१	सतका समसी मुद्रा	,,	,,	,,	१	५
७०	मोमिनी अलाई मुद्रा	,,	,,	,,	१	४
३२	सेला समसी ,,	,,	,,	,,	३	१॥
३४	तितिमीसी नाम मुद्रा	,,	,,	,,	३	०
३४	कुम्वखानी ,, ,,	,,	,,	,,	३	०
३४	खलीफती ,, ,,	,,	,,	,,	३	०
३४	अधचंदा ,, ,,	,,	,,	,,	३	०
३४	सिकंदरी ,, ,,	,,	,,	,,	३	०
३४	रुकुनी ,, ,,	,,	,	,,	२	११
३५	पेरोजसाही ,, ,,	,,	,,	,,	२	११
३५	वारहोत्तरी ,, ,,	,,	,,	,,	२	११
१९	रदी ढिल्लिका टंकसाल संमध्ये			,,	५	६
३१	रदी वुदोवां टंकसाल वुदाऊ		,,	,,	४	३
५५	वार० नवका मउजी		,,	,,	१	९॥
५५	पनका मउजी नाम मुद्रा		,,	,,	१	९॥
५५	सोलहोत्तरी मुद्रा		,,	,,	२	०
४९	पनरहोत्तरी	,,	,,	,,	१	२
४७	छका नाम मुद्रा	,,	,,	,,	२	२
८०	वलवाणी इकांगी सत १		,,	,,	१	२
५७	वलवाणी वामदेवी	,,	,,	,,	१	६

Aho ! Shrutgyanam

प्रति	नामानि मुद्रानां	सत १ मध्ये		रूप्य	तोला	मासा
५७	चौकडीहा	,,	,,	,,	१	६
९०	तेरहसई मरोटी	,,	,,	,,	१	०
१३०	उच्चई मुलथाणी	,,	,,	,,	०	९
८७	मरोटी इगानी मुद्रा सत १ मध्ये			,,	१	०॥
८७	सुकारी नाम मुद्रा	सत १	,,	,,	१	०॥
४१	सीराजी नाम मुद्रा	सत १	,,	,,	२	६
५४	मुल्तलफी मुद्रा	,,	,,	,,	१	१०
४७	काल्हणी नाम मुद्रा	,,	,,	,,	२	४
५०	नसीरी ढिल्यां टंकसालहुता		,,	,,	२	०
५९	दकारी नाम मुद्रा सत १		,,	,,	१	८॥
२७	गयासी दुगाणी नाम मुद्रा		,,	,,	३	४
२०	मउजी नाम मुद्रा तिगानी सत १			,,	५	०
४८	जलाली नाम मुद्रा प्रवर्त्तमाना		,,	,,	१	१०
४८	रुकुनी नाम मुद्रा प्रवर्त्तमाना		,,	,,	१	१०

इति श्री ढिल्यां राज्ये वर्त्तमान मुद्राः

संपइ पवट्टमाणा मुद्दा अल्लावदीण रायस्स ।
दुविह दुगाणी दव्वो पउणा दस अट्ठ टंक सए ॥१३४॥

छग्गाणी पुण दुविहा सड्ढा पणवीस पउण पणवीसा ।
टंक सय मज्झि रुप्पउ सड्ढा चउ दु जव नव विसुवा ॥१३५॥

इग्गाणी सय मज्झे तंबउ पण नवइ टंक पण दव्वो ।
रायहरे विवहारें गणिज्ज इग्गाणिया सयलं ॥१३६॥

१३४. वर्त्तमान काल में राजा अलाउद्दीन की मुद्राएं प्रचलित हैं। दुगानी दो प्रकार की हैं, एक में पौने दस टांक अर्थात् तीन तोला तीन मासा चांदी व दूसरी में आठ टांक अर्थात् दो तोला आठ मासा प्रतिशत चांदी है। कोष्ठक के अनुसार इनका मूल्य एक अलाई रौप्य टंके की तीस के भाव है।

१३५. छगानी मुद्रा भी दो प्रकार की हैं। एक मे साढेपचीस टांक साढ़े चार जो अर्थात् आठ तोला छः मासा साढ़े चार जो एवं दूसरी में पौने पच्चीस टांक दो जो नो विसवा अर्थात् आठ तोला तीन मासा नौ विसवा प्रतिशत चाँदी है। कोष्ठकानुसार दोनों का मूल्य अलाई रुपये से दस के भाव हैं।

१३६. एक सौ इगानी मुद्रा में पंचाणबे टांक तांबा व पांच टांक अर्थात् एक तोला आठ मासा चांदी है। राजा के कोशगृह में और सार्वजनिक व्यवहार में जितनी गणना या हिसाब हैं वह सब इगानी पर आश्रित है। इगानी मुद्रा एक टंक या चार मास वजन की होती थी।

Aho ! Shrutgyanam

इग पण दह पन्नासं सय तोला तुल्लि हेम टंकाइं ।
चउ मासा दीनारो रुप्पय टंको य तोलीणो ॥१३७॥

चउ मास जाव घडियं सहावदीणस्स तुच्छ मुद्दाइं ।
दम्म छगाणी टंका रुप्प सुवन्नस्स तोलीणा ॥१३८॥

॥ इति अश्वपति महानरेन्द्र पातिसाहि अलावदी मुद्राः(२६-२७) ॥

इत्तो भणामि संपइ कुतुबुद्दी रायबंदिछोडस्स ।
चउरंस वट्ट मुद्दा नाणविह तुल्ल मुल्लो य ॥१३९॥

(२६) ० रुप्य टंका १ अलाई प्रति गण्यते ॥

१०	छगानी	सतमध्ये	तो० ८	मा० ६	ज० ४॥
१०	छगानी	सतमध्ये	तो० ८	मा० ३	ज० २।४
३०	दुगानी	सतमध्ये	तो० ३	मा० ३	ज०
३०	दुगानी	सतमध्ये	तो० २	मा० ८	ज०
६०	इगानी	सतमध्ये	तो० १	मा० ८	ज०

० शेष तांबा सत १ टंक पूरणे सर्व मुद्र

(२७) हेम टंका नाना तौल्ये

० इकतोलिया १
० पंचतोलिया १
० दसतोलिया १
० पंचासतोलिया १
० सयतोलिया टंका १
हेम दीनारु मासा ४ रुप्य टंका सर्वेपि इकतोलिया

१३७. हेम टंका इगतोलिया[1], पंचतोलिया, दसतोलिया, पचासतोलिया और सौतोलिया होता है। दीनार[2] चार मासा सोने का और चांदी का टंका (रुपया) एक तोले का होता है।

१३८. सहाबुद्दीन की लघु मुद्राएं चार मासे तक की बनी हुई हैं। द्रम्म, छगानी और टंका सभी चांदी सोने की मुद्रा एक-एक तोला की है।

अश्वपति महानरेन्द्र अलाउद्दीन बादशाह की मुद्राएं शेष हुईं।

१३९. अब मैं वर्त्तमान 'राजबंदिछोड़' विरुद वाले कुतुबुद्दीन की नाना प्रकार की चतुरस्र और गोल मुद्राओं का तौल और मोल कहता हूँ।

---

१. इगतोलिया हेम टंका अलाई मुहर १६९-१७० ग्राम की होती है।
२. दीनार चार मासा की, कुतुबुद्दीन मुबारक की (१३१६-१३२०), जो छप्पन ग्रामसोने की होती है।

Aho ! Shrutgyanam

बत्तीसं कणयमया रुप्पमया वीस दम्म सत्तविहा ।
चउविह तंबय साहा मुद्दा सव्वेवि तेसट्ठी ॥१४०॥दारं॥

इग पण दह तोलाइं दस हिय जा सउ दिवड्ढ सउ दु सयं ।
इय वट्ट हेम टंका चउरंस पुणोत्ति एमेव ॥१४१॥

तेरह मासा सतिहा सुवन्न टंको य सोनिया तिविहा ।
इग मासिया दुमासिय चउगुंजा एय बत्तीसं ॥१४२॥

॥ इति स्वर्णमुद्राः(२८) ॥

(२८) कनक मुद्रा ३२ यथा—

२९ टंका नानाविधा तोलो यथा—

१४ वृत्ताकार नाना तो० तो

१ ५ १० २० ३०
४० ५० ६० ७० ८०
९० १०० १५० २००

१४ चतुः कोण तोल्ये वृत्ताकार वत् निश्चित ।

१ मासा १३ ऽ संवृत्ताकार

३ अपर नाना वृत्त लघु मुद्रा :—

१ मासा १ । १ मा० २ । १ गुं० ४

३२

१४०. सोने की बत्तीस, चाँदी की बीस, सात प्रकार के द्रम्म, चार प्रकार की तांबे की साहा मुद्रा—सब मिलाकर तेसठ हुई ।

१४१. एक, पांच, दस और आगे दस-दस बढ़ाते हुए यावत् सौ, डेढ सौ, दो सौ तोला सोने की गोल मुद्रा और इसी प्रकार चौरस मुद्राएं भी होती हैं ।

१४२. तेरह मासे का अर्थात् एक तोला एक सत्रिधा मासा का स्वर्ण टंका गोल होता है और छोटी सोनैया मुद्रा एक मासा, दो मासा और चार गुंजा—तीन प्रकार की होती है । इस प्रकार बत्तीस प्रकार की स्वर्ण मुद्राएं हुईं ।

स्वर्ण मुद्रा समाप्त हुई ।

अलाउद्दीन के उत्तराधिकारी—१ खिज्रखाँ, बड़ा पुत्र २ मुबारकखाँ ३ शादीखाँ ४ शाहाबुद्दीन उमर मलिक काफूर, सेनापति;

अलाउद्दीन की मृत्यु के ३७ दिन बाद मलिक काफूर मार डाला गया । शहाबुद्दीन उमर तीन महीने सात दिन बादशाह रहा । मलिक काफूर की मृत्यु के दो महीने बाद शहाबुद्दीन को भी मुबारक ने अन्धा बना दिया । शादीखाँ और खिज्रखाँ को भी अन्धे बना दिए ।

सं० १३७५ वै० कृ० ८ को महत्तियाण ठ० अचलसिंह ने सुलतान कुतुबुद्दीन के फरमानपूर्वक कलिकाल केवली श्री जिनचंद्रसूरि जी के सानिध्य में हस्तिनापुर-मथुरादि यात्रार्थ

Aho ! Shrutgyanam

रुप्पिग तोली वट्टा चउदस चउरंस हेम सम तुल्ला।
पंच विहा रुप्पइया इग दु ति चउमासि अद्ध तुला ।।१४३।।
।। इति रुप्यमुद्राः(२९) ।।

दुग्गाणी य छग्गाणी तुल्ले मुल्ले य रुप्प तंबे य।
उल्लाई सम जाणह अन्ने अन्ने वि हि भणिमो ।।१४४।।

चउगाणी वट्ट सए सोल सवा टंक नव जवा रुप्पं।
चउमासा तुल्लेणं न संसयं इत्थ नायव्वं ।।१४५।।

(२९) रूप्यमुद्रा २० विवरणम्।
१५ टंका मुद्रा नानाविध तो०
१ संवृत्ताकार तो० १
१४ चतुःकोणा तोलो यथा—१ ५ १० २० ३० ४० ५० ६० ७० ८० ९० १०० १५० २०० एवं।
५ रुपीया मुद्रा नाना तोलो।
१ मासा १ । १ मासा २ । १ मा० ३
१ मासा ४ । १ मासा ६ । संवृत्ता०
२०

संघ निकाला था। हस्तिनापुर तीर्थ के भंडार में डेढ लाख जयथल मुद्रा की आय हुई। योगिनीपुर के निकट तिलपथ में द्रमकपुरीयाचार्य के चुगली खाने से सुलतान ने संघ को रोक लिया। आचार्य श्री सुलतान से मिले तो वह बड़ा प्रभावित हुआ और उन्हें निर्दोष पाकर दुष्टस्वभावी द्रमकपुरीयाचार्य को जेल में डाल दिया करुणासमुद्र पूज्यजी ने उसे मुक्त करा कर अपने स्थान भेजा। बादशाह ने प्रभावित होकर खंडासराय में चातुर्मास कराया तथा बहुतसी धर्म प्रभावना हुई। बादशाह के कथन से श्रावण महीने में फिर संघ निकाला गया। वापस आकर शेष चातुर्मास खण्डासराय में बिताया गया। ग्रंथकार ठक्कुर फेरू भी संघ यात्रा व द्रमकपुरीयाचार्य को छुड़ाने आदि में प्रमुख व्यक्ति थे। (देखें युगप्रधानाचार्य गुर्वावली। गुर्वावली में कुतुबुद्दीन को अलाउद्दीन का पुत्र लिखा है।)

१४३. एक तोले का रुपया गोल होता है और चोकोर रुपये चौदह प्रकार के उपरिवर्णित सोने की मुद्रा के जैसे वजन वाले होते हैं। (छोटे) रुपये पाँच प्रकार के होते हैं जो एक मासा दो मासा, तीन मासा, चार मासा और छ मासा के गोल होते हैं।

रौप्यमुद्रा समाप्त हुई।

१४४. दुगानी और छगानी मुद्रा में चाँदी व ताँबे की तोल और मोल अल्लाई मुद्रा के बराबर जानो। अन्यान्य का भी कहता हूँ।

१४५. एक सौ गोल चोगानी मुद्रा में सवा सोलह टांक अर्थात् पाँच तोला दो मासा और नौ जव ऊपर चाँदी होती है। वह तोल में चार मासे को एक होती है, इसमें संशय नहीं जानना।

Aho ! Shrutgyanam

चउवीस वारसट्ठ य अडयालीसाण मुद्द चउरंसा।
तुल्ले य रुप्प तंबय संखा कमि अट्ठमाणीओ ।।१४६।।

तित्तीस टंक नव जव चउ विसुवा रुप्पु सेस तंबो य।
सय अट्ठगाणिएहिं इगेगि तुल्लो य चउमासा ।।१४७।।

।। इति द्रंममुद्राः(१०) ।।

(३०) द्रम्मा मुद्रा सप्त ७ नाना विधि तोलो मूलो।
वृत्ताकार मुद्रा ३ तोल्ये टं १

१ दुगाणी १०० मध्ये धातु २
टं० ८ नवाती रूप्य। टं० ९२ ताम्र

१ चउगानी १०० मध्ये धातु २
टं० १६ मा० १ जव ९ रूप्य
टं० ८३ मा० २ जव ७ तांबा

१ छगानी १०० मध्ये धातु २
टं० २४ मा० ३ जव १।। रूप्य
टं० ७५ मा० जव १४।। ताम्र
चतुरस्र मुद्राः ४

१ अठगानी १०० मध्ये
टं० ३३ मा० ज० ९ ऽ४ रू०
टं० ६६ मा० ३ ज० ६।।। १ तां०

१ बारहगानी १०० टं० १५०
मा० १ ज० १५।।।. १। २ऽ४ रू०
मा० ४ ज० ऽ३।।. २।।।. १ तां०

१ चउबीसगानी तो टं० ३ (३००?)
मा० ३ ज० १५।।. २।।. ४।. ३ रू०
मा० ८ ज० ।२ ऽ०। ऽ०।। तां०

१ अडतालीसगानी टं० ६ (६००?)
चउवीसगानीतो द्विगुणं द्रव्यं।

१४६. अठगानी, बारहगानी, चौबीसगानी और अड़तालीसगानी चतुरस्र मुद्राओं की चाँदी और ताँबे की तौल की संख्या अठगानी क्रम से जानना चाहिए।

१४७. एक सौ अठगानी मुद्रा में तैंतीस टांक (ग्यारह तोला) नौ जव चार विसवा चाँदी और अवशिष्ट ताँबा होता है। एक-एक की तौल चार मासा होती है।

द्रम्म मुद्रा समाप्त हुई।

४

Aho ! Shrutgyanam

विसुवा सवाय विसुवा अधवा पइका य तंब चउरंसा ।
तुल्लेण कमि चडंता मासाओ जाम पण मासा ।।१४८।।

।। इति साहे मुद्राः ।।

एवं दव्वपरिक्खं दिसिमित्तं चंदतणय फेरेण ।
भणिय सुय-बंधवत्थे तेरह पणहत्तरे वरिसे ।।१४९।।

इति श्री चन्द्रांगज ठक्कुर फेरू विरचिता
द्रव्यपरीक्षा समाप्ता ।।

१४८ ताम्र की चतुरस्र विसवा, सवा विसवा, आधी और चौथाई चार प्रकार की "साहामुद्रा" तौल में क्रमशः बढ़ती हुई एक मासा, सवा मासा, डेढ मासा और यावत् पाँच मासा की होती है ।

१४९ संवत् तेरह सौ पचहत्तर वर्ष में चन्द्र के पुत्र फेरू ने अपने पुत्र और भ्राता के लिए दिशासूचक मात्र यह द्रव्यपरीक्षा कही है ।

श्रीचन्द्र के पुत्र ठक्कुर फेरू रचित द्रव्यपरीक्षा समाप्त हुई ।

Aho ! Shrutgyanam

ठक्कुर फेरूविरचिता

धातूत्पत्तिः

अथ धातूत्पत्तिमाह

रुप्पं च मट्टियाओ नइ-पव्वयरेणयाउ कणग्रो य ।
धाउव्वाओ य पुणो हवन्ति दुन्नि वि महाधाऊ ।।१।।

पट्टं च कीडयाओ मिय नाहीओ हवेइ कत्थूरी ।
गोरोमयाउ दुव्वा कमलं पंकाउ जाणेह ।।२।।

मउरं च गोमयाओ गोरोयण होन्ति सुरहिपित्ताओ ।
चमरं गोपुच्छाओ ग्रहिमत्थाओ मणी जाण ।।३।।

उन्ना य बुक्कडाग्रो दन्त गइंदाउ पिच्छ रोमा (मोरा?) ओ ।
चम्मं पसुवग्गाओ हुग्रासणं दारुखण्डाओ ।।४।।

सेलाउ सिलाइच्चं मलप्पवेसाउ हुइ जवाई वरं ।
इय सगुणेहि पवित्ता उप्पत्ती जइय नीयाग्रो ।।५।।

इत्युत्पत्तिः ।

अब धातुओं की उत्पत्ति कहते हैं :—

१. मिट्टी में चाँदी, पर्वत और नदी की रेणुका में स्वर्ण होता है । फिर धातुवाद (धातुविद्या) से दोनों महाधातु हो जाते हैं (अर्थात् अग्नि में परिशुद्धि से मूल्यवान धातु बन जाते हैं) ।

२. कीड़ों से रेशमी वस्त्र, मृगनाभि से कस्तूरी होती है । गोरोम से दूर्वा और कीचड़ से कमल जानना चाहिए ।

३. गोबर में भँवरा, गाय के यकृत स्थित शुष्क पित्त (Gall Bladder of the Cow) से गोरोचन, गोपुच्छ से चामर और सांप के मस्तक पर मणि होता है ।

४. भेड़ों से ऊन, गजेन्द्रों से हाथीदाँत, मयूर से पींछी, पशु वर्ग से चर्म और काष्ठ खण्ड से अग्नि होता है ।

५. पाषाणशिला में शिलाजीत होता है, खेतों में मल का खाद होने से उत्तम जौ आदि होते हैं । नीचे स्थानों में उत्पत्ति होने पर भी ये अपने गुणों में पवित्र हैं ।

अब कृत्रिम वस्तुओं से बनाने की विधि कहते हैं :—

Aho ! Shrutgyanam

अथ करणीयमाह—

पित्तलि जहा—

वे मण अ(?)धावटियं कुट्टिवि रंधिज्ज गुडमणेगेण ।
जं जायइ निच्चीढं तयद्ध तंवय सहा कढियं ॥६॥

सा बीस विसुव पित्तल दुभाय तंबेण पनर विसुवा य ।
तुल्लेण तंबयाओ सवाइया ढक्क मूसीहिं ॥७॥

तम्बय जहा—

बब्वेरय खाणीओ आणवि कुट्टिज्ज धाहु मट्टी य ।
गोमय सहियं पिंडिय करेवि सुक्कवि य पइयव्वं ॥८॥

पच्छा खुडुइ खिवियं धमिज्ज नीसरई सव्व मलकडं ।
जं हिट्ठे रहइ दलं तं पुण कुट्टे वि धमियव्वं ॥९॥

तस्साउ वहइ पयरं तं तंबमिट्ठयं वियाणेह ।
वुड्डाणए पुणेवं गुट्ठं गुलियं तओ हवइ ॥१०॥

अथ सीसयं जहा—

ना(न)गखाणीओ पाहण कड्ढिवि कुट्टे वि पोसि धोइज्जा ।
जं होइ तं मलदलं दुभाय तइयंस लोहजुयं ॥११॥

सय सय पलस्स मूसी ते चाडिवि तीस अंगए इक्के ।
आवट्टिय तुल्लेणं चउत्थभागूण हुइ सीसं ॥१२॥

६. पीतल—दो मन धावड़िया गूंद कूट कर एक मन गुड़ के साथ रांधना । जब गाढ़ा (निच्चीढ़ = निपट चीढ़ा, रेवड़ी की चासनी या रबड़ की भाँति) हो जाय उससे आधे ताँबे के साथ गलाना । (विधि अन्वेषणीय है ।)

७. वह बीस विसवा पीतल होगा, यदि तांबा दो भाग दोगे तो पन्द्रह विसवा पीतल होगा । बराबर तांबा देने से सवाया । मूस या घरिया को ढंक कर गलाना चाहिये ।

८. **तांबा**—बबेरा की खान में से धातु मिट्टी को लाकर कूटना फिर गोबर के साथ पिण्ड करके सुखा कर जलाना चाहिये ।

९. पीछे कुडी (भट्ठी) में डालकर फूंकने से सारा मैल साफ हो जायगा । जो दल (मोटी मिट्टी या चूरा) नीचे रह जाय उसे पुनः कूट कर धमन करना चाहिए ।

१०. उसका पत्तर (पयर = प्रतर) बना लिया जाय तो उसे अच्छा (मृष्ट) तांबा समझो । पीट कर बढ़ाये हुए उन पत्तरों को सोधने से (पुणेवं) उसको गला कर गुट्टिका या गुल्ली बना ली जाती है ।

११-१२. **शीशा**—नाग की खान के पत्थर को निकाल कर कूट पीस कर धोना । जो बना वह उसका मलयुक्त चूरा हुआ । उसको दो भाग तृतीयांश लोहे के साथ सौ-सौ पल की मूस में चढ़ाकर बराबर औटाने से चतुर्थ भाग शीशा होता है

Aho ! Shrutgyanam

लोहं सारं च पुणो उप्पत्ती धाहु पाहणाओ य ।
पित्तल-कंसाईणं विणट्ठए होइ भिंगारी ॥१३॥

अथ रंगयं जहा—

रंगस्स धाहु कुट्टिवि करिज्ज कोमंस चुण्ण सह पिंडं ।
धमिय निसरई जं तं पुण गालिय कंबिया होन्ति ॥१४॥

अथ कंसयं जहा—

कंबिय सेरक्कारस मणेग तम्बं च पयर गुट्टं वा ॥
आवट्ट घडिय सुद्धं कंसं हुइ वीसयं सूणं ॥१५॥

अथ पारयं जहा—

पारस्स धाहु ठवियं तस्सोवरि गोमयद् कुढि कुज्जा ।
मंदग्गि धमियमाणो उड्डुवि संचरइ तस्स महे ॥१६॥

अहवा

रसकूव भणन्तेगे तरुणत्थी तत्थ करवि सिंगारं ।
तुरियारूढं झक्किवि अपुट्ठपयरेहिं नस्सेइ ॥१७॥

कूवाओ तस्स कए पारं उच्छलवि धावए पच्छा ।
बाहुडइ दहमकाओ पुणोवि निवडेइ तत्थेव ॥१८॥

जं रहइ नियट्ठाणे कत्थेव खड्डु-खड्डीहिं ।
तत्थाउ गहइ सा तिय उप्पत्ती पारयस्स इमं ॥१९॥

१३. लोहसार की उत्पत्ति फिर धातु पाषाण से होती है। पीतल कांसे आदि के विनष्ट होने पर (एक साथ गालने से) भिंगारी (भरथ = भरत = भरण) हो जाती है। (भांगड़ी टूटे-फूटे बर्त्तन को कहते हैं तथा भंगार के भरतिये आदि बरतन तैयार होते हैं)।

१४. रांगा—राँगा धातु को कूटकर कोमंस चूर्ण के साथ पिण्ड करना। फिर गला कर नाली में चुआने से—ढालने से कंबिया (कामी या गुल्ली) बन जाती है।

१५. काँसा—ग्यारह सेर कंबिया या गुल्ली, एक मन ताँबा पत्तर या गुट्ट (थकिया) को औटाने से शुद्ध काँसा बन जाता है।

१६. पारा—पारा को धातु रखकर उसके ऊपर गोबर के कंडों का ढेर करके भट्ठी को ढंक देना। धीमी आँच में धमन करने से पारा उड़कर ऊपर लग जाता है। अथवा—

१७. पारे के कूप के विषय में कहा जाता है कि तरुण स्त्री वहाँ श्रृंगार करके अश्वारूढ होकर झांके और फिर बिना पीठ दिये भाग जाय।

१८. उसके ऐसा करने पर कूप से पारद उछल कर पीछे दौड़ेगा और वेग कर लौटेगा और फिर वहीं पर गिर पड़ेगा।

१९. जो नीचे स्थान या अपने स्थान (नियट्ठाणे) में कहीं खड्डे-खोतरे में रह जाय उसे वह स्त्री ग्रहण करे। यह पारद की उत्पत्ति कही है।

Aho ! Shrutgyanam

अथ हिंगुलयं जथा—

एगमण पारह तहा गन्धय चुन्नं च सेर दस खिविउं ।
दूराओ आसन्नं मंदग्गी कीरए मिस्सं ॥२०॥

कुट्टेवि तहिं खिविज्जइ मणसिल हरियाल सेर पा पायं ।
पूरिवि कच्च करावं दट्टिज्जइ खोरचुन्नेण ॥२१॥

मढि मट्टिय सदलेणं तिन्नि अहोरत्ति वह्नि जालिज्जा ।
जाव सुगंधं ता हुइ सेर छयालीस हिंगुलयं ॥ २॥

अथ सिन्दूरं जहा —

सीसयमणेगमज्झे वंसय रक्खा दहद्ध सेराइं ।
गालिवि मेलिवि कुट्टिवि छाणवि जलि घोलि धरियव्वं ॥२३॥

नित्तारिऊण नीरं जं हिट्ठे तस्स वडिय कय सुक्कं ।
घणि कुट्टि हंखि छाणिय ठवि भट्ठो अग्गि कायव्वं ॥२४॥

जह जह लग्गइ तावं तह तह रंगं चडेइ जा ति दिणं ।
सेरूणं सिन्दूरं तग्गालिय हवइ पुण सीसं ॥२५॥

एवं च भणिय संपइ कुधाउमज्झे सुधाउ भणिमोहं ।
कंबिय रंगे कणयं तोलय सय जव चउत्तीसं ॥२६॥

सयतोलामज्झेणं बारह जव सीसए हवइ रुप्पं ।
पच्छा पुण पुण सोहिय तहावि निकणं न कइयावि ॥२७॥

२०. हिंगुल—एक मन पारद में गन्धक चूर्ण दस सेर डाल कर दूर से निकट धीमी आँच करके मिलाना ।

२१. मणसिल हरताल पाव-पाव सेर कूट कर डाल देना । कांच के कडाव (तिजाब के भांड) में डाल कर खोरिया चूने = खड़ी मिट्टी, की डाट लगा देना ।

२२. मिट्टी के दल से मैंढकर तीन अहोरात्र अग्नि जलाना । जब सुगंध पैदा हो जाय तब छयालीस सेर हिंगुल तैयार हो जाता है ।

२३. सिन्दूर—एक मन शीशा में बाँस की राख पाँच सेर गलाकर, मिलाकर, कूटकर छानकर जल में घोल कर रखना चाहिए ।

२४. पानी को नितार कर जो गाढा-घोल नीचे रहे उसको बड़ी बनाकर सुखाना । फिर खूब कूटकर, छानकर भट्ठी पर रख कर आग जलाना चाहिए ।

२५. ज्यों-ज्यों ताप लगेगा, त्यों-त्यों तीन दिन पर्यन्त रंग चढ़ता ही जायगा । एक सेर से कुछ न्यून सिन्दूर बनने पर जो बचे उसे गलाने से फिर शीशा हो जायगा ।

२६. यह तो कहा, अब कुधातु में सुधातु कितनी ? सो कहता हूँ । राँगे की सौ तोले की कंबिया या गुल्ली में चौतीस जौ सोना है ।

२७. सौ तोला सीसे में बारह जौ रूपा (चाँदी) होता है । फिर बार-बार सोधने से भी निष्कण तो कभी नहीं होता (अर्थात् कुछ सोने चाँदी का अंश रह ही जाता है) ।

Aho ! Shrutgyanam

अथ धातोकरणी विधि :—कप्पूर-अगर-चंदण मृगनामोह्याबि।

दाहिणवत्तं संखं इगमुह रुद्दक्ख सालिगामं च।
देवाहिट्ठिय तिन्नि वि अमुल्ल सपहाय भणियन्ति ॥२८॥

खीरोवहि संभूयं विभूसणं सिरिनिहाण रायाणं।
दाहिणवत्तं संखं बहुमंगलनिलयरिद्धिकरं ॥२९॥

वट्टंति रेहकलियं पंचमुहं सुब्भ सोलसावत्तं।
इय संखं विद्धिकरं संखिणि हुइ दीहहाणिकरा ॥३०॥

सिरिकणय मेहलजुयं वरठाणे ठविय निच्च सुइ काउं।
दुद्धि ण्हविऊण चन्दणि कुसुमागरि मन्ति पूइज्जा ॥३१॥

पूजामन्त्रः—
ॐ ह्रीं श्रीं श्रीधरकरस्थाय
पयोनिधिजाताय लक्ष्मीसहोदराय चिंतितार्थसंप्रदाय।
श्रीदक्षिणावर्त्तसंखाय। ॐ ह्रीं श्रीं जिनपूजायै नमः ॥३२॥
इति पूजा विधिः

दाहिणवत्तोय संखोयं जस्स गेहंमि चिट्ठइ।
मंगलाणि पवट्टंते तस्स लच्छी सयंवरा ॥३३॥

तस्संखि खिविय चंदणि तिलयं जो कुणइ पुहवि सो अजिओ।
तस्स न पहवइ किंची अहि-साइणि-विज्जु-अग्गि-अरी ॥३४॥

धातुकरण विधि :—

२८. दक्षिणावर्त्त शंख, एकमुखा रुद्राक्ष व शालग्राम ये तीनों देवाधिष्ठित होने से अमूल्य सप्रभाव वस्तु कहलाते हैं।

२९. समुद्र में उत्पन्न, राज्यश्रीनिधान, आभूषण रूप दक्षिणावर्त्त शंख बहुत मंगल और वृद्धि करने वाला होता है।

३०. पंचमुखा त्रिरेखाकलित, शुभ्र सोलह आवर्त्तवाला शंख वृद्धि करनेवाला और शंखिनी दूर तक हानिकारक होती है।

३१. कनक मेखला युक्त उत्तम स्थान में रख, प्रतिदिन पवित्र हो, दुग्ध से स्नान करा चन्दन कुसुम अगर से मंत्र पाठयुक्त पूजा करनी चाहिए।

३२. पूजा मंत्र ऊपर लिखा है। यह पूजा विधि समाप्त हुई।

३३. दक्षिणावर्त्त शंख जिसके घर में रहता है उसके यहाँ हमेशा मंगल होते हैं और लक्ष्मी स्वयंवरा होकर जाती है।

३४. उस शंख में डाले हुए चन्दन से जो तिलक करे वह पृथ्वी में अजय होता है। एवं साँप, शाकिनी, बिजली, अग्नि और शत्रु से उसका पराभव नहीं होता।

Aho ! Shrutgyanam

नरनाह गिहे संखं वुड्ढिकरं रज्जि रट्ठि भण्डारे ।
इयराण य रिद्धिकरं अंतिमजाईण हाणिकरं ।।३५।।

दाहिणवत्ते संखे खीरं जो पियइ कय कुलच्छी य ।
सा वंझा वि पसूवइ गुणलक्खणसंजुयं पुत्तं ।।३६।।

इति दक्षिणावर्त्त सङ्खः ।

दीवंतरि सिवभूमी सिवरुक्खं तत्थ होन्ति रुद्दक्खा ।
एगाइ जा [च] उद्दस वयणा सव्वेवि सुपवित्ता ।।३७।।

पर उत्तमेगवयणा सिरिनिलया विग्घनासणा सुहया ।
कणयजुय कण्ठ सवणे भुय सीसे संठिया सहला ।।३८।।

दुमुहा मंगलजणया तिमुहा रिवहरण चउर मज्झत्था ।
पंचमुहा पुन्नयरा सेसा सुपवित्त सामन्ना ।।३९।।

इति रुद्राक्षाः ।

३५. राजा के घर में यदि शंख हो तो राज्य, राष्ट्र, भण्डार आदि वृद्धि करता है एवं अंतिम जाति (शूद्र) को हानिकारक होता है।

३६. दक्षिणावर्त्त शंख में यदि कोई कुलवती स्त्री दूध डाल कर पिये तो बंध्या भी गुण लक्षण संयुक्त पुत्र उत्पन्न करती है।

रुद्राक्ष :—

३७. द्वीपान्तर में शिवभूमि में शिववृक्ष हैं। वहाँ रुद्राक्ष उत्पन्न होते हैं। एक से दश या चौदह मुख वाले सभी सुपवित्र हैं।

३८. परन्तु एकमुखी उत्तम है। वह श्रीनिलय, विघ्नहर और सुभग है। सोने के साथ कण्ठ, कान, भुजा और मस्तक पर पहनने से फल देता है।

३९. दुमुहा मंगलजनक, त्रिमुख शत्रुहरण चतुर्मुख मध्यस्थ, पंचमुखी पुण्यकर और शेष सामान्य सुपवित्र हैं।

शालग्राम[1] :—

---

१. उपनिषदों में जलंधर राक्षस द्वारा वृन्दा का अपहरण और भ० विष्णु द्वारा उसे हनन कर वृन्दा का उद्धार होना बतलाया है। यह एक रूपक है। वस्तुतः जलंधर मेघ है और वृन्दातुलसी है जिसे विद्युत् वृक्ष कहते हैं। बदरिकाश्रमोपरि मेघ के विद्युत् प्रभाव से श्याम हुए पत्थर और उसके चक्राङ्क ही नदी में लुढ़कते गोल होकर शालग्राम का रूप धारण करते हैं। शालग्राम और तुलसी के जल के प्रयोग से मेघ का विद्युत् निष्प्रभ हो जाता है। इसी कारण हिन्दू घरों में वर्षा के प्रारम्भ में गृहाङ्गण में तुलसी लगा कर पूजते हैं और चातुर्मासान्त में विसर्जन होता है। इसका रहस्य है कि तुलसी के बारह-बारह फुट तक बिजली नहीं गिरती।

Aho ! Shrutgyanam

गण्डुयनइसंभूयं सालिग्गामं कुमारकणयजुयं ।
चक्कंकिय सावत्तं वट्टं कसिणं च सुपवित्तं ॥४०॥

लोया तईयभत्ता हरि व्व पूयंति सालिगामस्स ।
सेयत्थि भुत्तिहेऊ पावहरं करिवि झायंति ॥४१॥

इति शालिग्रामम् ।

महभूमि दक्खिणोवहि केलिवणं तत्थ केलिगुंदाओ ।
कहरव्वओ य जायइ कप्पूरं केलि गब्भाओ ॥४२॥

कप्पूर तिन्नि कित्तिम इक्कडि तह भीमसेणु चीणो य ।
कच्चाउ सुकमि मुल्लो वीस दस छ विसु व विसुवंसो ॥४३॥

कायासुगन्धकरणं तहत्थिमज्जाय भेयगं सीयं ।
वाय-सलेसम-पित्तं तावहरं आमकप्पूरं ॥४४॥

इति कर्पूरः ।

अगरं खासदुवारं किण्हागर तिल्लियं च सेवलयं ।
वीसं दस तिय एगं विसोवगा सुकमि अन्तरयं ॥४५॥

४० गंडक नदी में संभूत, चक्राङ्कित, आवर्त्तयुक्त, गोल, कृष्णवर्ण शालग्राम कुमार स्वर्णयुक्त पवित्र हैं ।

४१ भक्त लोग विष्णु की तरह शालग्राम को पूजते हैं । श्रेय, मुक्ति और पापहरण के लिए उसका ध्यान करते हैं ।

कर्पूर :—

४२ दक्षिण समुद्रतट की महाभूमि में केले के वन व केले के गूंदवाले वृक्ष हैं । वहाँ केले के गर्भ में कर्पूर कहरवा (तृणकान्त मणि) की भाँति उत्पन्न होता है । (वे वृक्ष हिमालय की तराई में होते हैं और कहरवा सभी प्रकार रक्त-पित्त रोग के लिए शामक और अमृत तुल्य है ।)

४३. इक्कडि, भीमसेन और चीना तीन प्रकार का कृत्रिम कर्पूर होता है । उनका क्रमशः बीस, दस, और छः विशोपक मूल्य एक विसवा भर तोल के लिए होते हैं ।

४४. शरीर में सुगन्ध करने वाला, अस्थि, मज्जा तक भेदक, शीतल वाय-श्लेष्म-पित्त, ताप और आँव को हरनेवाला कर्पूर होता है ।

अगर :—

४५. खासदुवार, कृष्णागर, तिल्लिय और सेवालक नामक अगर के मूल्य में क्रमशः बीस, दस, तीन और एक विशोपक का अन्तर है ।

५

Aho ! Shrutgyanam

अइकढिण गवलवन्नं मज्झे कसिणं सरुक्ख गरुयं च ।
उण्हं घसिय सुयंधं दाहे सिमिसिमइ अगरवरं ।।४६।।
इत्यगरम्

मलयगिरि पव्वयंमि सिरिचंदणतरुवरं च अहिनिलयं ।
अइसीयलं सुयंधं तग्गंधे सयल वण गंधं ।।४७।।
सिरिचंदणु तह चंदणु नीलवई सूकडिस्स जाइ तियं ।
तह य मलिन्दी कउही वव्वरु इय चंदणं छविहं ।।४८।।
वीसं वारट्ठ इगं तिहाउ पा विसुव चंदणं सेरं ।
पण तिय दु पाउ टंका जइथल चउतिन्नि कमि मुल्लं ।।४९।।
सिरिचंदणस्स चिण्हं वन्ने पीयं च घसिय रत्ताभं ।
साए कडयं सीयं सगंठि संताव नासयरं ।।५०।।
इति चन्दनम् ।

नयवाल-कासमीरा कामरुया मिय चरन्ति सुकमेण ।
मासी मुत्थगठि उनं कत्थूरिय अरुण पीयघणा ।।५१।।
नयवाल-कासमीरे मियनाहो हवइ वोस विसुवा य ।
पंचि उरमाइ पव्वय संभूय दहट्ठ जाणेह ।।५२।।

४६. अगर जंगली भैंसों के रंग का अति कठिन बीच में कृष्ण, भारी और उष्ण होता है । घिसने पर सुगंधी देता है । अग्नि में जलाने पर सिमसिम शब्द करता है ।

चंदन :—

४७ मलयगिरि पर्वत के ऊपर श्रीचंदन के वृक्ष होते है और वहाँ साँपों का निवास है । वे अत्यन्त शीतल और सुगंधित हैं । उनकी सुगंध से समूचा वन सुगंधित हो जाता है ।

४८. श्रीचंदन, नोलवइ, सूकड़ ये चंदन को तोन जातियाँ हैं । और भी मलिन्दी, कउही, बबरू ये कुल छः प्रकार की जातियाँ चन्दन की हैं ।

४९. बीस, बारह, आठ, एक, त्रिभाग ($\frac{1}{3}$), और चौथाई ($\frac{1}{4}$) विसवा वाले चंदन के एक सेर तोल पर पाँच, तीन, दो, पाव टंका और चार, तीन जीथल (एक प्रकार का सिक्का) क्रमशः मूल्य है ।

५०. श्रीचन्दन का लक्षण —वर्ण पीला, घिसने से रक्ताभ, स्वाद में कडुआ, शीतल, गांठ सहित (? रहित), सन्ताप को नाश करने वाला है ।

कस्तूरिका :—

५१. नेपाल, काश्मीर, कामरूप देशों में क्रमशः मृग विचरण करते रहते हैं । जटामासी, मुस्तग के साथ कस्तूरी आती है और लाल-पीली और घनीभूत—जमी हुई होती है ।

५२. नेपाल, काश्मीर की कस्तूरी बीस विसवा शुद्ध होती है । एवं पंचिउरम् (?) आदि पर्वत में उत्पन्न दस-आठ जानना ।

Aho ! Shrutgyanam

मियनाहि वीणओ हुइ पण तोला जाम चम्म सह तुल्लो।
तस्सकणु वार विसुवा चम्मो विसुवट्ठ उद्देसो ।।५३।।
मियनाहि उण्हमहुरं कडुयं तिक्खं कसायसुग्गंधं ।
दुग्गंधि छद्दि तावं तियदोसहरं च सुसणेहं ।।५४।।
इति मृगनाभी कत्थूरिका: ।

कसमीरि जवडि केसरि देसे हुइ कुंकुमं सुगन्ध वरं।
वीस वारट्ठ विसुवा पण आदण हुरुमयस्स भवं ।।५५।।
इति कुंकुमम् ।
मुर मास कुट्ठ वालय नह चंदण अगर मुत्थ छल्लीरं।
सिल्हारसखंडजुयं सम मिस्स दहंग वर धूपं ।।५६।।
इति धूप:
कप्पूर सुरहिवासिय चन्दणसंभूय परम सिय वासा।
मासीवालय संभव कत्थूरिय वासिया सामा ।।५७।।
इति वास:

इति ठक्कुर फेरू विरचिते धातोत्पत्तिकरणीविधिः समाप्ता ।।

श्री विक्रमादित्ये संवत् १४०३ वर्षे फागुण सु० ८ चन्द्रवासरे मृगसिर नक्षत्रे लिखितम्। सा० भावदेवाङ्गज पुरिसड । आत्मवाचन पठनार्थे सुभमस्तु ।

५३. मृगनाभि जब भली प्रकार परिपक्व—पुष्ट या पीन हो तो चमड़े सहित वजन पाँच तोला होता है। उसके कण बारह बिसवा और चर्म—चमड़ा आठ बिसवा होता है।

५४. मृगनाभि उष्ण, मधुर, कटुक, तीखी, कषैली एवं सुगन्धयुक्त होती है। दुर्गन्ध, छर्दि, ताप को दूर करती है और त्रिदोषहर एवं सुस्निग्ध है।

कुंकुम :—

५५. काश्मीर देश, जवड़ि और केसरिदेश (मध्य एसिया) में केसर पर्वत में कुंकुम सुगन्धित अच्छी होती है जो शुद्धि में क्रमशः बीस, बारह, आठ बिसवा होती है। अदन और हुरमुज की केसर पाँच बिसवा होती है।

धूप :—

५६. मुर, जठामासी, कूठ, बालक (बाल छड़), नख, चंदन, अगर, मोत्था, छल्लीर, सिल्हारस, इनमें बराबर खांड मिलाने से उत्तम दशाङ्ग धूप होता है।

वास :—

५७. कर्पूर को सुगन्धि से वासित, चन्दन से परम श्वेत वास बनता है। लेकिन जटामासी और बालक को कस्तूरी से वासित किया जाय तो काली वास बनेगा।

श्री ठाक्कुर फेरू विरचित 'धातोत्पत्ति करणी विधि' समाप्त हुई।

श्री विक्रमादित्य संवत् १४०३ वर्ष फाल्गुन सुदी ८ सोमवार मृगशिरा नक्षत्र में लिखित सा० भावदेव के पुत्र पुरिसड़ ने अपने वाचने—पढ़ने के लिये लिखी। शुभमस्तु।

Aho ! Shrutgyanam

OUR PUBLICATIONS

1. Studies in the Bhagavati Sutra.
   —by Dr. J. C. Sikdar.
2. हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन
   —ले० डा० नेमिचन्द्र शास्त्री
3. सुदंसणचरिउ
   —सं० डा० हीरालाल जैन
4. A Critical Study of the Paumacariyaṁ
   —by Dr. K. R. Chandra.
5. Anuyogaddāraiṁ (English Translation)
   —by Sri T. Hanaki
6. Viśeṣāvaśyakabhāṣyam (with Koṭṭyācārya's Tīkā)
   —ed. Dr. N. Tatia
7. Prakrit-Gadya-Padya-Bandha
   —ed. Dr. N. Tatia & Dr. R. P. Poddar
8. रइधू साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन
   —ले० डा० राजाराम जैन
9. Studies in Buddhist and Jain Monachism
   —by Dr. N. K. Prasad
10. Indian Logic : its problems as treated by its Schools
    —by Dr. K. K. Dixit.
11. An Introduction to Karpūramañjarī (with text)
    —by Dr. R. P. Poddar
12. Phonetic Changes in Indo-Aryan Languages
    —by Dr. S. C. Majumdar.
13. कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन
    —ले० डा० प्रेमसुमन जैन
14. Nayacandrasūri's Rambhāmañjarī
    —ed. Dr. R. P. Poddar.
15. ठक्कुरफेरूकृता द्रव्यपरीक्षा और धातूत्पत्ति
    —सं० श्री भंवरलाल नाहटा
16. Vaishali Research Institute Bulletin No. 1.
17. Vaishali Research Institute Bulletin No. 2.

Aho ! Shrutgyanam